मौसम

शहर	अधिकतम	न्यूनतम
धनबाद	43.9	30.5
जमशेदपुर	43.2	25.4
डालटनगंज	42.8	24.8

तापमान डिग्री सेल्सियस में.

* * *

रांची, धनबाद एवं पटना से प्रकाशित

शुभम संदेश

एक राज्य - एक अखबार

www.lagatar.in | रविवार 28 अप्रैल 2024 बैशाख कृष्ण पक्ष 05 , संवत 2081 | पृष्ठ : 12, मूल्य : ₹ ~~5~~ | वर्ष : 2, अंक : 20 | आमंत्रण मूल्य : ₹ 3 मात्र

अमित शाह बोले- मोदी को फिर पीएम बनाएं

आतंकवाद व नक्सलवाद खत्म कर देंगे अबकी बार

पोरबंदर (गुजरात)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने लोगों से आग्रह किया कि वे देश को आतंकवाद, नक्सलवाद एवं गरीबी से छुटकारा दिलाने और भारत को दुनिया की

तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनाने के लिए नरेंद्र मोदी को तीसरी बार पीएम बनाएं. पिछले 10 साल में मोदी ने वोट बैंक की परवाह किए बिना कई कड़े फैसले किए. उन्होंने एक चुनावी रैली को संबोधित करते हुए कहा कि दो चरण के मतदान के बाद अब यह साफ हो गया है कि देश की जनता ने मोदी को एक बार फिर सत्ता में लाने का फैसला कर लिया है. मैं आपसे अपील करता हूं कि सभी सीटों पर कमल को वोट दें और मोदी को तीसरी बार पीएम बनाएं. आतंकवाद और नक्सलवाद से मुक्ति, गरीबी से मुक्ति और युवाओं को एक मंच मुहैया कराने की व्यवस्था करना ताकि वे दुनिया के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल सकें और एक महान भारत का निर्माण कर सकें.

खरगे बोले- अमेठी के लिए इंतजार कीजिए

कांग्रेस बहती नदी, किसी के जाने से फर्क नहीं पड़ता

गुवाहाटी। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने कहा कि अमेठी और रायबरेली सीटों के लिए पार्टी के उम्मीदवारों के नाम कुछ दिन में घोषित हो जाएंगे. दावा किया

कि भाजपा कहती है कि भ्रष्टाचारियों को जेल में डालना चाहिए, लेकिन जब भ्रष्टाचार के आरोपी नेता भाजपा में शामिल होते हैं, तो उन्हें गोद में बिठाया जाता है, सांसद या विधायक बना देते हैं. असम के सीएम हिमंता विश्व शर्मा पर निशाना साधते हुए कहा कि कांग्रेस उन लोगों से प्रभावित नहीं, जो पार्टी में बड़े हुए और छोड़कर चले गए. कांग्रेस बहती नदी है, कुछ लोगों के जाने से असर नहीं पड़ता. खरगे से जब पूछा गया कि भाजपा अमेठी के बजाय वायनाड से चुनाव लड़ने के लिए राहुल की आलोचना कर रही है तो उन्होंने कहा, जो क्षेत्र बदलने के लिए कांग्रेस पर सवाल उठा रहे हैं, वे मुझे बताएं कि अटल बिहारी वाजपेयी और लाल कृष्ण आडवाणी ने कितनी बार अपनी सीट बदली थीं.

अखिलेश बोले- अभी तो वोटर नहीं मिल रहे

भाजपा को अगले चरणों में बूथ एजेंट भी नहीं मिलेंगे

लखनऊ। विपक्षी दलों के समूह इंडिया के यूपी में प्रमुख घटक सपा के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने शनिवार को दावा किया कि लोकसभा चुनाव के पहले दो

चरण में भाजपा को मतदाता नहीं मिले और अगले चरणों में उसे बूथ एजेंट तक नहीं मिलेंगे. सपा प्रमुख ने शुक्रवार को हुए दूसरे चरण के मतदान के बाद एक बूथ एजेंट से बातचीत की एक समाचार चैनल की वीडियो क्लिप सोशल मीडिया मंच एक्स पर साझा की. उन्होंने एक्स पर लिखा, भाजपा के नेताओं के 10 साल लगातार झूठ पर झूठ बोलने के बाद आज भाजपा का जो बुरा हाल हो रहा है, उस सच को बोलने की हिम्मत भाजपा का एक बूथ एजेंट कर रहा है. यह बूथ एजेंट कह रहा है कि इनके (भाजपा के) पक्ष में मतदान नहीं होने का कारण भाजपा सरकार के खिलाफ जनता का रोष है जिसकी वजह महंगाई - बेरोजगारी जैसे असल मुद्दे हैं.

प्रियंका गांधी बोलीं-मोदी ने नैतिकता छोड़ दी

अंकल जी का सीना 56 इंच का नहीं, हमारा लोहे का है

धरमपुर (गुजरात)। प्रियंका गांधी ने वलसाड की रैली में पीएम मोदी के हाल ही में दिए बयानों को लेकर निशाना साधा. दो टूक कहा- देश के पीएम पद की गंभीरता

को आधार बनाकर आपसे बकवास बातें कर रहे हैं. मोदी को अंकल भी कहा, बोलीं- हर जगह एक अंकलजी ऐसे होते हैं, जो दरबार लगाकर ज्ञान देते हैं. ऐसे ही अंकलजी किसी दिन कहने लगे कि सावधान हो जाओ, कांग्रेस आएगी तो आपके गहने-मंगलसूत्र चुरा लेगी और किसी और को दे देगी. तो ये सुनकर आप क्या करते, हंसते न. इन्होंने कितनी गाली दी हमारे परिवार को. हमें परवाह नहीं. किसी को नहीं छोड़ा. मां को नहीं छोड़ा, पिता को नहीं छोड़ा, दादी को नहीं छोड़ा, दादा को नहीं छोड़ा, परदादा को नहीं छोड़ा, भाई को नहीं छोड़ा, कोई बात नहीं, करते रहें. 56 इंच का इनका सीना नहीं, लोहे के सीने हैं हमारे. देश से ऐसा झूठ बोलना, इस स्तर पर शर्मनाक है.

सर्राफा

सोना (बिक्री)	67,900
चांदी (किलो)	85,000

ब्रीफ खबरें

अगले हफ्ते झारखंड आ सकते हैं पीएम मोदी

रांची। भाजपा के स्टार प्रचारक पीएम नरेंद्र मोदी मई के पहले सप्ताह में झारखंड आ सकते हैं. पीएम यहां चाईबासा में चुनावी सभा को संबोधित करेंगे. हालांकि अबतक उनका कार्यक्रम फाइनल नहीं है, लेकिन पीएम के संभावित दौरे को लेकर भाजपा तैयारियों में जुटी है. झारखंड में चौथे चरण में 13 मई को सिंहभूम सीट पर वोट होना है. भाजपा ने सिंहभूम से गीता कोड़ा को चुनाव में उतारा है. मोदी यहां गीता कोड़ा को जीताने के लिए जोर लगाएंगे.

ममता हेलीकॉप्टर में चढ़ते वक्त से गिरीं, चोटिल

कोलकाता। पश्चिम बंगाल की सीएम ममता बनर्जी का शनिवार को पश्चिम बर्द्धमान जिले के दुर्गापुर में हेलीकॉप्टर में चढ़ते वक्त संतुलन बिगड़ गया और वह गिर पड़ीं. ममता के साथ मौजूद अधिकारी ने बताया, सीएम का हेलीकॉप्टर में बैठते वक्त संतुलन बिगड़ गया जिससे वह गिर गयीं. वह ठीक हैं.

वकील उज्ज्वल निकम बने भाजपा प्रत्याशी

मुंबई। भाजपा ने मुंबई उत्तर मध्य सीट से मौजूदा सांसद पूनम महाजन की जगह चर्चित वकील उज्ज्वल निकम को उम्मीदवार बनाया है. निकम मुंबई आतंकी हमले के मामले में सरकारी वकील थे. निकम 1993 के मुंबई सिलसिलेवार विस्फोटों और 26/11 हमलों के बाद पकड़े गए आतंकी अजमल कसाब के केस जैसे कई मामलों में विशेष लोक अभियोजक रहे हैं. कांग्रेस ने वर्षा गायकवाड़ को उम्मीदवार बनाया है.

मणिपुर में फिर उग्रवादी हमला, दो जवान शहीद

इंफाल। मणिपुर के बिष्णुपुर में सुरक्षा बलों के शिविर पर बीती देर रात उग्रवादियों के हमले में सीआरपीएफ के दो जवान शहीद हो गये. दो अन्य जवान घायल हैं. पुलिस ने बताया कि उग्रवादियों ने पहाड़ी की चोटियों से शिविर को निशाना बना कर अंधाधुंध गोलीबारी की, बम भी फेंके. एक बम सीआरपीएफ की 128 बटालियन की चौकी में फटा. मृतकों की पहचान उप-निरीक्षक एन सरकार और हेड कांस्टेबल अरूप सैनी के रूप में हुई है.

पूर्व सांसद धनंजय को मिली कोर्ट से जमानत

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने पूर्व सांसद धनंजय सिंह को अपहरण और फिरौती के एक मामले में मिली सजा पर रोक लगाने से शनिवार को इनकार कर दिया. इस वजह से वह चुनाव नहीं लड़ पाएंगे. हालांकि अदालत ने उनकी जमानत मंजूर कर ली है.

बहुत कुछ कहते हैं ये आंकड़े

सुरजीत सिंह

लोकसभा चुनाव-2024 के दो चरणों में 190 सीटों पर चुनाव संपन्न हो गया है. लगभग एक तिहाई सीटों पर. पहले चरण में 102 और दूसरे चरण में 88 सीटों पर. वर्ष 1999 के चुनाव के बाद यह पहला मौका है, जब मतदान कम हुए हैं. इसे लेकर दोनों तरफ से बयान दिए जा रहे हैं. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने भाषणों में दावा किया था कि पहले चरण के चुनाव के बाद इंडिया गठबंधन की हार तय हो गई है, वहीं राहुल गांधी ने बयान दिया कि मोदी हार रहे हैं और जल्द ही वह भावुक होकर रोने वाले हैं. दूसरे दलों के नेताओं ने भी कई तरह के बयान दिए हैं. कौन हारेगा- कौन जीतेगा. एनडीए सत्ता में वापसी करेगी या इंडिया गठबंधन की सरकार बनेगी. किनके वोट कम हुए, किनके वोट सलामत रहे, यह सब जानना अभी बाकी है. यह तो मतगणना के बाद ही 4 जून को पता चलेगा, लेकिन जो आंकड़े सामने आए हैं, वह बहुत कुछ इशारा कर रहा है.

- उत्तर पूर्वी या दक्षिण के राज्यों की तूलना में हिंदी प्रदेशों में कम मतदान का आंकड़ा ज्यादा.
- छत्तीसगढ़ को छोड़ उन सभी राज्यों में मतदान कम, जहां भाजपा की सीटें बढ़ी थीं.
- केरल की 20 में से 19 सीटों पर 5 से 13 प्रतिशत तक कम मतदान हुए हैं.
- एससी/एसटी की तुलना में सामान्य जाति की सीटों पर वोट का प्रतिशत ज्यादा गिरा है.
- यूपी की तीन सीटें मथुरा, मुजफ्फरनगर व बागपत इलाका जाटों का गढ़, यहां वोटिंग बहुत कम हुई है.

किस सीट पर कितना कम

	पहला चरण	दूसरा चरण
एससी	-3.8%	-3.5%
एसटी	-2.7%	-2.9%
जेनरल	-3.8%	-4.8%

चिंता सबके लिए

पहले चरण में हिंदी भाषी राज्यों और उन सीटों पर कम मतदान हुए थे, जहां भाजपा और एनडीए का दबदबा है. भाजपा का ही ज्यादा सीटों पर कब्जा है. इसलिए पहले चरण में कम मतदान भाजपा के लिए चिंता का विषय है. लेकिन दूसरे चरण में केरल में हुए कम मतदान की वजह से कांग्रेस व लेफ्ट पार्टी को चिंतित होने की जरूरत हैं. क्योंकि दूसरे चरण में एनडीए की कब्जे वाली सीटों पर चार प्रतिशत कम मतदान हुए, जबकि इंडिया के कब्जे वाली सीटों पर छह प्रतिशत कम मतदान हुए हैं. हालांकि इसकी वजह केरल के 20 में से 19 सीटों पर मतदान का कम होना बताया जा रहा है. -शेष पेज 7 पर

किस चरण में कितना कम मतदान

	2019	2024
पहला चरण	69.9%	66.1%
दूसरा चरण	70.0%	65.4%

किनकी सीट पर कितनी कम वोटिंग

गठबंधन/पार्टी	पहला चरण	दूसरा चरण
एनडीए की सीटें	-5.1%	-4.0%
इंडिया की सीटें	-2.4%	-6.4%
अन्य की सीटें	-5.1%	उपलब्ध नहीं

कहां कितना कम वोट

	पहला चरण	दूसरा चरण
हिंदी राज्यों में	-5.7%	-5.6
उत्तर-पूर्वी भारत में	-3.4%	-4.9%
दक्षिण, पश्चिम में	-2.4%	-3.6%

पहला चरण

राज्य	2019	2024	बदलाव
नगालैंड	82.9	56.9	-26.0%
मणिपुर	82.5	72.2	-10.4%
अरुणाचल प्रदेश	81.1	72.7	-8.4 %
मध्य प्रदेश	75.0	67.8	-7.3 %
राजस्थान	63.9	57.7	-6.3%
मिजोरम	63.0	56.9	-6.1%
उत्तर प्रदेश	66.6	61.4	-5.2%
उत्तराखंड	61.6	56.5	-5.2%
बिहार	53.5	49.1	-3.8%
तमिलनाडु	72.9	69.5	-2.0%
पश्चिम बंगाल	84.8	81.9	-2.8%
पुडुचेरी	81.2	78.9	-2.8%
जम्मू कश्मीर	70.0	68.3	-1.7%
लक्षद्वीप	85.2	83.9	-1.3%
अंडमान-निकोबार	65.1	64.0	-1.1%
सिक्किम	81.0	80.2	-0.8%
त्रिपुरा	81.9	81.5	-0.4%
महाराष्ट्र	64.0	63.7	-0.3%
असम	78.4	78.3	-0.1%
छत्तीसगढ़	66.2	68.3	2.1%
मेघालय	71.4	74.5	3.1%

दूसरा चरण (आंकड़े अनुमानित)

राज्य	2019	2024	बदलाव
मध्य प्रदेश	68.0	58.3	-9.7%
केरल	77.8	70.2	-7.6%
उत्तर प्रदेश	62.1	54.9	-7.3%
पश्चिम बंगाल	80.6	73.8	-6.8%
मणिपुर	83.9	78.8	-5.1%
बिहार	62.9	57.8	-5.1%
राजस्थान	68.4	64.1	-4.3%
असम	81.2	77.4	-3.9%
महाराष्ट्र	62.8	59.6	-3.2%
त्रिपुरा	82.8	79.7	-3.1%
कर्नाटक	68.9	68.5	-0.4%
छत्तीगढ़	75.1	75.2	0.1%
जम्मू कश्मीर	72.2	72.3	0.1%

कितनी सीटों पर कम मतदान

चरण	कुल सीट	कम मतदान	प्रतिशत
पहला चरण	102	91	89.2%
दूसरा चरण	88	74	84.1%

5% से अधिक कम मतदान

चरण	कुल सीट	5% से अधिक	प्रतिशत
पहला चरण	102	26	25%
दूसरा चरण	88	49	57%

किस राज्य की कितनी सीट पर 5% से अधिक कम वोटिंग

राज्य	पहला चरण	दूसरा चरण
राजस्थान	11	07
उत्तर प्रदेश	03	08
मध्य प्रदेश	03	06
उत्तराखंड	02	....
केरल	....	18

किसे, कहां, कितना नुकसान

पहले चरण की 102 में से 91 और दूसरे चरण के 88 में से 74 सीटों पर कम वोट हुए. इससे यह पता चलता है कि पहले चरण के मुकाबले दूसरे चरण में स्थिति ठीक हुई है. लेकिन अगर आंकड़े के भीतर देखते हैं, तो पाते हैं कि दूसरे चरण में स्थिति ज्यादा गंभीर हुई है. पहले चरण की 102 में से 26 सीटों पर कम वोट होने का प्रतिशत 5%से ज्यादा था, जबकि दूसरे चरण के 88 में से 49 सीटों पर कम मतदान होने का प्रतिशत 5%से ज्यादा रहा. यह बताता है कि दूसरे चरण में कम वोट होने का नुकसान जिसको भी होगा, वह पहले चरण से ज्यादा होगा. केरल, यूपी, राजस्थान, एमपी में सबसे अधिक सीटों पर कम वोट हुआ है.

जेल में ही रहेंगे हेमंत, ईडी कोर्ट ने नहीं दी अंतरिम बेल

- पूर्व सीएम ने अपने ताऊ की अंत्येष्टि में शामिल होने के लिए मांगी थी 13 दिन की अंतरिम बेल

विनीत आभा उपाध्याय। रांची

पूर्व सीएम हेमंत सोरेन को पीएमएलए की विशेष कोर्ट ने अंतरिम बेल देने से इनकार कर दिया है. कोर्ट के आदेश के बाद अब हेमंत अपने ताऊ की अंत्येष्टि में शामिल नहीं हो पाएंगे. दरअसल शनिवार को उन्होंने कोर्ट में याचिका दाखिल कर यह आग्रह किया था कि उन्हें अपने ताऊजी के अंतिम संस्कार में शामिल होने की अनुमति दी जाए. इसके साथ ही कोर्ट से 13 दिनों की अंतरिम बेल भी मांगी थी. जिसपर कोर्ट ने सुनवाई करते हुए यह आदेश दिया.

हेमंत के वकील ने कोर्ट को बताया था कि उनके पिता शिबू सोरेन के बड़े भाई का निधन हो गया, और वे उनके श्राद्ध तक अंतरिम जमानत चाहते हैं, जिसका विरोध ईडी ने किया. सुनवाई के बाद कोर्ट ने जमानत देने से इनकार कर दिया. इससे पहले शनिवार को हेमंत के पिता के बड़े भाई राजाराम सोरेन का निधन हो गया. वह लंबे समय से बीमार थे. वह रांची में रहते थे. उनका अंतिम संस्कार संभवतः रामगढ़ जिला स्थित उनके पैतृक गांव नेमरा में होगा.

पहले भी जमानत याचिका लगा चुके हैं सोरेन : हेमंत ने इससे पहले 16 अप्रैल को पीएमएलए की विशेष कोर्ट के सामने जमानत याचिका दायर की थी. जिसमें आरोप लगाया गया था कि उनकी गिरफ्तारी राजनीति से प्रेरित थी. इस पर जवाब देने के लिए कोर्ट ने ईडी को एक सप्ताह का समय दिया था. इसके बाद 23 को जब सुनवाई हुई, तो ईडी ने जवाब के लिए दो और सप्ताह का समय मांगा. जिसका विरोध सोरेन के वकीलों ने किया और दावा किया कि ईडी जानबूझ कर देरी कराना चाहती है, ताकि पूर्व सीएम जेल से बाहर आकर चुनाव प्रचार न कर सकें. इसके बाद भी कोर्ट ने ईडी को एक सप्ताह का समय और दे दिया. अब इस मामले की अगली सुनवाई 1 मई को होगी.

हाईकोर्ट द्वारा फैसला ना सुनाने को लेकर सुप्रीम कोर्ट गए

हेमंत ने 24 अप्रैल को सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाते हुए बताया कि ईडी की गिरफ्तारी को चुनौती देनेवाली उनकी याचिका पर हाई कोर्ट फैसला नहीं सुना रहा है. सोरेन की ओर से कपिल सिब्बल ने न्यायमूर्ति संजीव खन्ना और दीपांकर दत्ता की पीठ को बताया कि हाईकोर्ट ने उनकी याचिका पर 28 फरवरी को फैसला सुरक्षित रख लिया था, लेकिन अभी तक कोई निर्णय नहीं सुनाया गया है. जिसके बाद सुप्रीम कोर्ट ने हेमंत की याचिका को सूचीबद्ध करते हुए 29 अप्रैल की तारीख सुनवाई के लिए मुकर्रर कर दी है.

गर्मी में श्रमिकों के लिए काम के घंटे का हो पुनर्निर्धारण

रांची। बढ़ती गर्मी परेशानी का सबब बन गई है. इसे देखते श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार ने राज्य को भी दिशा-निर्देश भेज कर उसे लागू करने को कहा है. उप श्रमायुक्त कार्यालय, श्रम भवन ने सभी जिलों को शनिवार को श्रमिकों के मामले में जरूरी बिंदुओं का ध्यान रखने को कहा है. जिले में सभी प्रतिष्ठानों से भी कहा गया है कि वे कामगारों के काम के घंटे या समय को पुनर्निर्धारित करें. कार्यस्थल पर पानी की व्यवस्था, आराम के लिए छाया, प्राथमिक चिकित्सा किट, ओआरएस वगैरह हो. एंबुलेंस हो. लू से बचाव के लिए विश्राम व छुट्टी का समय बढ़ाया जाए. लू पीड़ित कामगार को स्वास्थ्य केंद्र में ले जाएं. गर्भवती और बीमार श्रमिकों पर अतिरिक्त ध्यान दिया जाए.

गढ़वा में फंदे से लटकता मिला बीडीओ का शव

संवाददाता। गढ़वा

जिले के विशुनपुरा के प्रखंड के बीडीओ हीरक मन्ना केरकेट्टा का शव शनिवार की दोपहर उनके आवास पर फंदे से झूलता पाया गया. शनिवार

सुबह से ही उनके आवास का दरवाजा बंद था. जब ब्लॉक स्टाफ दोपहर तीन बजे किसी कागजात पर उनसे हस्ताक्षर कराने पहुंचा, तो दरवाजा बंद था. कर्मी ने इसकी सूचना विशुनपुरा थाने को दी. पुलिस ने खिड़की से झांक कर देखा, तो उनका शव रस्सी के फंदे से झूल रहा था. वरीय अधिकारियों के पहुंचने एवं परिजनों की सहमति के बाद डेड बॉडी को फंदे से उतारा जाएगा. बीडीओ ने आत्महत्या क्यों की, यह स्पष्ट नहीं हो पाया है. प्रखंड के बड़े पदाधिकारी का सुसाइड कर लेना चिंता का विषय है. गढ़वा के एसपी दीपक पांडेय ने घटना की पुष्टि की है. उन्होंने बताया कि हत्या एवं आत्महत्या के एंगल पर जांच की जाएगी.

मृतक बीडीओ हीरक मन्ना केरकेट्टा सिमडेगा निवासी थे. अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी के आवास वाली गली में उनका घर है. फिलहाल घर में कोई नहीं था. सभी भाई-बहन बाहर रहते हैं. बड़ा भाई इंजीनियर है, जो दिल्ली से रांची के लिए निकल गया है. बहन शोभा गढ़वा के लिए रांची से निकली. बताया जाता है कि इनका पूरा परिवार शिक्षित है. पिता संतोष केरकेट्टा प्रोफेसर थे और मां आनंदी टेटे टीचर. अब दोनों स्वर्गीय हो चुके हैं.

रिपोर्ट देश में हैं 22.28% उच्च जाति के हिंदू, इनके पास कुल 41% संपत्ति

हिंदू-मुस्लिम या एससी-एसटी और ओबीसी... कौन है अमीर?

शुभम संदेश नेटवर्क। नयी दिल्ली

भारत में जब आर्थिक विषमता की बात होती है, तो सबसे पहले शहरी और ग्रामीण, स्त्री और पुरुष का जिक्र आता है, लेकिन 2019 की एक रिपोर्ट की मानें तो धार्मिक और जाति के आधार पर भी आर्थिक विषमता बड़े पैमाने पर नजर आती है. वेल्थ ऑनरशिप एंड इनएक्वैलिटी इन इंडियाः ए सोशियो-रिलिजियस एनालिसिस रिपोर्ट के अनुसार देश की कुल संपत्ति में 41 फीसदी हिस्सा उच्च जाति के हिंदुओं के पास है. रिपोर्ट का कहना है कि हिंदू धर्म के उच्च जाति के लोगों के पास सबसे ज्यादा संपत्ति है. उसके बाद पिछड़ा वर्ग, फिर अनुसूचित जाति-अनुसूचित जनजाति और मुस्लिम हैं. इतना ही नहीं क्षेत्रीय तौर पर भी असामनता देखी गई

- सबसे अमीर राज्य : महाराष्ट्र, यूपी, हरियाणा, केरल और तमिलनाडु
- सबसे गरीब राज्य : झारखंड, बिहार, छत्तीसगढ़, बंगाल और एमपी

है. सावित्रीबाई फुले यूनिवर्सिटी और जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी और इंडियन इंसटीट्यूट ऑफ दलित स्टडीज ने साल 2015 से 2017 के बीच स्टडी कर यह रिपोर्ट तैयार की थी. यह रिपोर्ट विभिन्न राज्यों के 1.10 लाख परिवारों के एनएसएसओ डेटा पर आधारित है. -शेष पेज 7 पर

किस राज्य में सबसे ज्यादा संपत्ति

धर्म और जातीय असमानता के साथ संपत्ति में क्षेत्रीय असमानता भी देखी गई है. देश के सिर्फ 5 राज्यों में 50% संपत्ति और सात राज्यों के सिर्फ 20% परिवारों का देश की 70% संपत्ति में हिस्सा है. राज्यवार सबसे अमीर राज्य महाराष्ट्र, यूपी, केरल, तमिलनाडु और हरियाणा हैं. महाराष्ट्र में 17.5%, यूपी में 11.6% केरल में 7.4%, तमिलनाडु में 7.2% और हरियाणा में कुल संपत्ति का 6% हिस्सा है. सबसे गरीब और कम संपत्ति वाले राज्यों में झारखंड, बिहार, ओडिशा और उत्तराखंड हैं, जहां 0.9 से 1 फीसदी संपत्ति है.

किसके पास कितनी दौलत (अरब रुपए में)

	सोशल ग्रुप	ग्रामीण	शहर	कुल%
अनुसूचित जाति	9,544	3,724	13, 268	7.3
अनुसूचित जनजाति	16,163	9,971	26,134	3.7
हिंदू ओबीसी	62, 952	47, 568	1,10,520	31
उच्च हिंदू जाति	42,338	1, 04, 057	1, 46,394	41
मुस्लिम समुदाय	14, 379	14, 329	28,707	08
बाकी समुदाय	15, 224	18,105	33,329	09
कुल योग	1,60,600	1,97,753	3,58,354	100

1% अमीरों का संपत्ति में सबसे ज्यादा हिस्सा

पेरिस स्कूल ऑफ इकनॉमिक्स एंड वर्ल्ड इनइक्वलिटी लैब के थॉमस पिकेटी, हार्वर्ड कैनेडी स्कूल एवं वर्ल्ड इनक्वलिटी लैब के लुकास और वर्ल्ड इनइक्वलिटी लैब के नितिन कुमार ने एक रिपोर्ट में बताया कि 2022-23 में सबसे ज्यादा अमीर एक% आबादी के पास देश की सबसे ज्यादा संपत्ति है. उनकी आय बढ़ कर 22.26% और संपत्ति में 40.1% हो गई है. फोर्ब्स के अरबपतियों की लिस्ट से पता चलता है कि 1991 में एक अरब डॉलर से ज्यादा संपत्ति रखने वाला सिर्फ एक भारतीय था और 2022 में इनकी संख्या 162 से अधिक हो गई है.

प्लॉटों की नीलामी बहुत धीमी गति, चौथे चरण में तीन इंस्टीट्यूशनल, एक पब्लिक/सेमी पब्लिक और एक मिक्स यूज की जमीन की नीलामी

तीन साल में रांची स्मार्ट सिटी के 51 में से सिर्फ 16 प्लॉटों की हो सकी है नीलामी

सत्य शरण मिश्रा। रांची

रांची स्मार्ट सिटी के प्लॉटों की नीलामी बहुत धीमी गति से हो रही है. तीन साल में चार बार ई-ऑक्शन होने के बाद 51 में से सिर्फ 16 प्लॉट ही नीलाम हो पाये हैं. तीन चरण में कुल 11 प्लॉट नीलाम हुए थे, जबकि चौथे चरण में सिर्फ पांच प्लॉटों का ही ई-ऑक्शन हुआ. इसमें इंस्टीट्यूशनल यूज के तीन, पब्लिक व सेमी पब्लिक यूज के एक और मिक्स यूज के एक प्लॉट नीलाम हुए हैं. जानकारी के मुताबिक, इक्फाई यूनिवर्सिटी स्मार्ट सिटी में टेक्निकल कॉलेज खोलने जा रहा है. इसके लिए उसे 10 एकड़ जमीन मिली है. वहीं, राइट पाथ फाउंडेशन जेवी को मेडिकल कॉलेज खोलने के लिए आठ एकड़, वेंचर स्कील इंस्टीट्यूट को पांच एकड़ जमीन दी गयी है. इसके अलावा अनंता रियलिटी को मिक्स यूज की तीन एकड़ जमीन आवंटित की गयी है.

इक्फाई यूनिवर्सिटी को टेक्निकल कॉलेज के लिए
10 एकड़ जमीन आवंटित

राइट पाथ फाउंडेशन जेबी को मेडिकल कॉलेज के लिए
8 एकड़ जमीन मिली

रेसिडेंशियल यूज के छह में से चार प्लॉटों की रजिस्ट्री हो पायी है

रांची स्मार्ट सिटी में जमीन की नीलामी मार्च 2021 से शुरू हुई थी. पहले चरण में नौ प्लॉटों की नीलामी हुई थी. इसके बाद 2023 तक दूसरे और तीसरे चरण की नीलामी हुई. निवेशकों के नहीं आने के कारण दोनों बार के ई-ऑक्शन में सिर्फ एक-एक प्लॉट ही नीलाम हुए. यानी तीन चरणों में कुल 11 प्लॉट नीलाम हुए, लेकिन तकनीकी कारणों से ढाई साल तक किसी भी प्लॉट की रजिस्ट्री नहीं हो सकी. 2023 में पहले और दूसरे फेज में नीलाम हुए 11 प्लॉटों की रजिस्ट्री शुरू हुई, लेकिन रेसिडेंशियल यूज के छह में से चार प्लॉटों की ही रजिस्ट्री हो पायी है. कारोबारी विष्णु अग्रवाल को आवंटित की गई दोनों रेसिडेंशियल यूज के प्लॉटों की रजिस्ट्री बैंक गारंटी के कागजात जमा नहीं होने के कारण नहीं हो पायी है.

रजिस्ट्री के बाद भी निवेशक नहीं शुरू कर पाये हैं काम

जिन निवेशकों की जमीन की रजिस्ट्री हो चुकी है, उनके भी प्लॉट पर अबतक काम नहीं शुरू हो सका है. स्मार्ट सिटी ने पहले फेज में जमीन लेने वाले निवेशकों से निर्माण के लिए नक्शा मांगा है. निवेशकों ने नक्शा जमा कर दिया है, लेकिन अबतक उसे स्वीकृति नहीं मिली है. नक्शा को अप्रूवल मिलने के बाद ही निवेशक काम शुरू कर सकेंगे. वहीं स्मार्ट सिटी में इंटीग्रेटेड इंफ्रास्ट्रक्चर का काम पूरा हो चुका है. सड़क, बिजली, पानी, पार्किंग समेत सभी सुविधाएं तैयार हैं. मंत्रियों के 11 बंगले भी बन कर तैयार हैं.

पहले चरण में नीलाम हुए विष्णु अग्रवाल के दो प्लॉटों की रजिस्ट्री अबतक नहीं

ब्रीफ खबरें

खूंटी व लोहरदगा में राहुल की रैली तीन को

रांची। कांग्रेस नेता राहुल गांधी तीन मई को खूंटी और लोहरदगा में चुनावी सभा को संबोधित करेंगे. इसे लेकर शनिवार को प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष राजेश ठाकुर ने खूंटी और गुमला कार्यक्रम स्थल का जायजा लिया. इस दौरान गुमला के बसिया में राहुल की जनसभा को लेकर उन्होंने कार्यकर्ताओं को अहम निर्देश दिये. स्थल निरीक्षण के दौरान मीडिया को संबोधित करते हुए राजेश ठाकुर ने कहा कि रैली से कांग्रेस कार्यकर्ताओं में नई ऊर्जा का संचार होगा.

सात मई को नामांकन करेंगे लोबिन हेंब्रम

रांची। लोस चुनाव को लेकर झामुमो में बागी तेवर के नेता और बोरियो विधायक लोबिन हेंब्रम अब भी अपनी बातों पर कायम है. उन्होंने राजमहल लोस सीट से निर्दलीय चुनाव लड़ने का निर्णय लिया है. शुभम संदेश को विधायक हेंब्रम ने बताया कि राजमहल लोस सीट के लिए वे सात मई को अपना नामांकन दाखिल कर सकते हैं. लोबिन हेंब्रम वैसे तो काफी पहले से अपनी पार्टी और सरकार से नाखुश चल रहे हैं, लेकिन इस बार वे बागी तेवर अपनाए हुए हैं. लोबिन ने राजमहल संसदीय सीट से तीसरी बार विजय को उम्मीदवार बनाए जाने का विरोध किया है.

सिविल कोर्ट के जज विजय कुमार निलंबित

रांची। सरायकेला सिविल कोर्ट के प्रधान जिला जज विजय कुमार (3) को हाईकोर्ट ने निलंबित कर दिया है. हाईकोर्ट में अनुशासनात्मक कार्रवाई के तहत उन्हें निलंबित किया है. हाईकोर्ट के रजिस्ट्रार जनरल मोहम्मद शाकिर के अनुसार, निलंबन की अवधि में उनका मुख्यालय हाईकोर्ट रहेगा.

रघुवर काल में बना था लैंड बैंक, कांग्रेस ने मुक्ति दिलाने का किया था वादा

बीजेपी और कांग्रेस को भेदना होगा चक्रव्यूह

वादे हैं वादों का क्या

- राज्य में निवेश और उद्योग लाने के लिए बना था लैंड बैंक
- न निवेश हुआ, न उद्योग लगे और न ही लैंड बैंक खत्म हुआ
- लैंड बैंक में ले ली गई थी गरीबों की हजारों एकड़ जमीन

प्रवीण कुमार। रांची

राज्य में चुनावी फिजा में वैसे तो कई मुद्दे हैं, जिसे लेकर भाजपा और कांग्रेस आमने-सामने है. लेकिन लैंड बैंक का एक ऐसा मुद्दा है, जिस पर दोनों दलों ने चुप्पी साध रखी है. राज्य में गठबंधन की सरकार ने लैंड बैंक को खत्म करने का वादा किया था. कांग्रेस विधायक दल की बैठक में भी इस मसले पर निर्णय लिया गया था कि कि लैंड बैंक को खत्म करने की दिशा में पहल की जाएगी.

कांग्रेस ने वर्ष 2021 में विधायक दल की बैठक में पिछड़ों को 27% आरक्षण, विस्थापन आयोग का गठन करने, नयी नियोजन नीति में सुधार कर इसे दुरुस्त करने, लैंड बैंक की भूमि वापसी जैसे कई मुद्दों पर निर्णय लिया था. ये मुद्दे राज्य के आदिवासी मूलवासियों के लिए काफी अहम मुद्दे रहे हैं. बता दें कि रघुवर दास की सरकार ने लैंड बैंक बनाने का फैसला किया था. झारखंड में पांच जनवरी 2016 को लैंड बैंक बनाने की शुरुआत की गयी थी.

इस बैंक के माध्यम से राज्य में निवेश करनेवाले निवेशकों को जमीन देना मकसद था. लैंड बैंक में 861013.19 एकड़ जमीन को शामिल किया गया था. दावा किया गया था कि पूंजी निवेश के आमंत्रण की राह इससे आसान होगी. लेकिन आज तक न तो कोई निवेश हुआ और न ही उद्योग लगे.

- झारखंड में पांच जनवरी 2016 को लैंड बैंक बनाने की शुरुआत की गयी थी

लैंड बैंक बनने के साथ ही शुरू हो गया था विरोध

लैंड बैंक के बनने के साथ ही आदिवासी समूहों ने इसका विरोध करना शुरू किया था. लैंड बैंक में तत्कालीन रघुवर सरकार ने गैर-मजरुआ आम और खास जमीन को शामिल किया था, जिस पर ग्रामीणों का लंबे समय से कब्जा है. ग्रामीण अपनी आजीविका के लिए खेती करते आ रहे हैं. परती, सरना, चर्च, मंदिर, भूतखेता, डाली कतारी और गांव का रास्ता भी लैंड बैंक में शामिल किया गया था. ग्रामीणों को यह लगा कि सरकार उनकी जमीन, चर्च, मंदिर, रास्ता खत्म करना चाहती है. खूंटी में पत्थलगड़ी आंदोलन के पीछे जो कारण रहा, उसमें लैंड बैंक का विरोध भी एक था. खूंटी जिले के दर्जनों गांवों में काला झंडा लगा कर आदिवासियों ने लैंड बैंक का विरोध किया था. लैंड बैंक का मुद्दा हमेशा से आदिवासियों के लिए संवेदनशील रहा है.

लैंड बैंक की जमीन जल्द मुक्त करेगी सरकार : कांग्रेस

जून 2019 में खूंटी जिले के मुरहू प्रखंड अंतर्गत परत्या गांव में जमीन देने के विरोध में गाड़ा गया बोर्ड.

कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष राजेश ठाकुर लैंड बैंक को लेकर कहते हैं कि हमारी सरकार संवेदनशील है. किसी को भी लैंड बैंक की जमीन नहीं दी गई. सार्वजनिक और गैरमजरुआ जमीन को लैंड बैंकिंग से मुक्त करने की बात हमारी सरकार की थी. इस पर काम चल है और जल्द ही लैंड बैंक की जमीन को सरकार मुक्त करेगी.

लैंड बैंक में शामिल जमीन

गैरमजरुआ खास (पूरी तरह से सरकारी)- 861013 .19 एकड़
लैंड बैंक में शामिल गैरमजरुआ खास जमीन की बात करें, तो इसमें 1-51 एकड़ के 230,700 प्लॉट हैं. इसी प्रकार 51-100 एकड़ वाले 4137 प्लॉट, 101-150 एकड़ वाले 438 प्लॉट और 200 एकड़ से अधिक वाले 372 प्लॉट शामिल हैं. सबसे ज्यादा पश्चिम सिंहभूम और गुमला की जमीन को लैंड बैक में शामिल किया गया था.

गैरमजरुआ आम (आमलोगों की जरूरत के लिए)- 211846 .42 एकड़
फॉरेस्ट लैंड (इसका उपयोग वनों के विकास के अलावा किसी अन्य कार्य के लिए नहीं किया जा सकता) - 998065 .42 एकड़
विभिन्न विभागों के पास- 83068 .48 एकड़

झालसा के द्वारा विशेष लोक अदालत का आयोजन किया गया

3250 मामलों का हुआ निष्पादन

संवाददाता। रांची

झारखंड हाइकोर्ट के जज और झालसा के कार्यकारी अध्यक्ष सुजीत नारायण प्रसाद की पहल पर पूरे राज्य में चेक बाउंस एवं बिजली से संबंधित मामलों को लेकर झालसा के द्वारा विशेष लोक अदालत का आयोजन किया गया. जिसमें कुल 24727 प्री. लिटिगेशन एवं कुल 3250 लंबित मामलों का निष्पादन किया गया. साथ ही कुल 270528545 रुपये का सेटलमेंट किया गया. झालसा के द्वारा इस विशेष लोक अदालत के आयोजन की तैयारी एक माह से की जा रही थी. झालसा द्वारा सभी जिला विधिक सेवा प्राधिकारों को पत्र के माध्यम से उक्त विशेष लोक अदालत आयोजित करने का निर्देश दिया गया था. साथ ही साथ एसओपी भी जारी किया गया था. झालसा की सदस्य सचिव कुमारी रंजना अस्थाना ने 22 अप्रैल को सभी जिलों के संबंधित न्यायिक पदाधिकारियों एवं विभागों के प्रतिनिधियों के साथ समीक्षा बैठक की थी. एसओपी के अनुसार प्री. लोक अदालत सीटिंग 21 अप्रैल 2024 से ही प्रारंभ कर दी गयी थी.

चेक बाउंस के 1860 एवं विद्युत अधिनियम के 738 वादों का हुआ निष्पादन

चेक बाउंस एवं विद्युत अधिनियम से संबंधित विशेष लोक अदालत का शनिवार को समापन हो गया. विशेष लोक अदालत को सफल बनाने के लिए कुल 27 बेंचों का गठन किया गया था. जिसमें एन.आई एक्ट के लिए - 23 एवं विद्युत अधिनियम के लिए - 4 बेंचों का गठन किया गया था.

ज्ञात हो कि विशेष लोक अदालत में चेक बाउंस के 1860 वाद एवं विद्युत अधिनियम के 738 वादों का सफलतापूर्वक निष्पादन किया गया. पूर्व में ही चेक बाउंस के लिए 6000 मामलों को चिन्हित कर नोटिस एवं विद्युत अधिनियम के 1100 मामलों को चिन्हित कर पक्षकारों को विभिन्न न्यायालय के माध्यम से नोटिस भेजा गया था.

मासिक लोक अदालत का सफल आयोजन

कुल 361 वादों का निष्पादन एवं 3441156 रुपये की समझौता राशि प्राप्त हुई बता दें कि शनिवार को ही मासिक लोक अदालत का भी आयोजन किया गया. इसके लिए भी 7 बेंच का गठन किया गया था. इस मासिक लोक अदालत में कुल 361 वादों का निष्पादन किया गया, वहीं 3441156/- रुपयों वसूली की गई.

जब्त नशीले पदार्थों को रखने के लिए अलग से बनेगा मालखाना

संवाददाता। रांची

जब्त नशीले पदार्थ को रखने के लिए अलग से मालखाना बनेगा. झारखंड के सभी जिले में मालखाना बनाया जाएगा. जिनमें रांची, जमशेदपुर, सराइकेला, गढ़वा, चतरा, धनबाद, दुमका, जामताड़ा, देवघर, साहेबगंज और गोड्डा में जब्त नशीले पदार्थ के मालखाना बनेगा. जबकि गुमला, खूंटी, लोहरदगा, कोडरमा, सिमडेगा, लातेहार, पलामू, हजारीबाग, रामगढ़, गिरिडीह, चाईबासा, बोकारो और पाकुड़ जिले में पहले से भवन का जीर्णोद्धार कर मालखाना बनाया जाएगा.

नशा कारोबारी खिलाफ बढ़ायी जा रही निगरानी

नशे के कारोबारी पर निगरानी बढ़ायी जा रही है. इसके तहत नौ जिलों की पुलिस ने मिलकर 205 नशे के सौदागरों के खिलाफ डोसियर तैयार किया है. चतरा जिला की पुलिस ने सबसे अधिक 177 नशे के सौदागरों के खिलाफ डोसियर खोला है. संबंधित जिलों के एसपी ने इससे संबंधित आंकड़ा तैयार कर पुलिस मुख्यालय को भेज दिया है. दूसरी ओर 29 नशे के सौदागरों के खिलाफ पिट अधिनियम के तहत जिलाबदर की कार्रवाई के लिए नया प्रस्ताव तैयार किया गया है.

एनडीपीएस एक्ट के तहत सबसे अधिक मामले हुए दर्ज

पिछले पांच साल के दौरान झारखंड सात जिले के 15 थानों में एनडीपीएस एक्ट के तहत सबसे अधिक मामले दर्ज हुए हैं. जिनमें चतरा जिला के सदर थाना में 118, कुंदा थाना में 84, लावालौंग थाना में 73, गुमला जिला के गुमला थाना में 71, खूंटी जिले के मरांगदाहा थाना में 62, सराइकेला जिले के आदित्यपुर थाना में 61, चतरा जिले के वशिष्ठनगर थाना में 61, खूंटी के अड़की में 47, जमशेदपुर के मानगो में 47, सीतारामडेरा में 46, खूंटी के मुरहू में 42, रांची के सुखदेवनगर में 42, चतरा के प्रतापपुर में 41 और हजारीबाग में 36 मामले दर्ज हुए हैं.

मीशो का कस्टमर केयर एग्जिक्यूटिव बनकर ठगी करने वाले दो गिरफ्तार

संवाददाता। रांची

सीआईडी को मिली सफलता

मीशो एप का कस्टमर केयर एग्जिक्यूटिव बनकर ठगी करने वाले दो साइबर अपराधियों को सीआईडी ने गिरफ्तार किया है. सीआईडी की साइबर सेल की टीम ने शनिवार को कार्रवाई करते हुए दुमका जिला के रहने वाले साजिद अंसारी और देवघर जिला के रहने वाले जमालुद्दीन अंसारी को गिरफ्तार किया है. इनके पास से पांच मोबाइल, छह सिम, तीन पासबुक समेत कई अन्य सामान बरामद हुआ है. इन साइबर अपराधियों द्वारा वादी से मीशो एप का कस्टमर केयर बनकर एनी डेस्क एप्लीकेशन डाउनलोड करा कर 2.06 लाख रूपया की ठगी कर ली गई थी. जिसके बाद साइबर थाना में इससे संबंधित मामला दर्ज कराया गया था.

जानें कैसे करते थे साइबर अपराधी ठगी : गिरफ्तार साइबर अपराधियों द्वारा वेबसाइट पेज बनाने वाले वेबसाइट सर्विस जैसे wix.com. hopp.bio, Link Forest, Google Firebase, Campsite bio का प्रयोग कर कस्टमर केयर कंप्लेन के नाम पर वेब पेज बनाते थे, जिसमें वह अपना फर्जी नम्बर डाल देते हैं. इसके बाद इन वेब पेज को गूगल ऐड के माध्यम से गूगल में डाल देते थे. जिसके बाद लोगों को झांसे में लेकर ठगी की घटना को अंजाम देते थे.

एक महीने भी कांग्रेस में नहीं टिके रामहटल, दिया इस्तीफा

प्रमुख संवाददाता। रांची

पूर्व सांसद रामहटल चौधरी एक महीने भी कांग्रेस में नहीं टिक पाये. 28 मार्च को वे कांग्रेस में शामिल हुए थे और टिकट नहीं मिलने के कारण जल्द ही उनका कांग्रेस से मोहभंग हो गया और उन्होंने इस्तीफा दे दिया. शनिवार को रांची प्रेस क्लब में प्रेस कॉन्फ्रेंस कर उन्होंने कांग्रेस छोड़ने की घोषणा की. रामहटल ने कहा कि वे झोला-झंडा ढोने कांग्रेस में नहीं आये थे. कांग्रेस के प्रदेश प्रभारी गुलाम अहमद मीर ने उन्हें रांची लोकसभा सीट से प्रत्याशी बनाने का भरोसा दिलाया था, लेकिन कई दिनों तक रांची लोकसभा सीट को होल्ड रखने के बाद पूर्व केंद्रीय मंत्री सुबोधकांत सहाय की बेटी यशस्विनी सहाय को टिकट दे दिया गया.

- कांग्रेसियों ने टिकट का भरोसा देकर पार्टी में शामिल कराया था

भाजपा-कांग्रेस ने मूलवासियों को ठगा

राहमटल चौधरी भाजपा पर भी बरसे. कहा, पिछले पांच साल से भाजपा के किसी नेता ने उनसे बात नहीं की और न ही वे आगे भाजपा में जायेंगे. वह निर्दलीय अपनी ताकत दिखा कर भाजपा में शामिल हुए थे. चौधरी ने कहा उन्होंने जनसंघ और भाजपा को अपना सबकुछ दिया, उनसे कभी कुछ लिया नहीं. कहा कि भाजपा और कांग्रेस ने राज्य के सदान, मूलवासी, ओबीसी और आदिवासी समाज को ठगा है. यही वजह है कि चुनाव को लेकर राज्य में उत्साह का माहौल नहीं दिख रहा है.

- झोला-झंडा ढोने कांग्रेस में नहीं आये थे, जल्द ही लेंगे फैसला

आगे की रणनीति पर समर्थकों से बात करेंगे

रामहटल ने कहा कि कांग्रेस के नेता ओबीसी और जिसकी जितनी आबादी, उसकी उतनी भागीदारी की बात करते हैं, लेकिन ये सिर्फ बातें हैं. चौधरी ने कहा कि उन्होंने कांग्रेस में शामिल होने के लिए किसी से संपर्क नहीं किया था, बल्कि उनके नेताओं ने उनसे संपर्क किया था. कांग्रेस छोड़ने का बाद उनकी आगे की रणनीति क्या होगी? इसपर उन्होंने कहा कि इस बात का फैसला वे अपने समर्थकों से बातचीत कर जल्द लेंगे.

नीतीश कुमार से चल रही थी बात

रामटहल ने कहा कि कुछ महीने पहले जब वे बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से मिले थे, तब वे इंडिया गठबंधन के साथ थे. वह चाहते थे कि मैं जदयू में शामिल हो जाऊं. चौधरी ने कहा कि तब उन्होंने नीतीश कुमार से कहा था कि जदयू तो रांची से चुनाव लड़ता नहीं है, तब कैसे होगा. इसी बीच कांग्रेस के लोगों ने उनसे संपर्क शुरू किया और उनके टिकट देने का भरोसा देकर पार्टी ज्वाइन कराई.

डॉक्टर की सलाह

फैटी लीवर से डरें नहीं परहेज करें, ठीक हो जाएगा

बाजार में लीवर को डीटॉक्स करने वाले प्रोडक्ट फर्जी: डॉ. अनुज कुमार

संवाददाता। रांची

हम जिनसे भी बात करें, एक-दो परिचित ऐसे जरूर मिल जाएंगे, जिन्हें फैटी लीवर की शिकायत है. यू कहें आज के दौर में इस बीमारी के नाम से लोगों को सबसे अधिक डराया जा रहा है. क्या लीवर का फैटी होना सच में बड़ी बीमारी है. क्या एक बार लीवर फैटी हो गया तो वह ठीक नहीं होगा. इस तरह के कई सवाल हैं, जिनके जवाब लोग जानना चाहते हैं. लेकिन आसान भाषा में कोई बताने को तैयार नहीं. इस बीमारी के बारे में जानने के लिए हमने डॉ. अनुज कुमार से बात की. उन्होंने विस्तार से इस बीमारी के बारे में जानकारी दी. डॉ अनुज बताते

हैं, बाजार में आप जितने भी प्रोडक्ट देखते हैं, जो लीवर को डीटॉक्स करने का दावा करती है वो सारी फर्जी है. क्योंकि लीवर को डीटॉक्स सिर्फ़ लीवर ही कर सकता है और वो भी आपके स्वस्थ खानपान और शारीरिक व्यायाम की मदद से. इसलिए बाजार में बिक रहे ऐसे फर्जी प्रोडक्ट से कोई फायदा नहीं होने वाला.

लीवर क्या है

लीवर आपके शरीर के दायें भाग में रहता है और इसका मुख्य काम पाचन कार्य में मदद करना और शरीर से टॉक्सिन्स को हटाना है. लीवर ही आपके शरीर को डीटॉक्स करता है. जब किसी व्यक्ति के शरीर में फैट की मात्रा बढ़ जाता है तो वो उस व्यक्ति के लीवर में जमा होने लगता है. एक सीमा से अधिक जमा होने पर लीवर फैटी हो जाता है. तब पाचन क्रिया ठीक से काम नहीं करता. अगर समय पर इसका इलाज व परहेज नहीं किया जाता है, तो फैट की वजह से लीवर के सेल्स खराब होने लगते हैं. इस स्थिति में उस व्यक्ति को एक बड़ी बीमारी हो जाती है. जिसे लीवर सिरोसिस कहा जाता है.

लीवर फैटी होने के दो कारण : फैटी लीवर दो तरह के होते हैं. पहली, अल्कोहलिक. यह ज्यादा शराब पीने की वजह से होता है. दूसरी, नन अल्कोहलिक. यह मोटापा, शुगर या बीपी की बीमारी, तेलीय चीजों का सेवन, अनिंद्रा, शरीर में अत्यधिक कोलेस्ट्रॉल की मात्रा और कुछ दवाइयों की वजह से होता है. दवाइयों में एलोपैथी की स्ट्रॉयज, एस्प्रिन और कुछ पेन कीलर शामिल है. कुछ आयुर्वेदिक व होमियोपैथी की दवाईयों की वजह से भी फैटी लीवर की बीमारी होती है.

क्या है इलाज

डॉ अनुज कुमार बताते हैं : इलाज से पहले लीवर के बारे में यह जान लें कि यह शरीर का ऐसा अंग है जो खुद को 90 फीसदी तक ख़ुद से ठीक कर लेता. और अभी तक ऐसी कोई दवाई उपलब्ध नहीं है, जो फैटी लीवर को ठीक कर सके. कुछ दवाइयां हैं जो अभी परीक्षण के दौर में हैं. ऐसे में सवाल उठता है कि फिर यह ठीक कैसे होता है. इसका जवाब यह है कि यह खुद से ठीक होता है. बीमार व्यक्ति को बस यह करना होता है कि वह लीवर को ऐसा माहौल दे कि वो खुद को ठीक कर सके. और अगर बीमार व्यक्ति एक ईमानदार कोशिश करें, तो ग्रेड-तीन तक के फैटी लीवर पूरी तरह ठीक हो सकता है.

तीन शुरुआती लक्षण

- ग्रेड-एक, में सामान्यत: कोई लक्षण नहीं होते, रुटीन चेकअप में यह पकड़ में आ जाता है.
- ग्रेड-दो, अपच, गैस की समस्या, भूख कम लगना, कमज़ोरी इत्यादि होती है.
- ग्रेड-तीन, पेट दर्द, वजन का कम हो जाना, जॉन्डिस जैसे लक्षण दिखाई देने लगते हैं.

फैटी लीवर हो, तो क्या करें

- शराब या नशे का सेवन ना करें.
- स्वस्थ्य आहार लें.
- नियमित शारीरिक व्यायाम करें.
- अपने वजन को नियंत्रण में रखें.
- अगर डायबिटिज या बीपी है, तो उसे नियंत्रण में रखें.
- बिना डॉक्टरी सलाह के किसी भी दवाई (एलोपैथिक/ आयुर्वेदिक/ होमियोपैथिक) का सेवन ना करें.

दो दिन फिर पूछताछ करेगी अली से ईडी

रांची। पूर्व मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से जुड़े लैंड स्कैम केस के आरोपी अफसर अली की रिमांड अवधि पूरी होने के बाद एजेंसी (ईडी) ने उसे कोर्ट के समक्ष प्रस्तुत किया. जिसके बाद कोर्ट में ईडी ने अफसर अली से पूछताछ के लिए और समय देने का आग्रह किया. जिसे कोर्ट ने स्वीकार करते हुए अफसर अली की रिमांड दो दिन बढ़ा दी है. जिससे अब ईडी और दो दिन अफसर अली से पूछताछ करेगी. इससे पहले अफसर अली से ईडी ने कोर्ट की अनुमति से 12 दिनों तक पूछताछ की थी. इस पूछताछ में कई अहम खुलासे हुए हैं. इसी केस में ईडी फर्जी डीड बनाने के मोहम्मद सद्दाम को भी गिरफ्तार कर चुकी है. एजेंसी ने उससे भी कई दिनों तक पूछताछ की है. जिसमें कई चौंकाने वाले खुलासे हुए हैं.

तापमान
39.4° अधिकतम | 26.6° न्यूनतम

शुभम संदेश

एक राज्य - एक अखबार

www.lagatar.in | रविवार 28 अप्रैल 2024 बैशाख कृष्ण पक्ष 05, संवत 2081 ● पृष्ठ : 12, मूल्य : ₹ ● वर्ष : 2, अंक : 20 | आमंत्रण मूल्य : ₹ 3 मात्र

कोकर से बूटी मोड़ तक सब्जीवालों को प्रशासन ने हटाया

फोटो- रमीज

संवाददाता। रांची

हाईकोर्ट के सख्त आदेश के बाद रांची जिला प्रशासन ने सड़क किनारे से अतिक्रमण हटाने का काम तेज कर दिया है. शनिवार को प्रशासन की टीम ने कोकर चौक से बूटी मोड़ तक अतिक्रमण को हटाया. इस अभियान में निशाने पर सब्जी और फल विक्रेता रहे. प्रशासन ने न सिर्फ दुकानदारों को हटाया, बल्कि जिस जगह पर बैठ कर वो सब्जी बेचते थे, उस जगह पर जेसीबी से गड्ढे बना दिये. गौरतलब हो कि कोकर से बूटी मोड़ के बीच सुरेंद्रनाथ सेंटेनरी स्कूल से लेकर खेलगांव मोड़ तक फुटपाथ पर सब्जी की दुकानें लगती थी. लोग सड़क पर ही वाहन खड़ी करके सब्जी खरीदते थे. इस कारण न सिर्फ जाम लगता था, बल्कि दुर्घटना की आशंका भी बनी रहती थी.

लोगों को हुई काफी परेशानी

लालपुर चौक से बूटी मोड़ तक सड़क किनारे सब्जी बेच रहे लोगों को हटाने की वजह से इस इलाके के लोग भी परेशान रहे. शाम के समय जब लोग सब्जी खरीदने निकले, तो दुकानें थी ही नहीं. लोगों को यह समझ में नहीं आ रहा है कि अब वह कहां से सब्जी खरीदें. सब्जी खरीदने के लिए लोगों को लालपुर आना पड़ा.

बिना परमिट वाले ऑटो हटाए गए, ट्रैफिक सुगम

शहर को जाममुक्त बनाने के लिए प्रशासन ने पिछले एक सप्ताह से अभियान चला रखा है. पहले चरण में बिना परमिट के शहर में चलनेवाले ऑटो को मुख्य सड़कों से हटाया गया. इसका असर ट्रैफिक पर भी पड़ा. आज की तारीख में मुख्य सड़कों पर पहले की अपेक्षा कम जाम लग रहा है. क्योंकि, करीब 15 हजार ऑटो शहर से गायब हो गए हैं. हालांकि इस अभियान का दूसरा पहलू यह है कि 15 हजार घरों को अब आर्थिक संकट झेलना होगा.

ब्रीफ खबरें

साइबर जागरूकता के लिए बाइक रैली आज

रांची। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की मदद से डीपफेक और गलत सूचनाओं के प्रचार-प्रसार से लोगों को जागरुक करने के लिए अभियान शुरू किया गया है. साइबर पीस ने इसके लिए रविवार को को बाइक रैली का आयोजन किया है. इसका उद्देश्य यूट्यूबर्स और ब्लॉगर्स के जरिए लोगों तक सही जानकारी पहुंचाना है. बाइक रैली का शुभारंभ सुबह 6.30 बजे होगा. रैली में शामिल होने वाले प्रतिभागी सुबह 5.30 बजे तक साइबरपीस के अशोकनगर स्थित कार्यालय पहुंचेंगे.

30 जून तक होल्डिंग टैक्स भुगतान पर 10% की छूट

रांची। नगर निगम ने सूचना जारी वित्तीय वर्ष 2024-2025 के लिए होल्डिंग ऑनलाइन भुगतान करने का प्रावधान किया है. 30 जून तक पूरे वर्ष का टैक्स भुगतान करने पर 10 फीसदी की छूट दी जाएगी. इसको अलावा रांची नगर निगम के जनसुविधा केंद्र एवं डोरंडा अंचल जनसुविधा केंद्र में भी भुगतान किया जा सकता है. पूरे वित्तीय वर्ष के लिए भुगतान करने पर 7.5% की छूट दी जाएगी. दिव्यांग, आर्म्ड फोर्स, ट्रांसजेंडर व सीनियर सिटीजन को अतिरिक्त 5% की छूट प्रदान की जाएगी.

झामुमो ने बनाया हेलीपैड भाजपा पहुंची चुनाव आयोग

रांची। झामुमो द्वारा खेलगांव में हेलिकॉप्टर पार्किंग बनाने पर विरोध करते हुए भाजपा का एक प्रतिनिधिमंडल शनिवार को चुनाव आयोग पहुंचा और मुख्य चुनाव पदाधिकारी को ज्ञापन सौंपा. प्रतिनिधिमंडल में विधि प्रकोष्ठ के प्रदेश संयोजक सुधीर श्रीवास्तव, न्यायिक मामले खा उप प्रमुख प्रकाश झा, अधिवक्ता शिव कुमार शर्मा शामिल थे. सुधीर श्रीवास्तव ने कहा है कि झामुमो द्वारा जो खेलगांव को हेलीकॉप्टर पार्किंग बनाया गया है, वह किसके आदेश पर बना है.

हरमू वीवीआईपी रोड के बगल की बस्ती में पेयजल की घोर किल्लत

तरस रही 4000 की आबादी

एकमात्र मिनी एचवाईडीटी से नहीं बुझ रही प्यास

रेहान अहमद। रांची

राजधानी में प्रचंड गर्मी का एहसास हर दिन बढ़ कर करीब आ रहा है. बढ़ती तपिश में पेय जलसंकट की क्या स्थिति है, इसकी पड़ताल दैनिक 'शुभम संदेश' के संवाददाता ने की. इस दौरान शहर के कई मुहल्लों, कॉलोनी एवं अपार्टमेंट्स की स्थिति का जायजा लिया गया. हरमू वीवीआईपी रोड यामहा शोरूम के ठीक बगल में करीब 4000 की आबादी रहती है. लोगों ने कहा कि यह क्षेत्र पुरानी रांची में आता है. लेकिन यहां इस क्षेत्र में सप्लाई पानी का कनेक्शन भी नहीं दिया गया है.

लोगों ने बताया कि विगत 15 अप्रैल से ही हम लोगों के घरों की बोरिंग में पानी का लेवल नीचे चला है. इससे पानी की घोर किल्लत हो गई है. इस क्षेत्र के श्यामल घोष बताते हैं कि पूर्व वार्ड पार्षद की ओर से एक मिनी एचवाईडीटी पूर्व में ही लगाया गया था, जिससे पानी मिल रहा है. अगर इस समय यह मिनी एचवाईडीटी नहीं होता, तो हम लोग प्यासे ही मर जाते. नगर निगम को इस इलाके में सप्लाई पानी का कनेक्शन देने की सख्त जरूरत है.

वार्ड 26 में 60 मिनी एचवाईडीटी: अरुण झा

वार्ड 20 के पूर्व पार्षद अरुण कुमार झा ने कहा कि हमारे वार्ड क्षेत्र में पानी के लिये सप्लाई पानी का कनेक्शन बिछाया गया है. 60 मिनी एचवाईडीटी बने हैं, जिनसे लोगों को पानी मिलता है. गर्मी में एक दिन में 50 टैंकर हरमू क्षेत्र में बांटना पड़ता था. लेकिन सप्लाई पानी का कनेक्शन होने के बाद मात्र पांच से छह टैंकर पानी बंट रहा है.

आधे क्षेत्र में कनेक्शन पर पानी नहीं: एहतेशाम

वार्ड 21 स्थित पुरानी रांची के पूर्व पार्षद मो. एहतेशाम ने बताया कि क्षेत्र के आधे हिस्से में सप्लाई पानी का कनेक्शन है. लेकिन पानी नहीं के बराबर आता है. कभी आता है, तो कभी नहीं. क्षेत्र में 40 मिनी एचवाईडीटी है. लोगों की पानी की कमी इसी से दूर की जाती है. यदि पूरे क्षेत्र में सप्लाई पानी का कनेक्शन बिछा दिया जाएं, तो यहां के लोगों को गर्मी में भी पानी की किल्लत नहीं होगी. लेकिन, कहने पर भी विभाग की ओर से कोई ध्यान नहीं दिया जाता है.

सप्लाई कनेक्शन बिछ जाए तो मिलेगी राहत: समीर

हरमू कॉलोनी निवासी समीर कुमार ने कहा कि सप्लाई पानी का कनेक्शन अबतक नहीं मिला है. अभी घर के बोरिंग से काम चल रहा है. ऐसे घर के पास ही मिनी एचवाईडीटी लगा है. पानी की कमी होने पर वहां से भी पानी भर कर लेते हैं. छूटे हुए क्षेत्रों में सप्लाई पानी का कनेक्शन पूरा कर दिया जाने से यहां के लोगों को बहुत हद तक राहत मिलेगी. लेकिन, नगर निगम को कई बार कहने के बावजूद इस पर कोई सुनवाई नहीं हुई.

गर्मी से राहत पाने के लिये टंकी से पानी पीते हैं स्कूल के बच्चे

हरमू कॉलोनी में लगे मिनी एचवाईडीटी से संत कुलदीप स्कूल एवं अन्य क्षेत्रों के बच्चे वापस लौटते समय दोपहर 12 बजे तेज गर्मी से राहत लेने के लिए मिनी एचवाईडीटी की पानी टंकी के नल से बच्चों ने पानी नी कर राहत की सांस ली. स्कूल के बच्चों से पूछने पर बताया कि बैग में पानी का बोतल रखते हैं, पर इतनी गर्मी में एक बोतल पानी स्कूल में ही खत्म हो जाता है. घर दूर है, इसलिये यहां हमलोग रुक कर इस टंकी से पानी भर रहे हैं.

स्कूल बस पलटी, 16 बच्चे घायल

संवाददाता। रांची/मांडर

जिले के मांडर थाना क्षेत्र के चुंद में शनिवार सुबह स्कूल बस के पलटने से 16 बच्चे घायल हो गए. उक्त बस सेंट मारिया स्कूल की थी. घटना सुबह उस समय घटी, जब बस चालक बच्चों को लेकर स्कूल जा रहा था. इस दौरान बस अनियंत्रित होकर खेत में जा पलटी. दुर्घटना के बाद स्थानीय लोगों की मदद से सभी घायल बच्चों को नजदीकी अस्पताल पहुंचाया गया, जहां उनका इलाज किया गया है. जानकारी के अनुसार सभी बच्चे सुरक्षित हैं.

तीखे मोड़ पर अनियंत्रित हुई बस : स्थानीय लोगों ने बताया कि सेंट मारिया स्कूल की बस एक तीखे मोड़ पर बस अनियंत्रित हो गयी और सड़क किनारे एक खेत में पलट गयी. बस पलटते ही बच्चे चिल्लाने लगे. बस की गेट दाहिनी ओर मुड़ गयी थी, इसलिए कोई भी बच्चा चाह कर भी बस से बाहर नहीं निकल पाया.

इस बीच मामले की जानकारी स्थानीय लोगों को हुई, जिसके बाद मांडर थाने को भी हादसे की सूचना दी गयी. स्थानीय लोगों ने मांडर पुलिस के साथ मिलकर बस का पिछला शीशा तोड़ा और फिर सभी बच्चों को बाहर निकाला गया.

राज्यभर की खबरों के लिए स्कैन करें

बस में 16 बच्चे सवार थे, सभी सुरक्षित

घटना की सूचना मिलते ही एंबुलेंस भी तुरंत मौके पर पहुंच गई. मांडर थाना प्रभारी राहुल कुमार व स्थानीय लोगों ने बस का शीशा तोड़ कर सभी घायल बच्चों को बस से बाहर निकाला और एंबुलेंस व पुलिस वाहन से बच्चों को तुरंत नजदीकी अस्पताल पहुंचाया गया. बस में 16 बच्चे सवार थे और सभी सुरक्षित हैं. हादसे में स्कूल बस के चालक व खलासी भी घायल हो गये. एक बच्चे का सिटी स्कैन कराया गया.

झालसा ने लिया संज्ञान, बच्चों को बेहतर इलाज कराने का दिया निर्देश

संवाददाता। रांची

मांडर थाना क्षेत्र में बच्चों से भरी स्कूल बस पलटने के मामले में झालसा के कार्यपालक अध्यक्ष न्यायमूर्ति सुजीत नारायण प्रसाद ने संज्ञान लिया है. उन्होंने जिला विधिक सेवा प्राधिकार, रांची को दिशा-निर्देश दिया है कि दुर्घटना के शिकार बच्चों को तत्काल चिकित्सीय सहायता एवं आवश्यक विधिक सहायता प्रदान की जाए.

इसके बाद जिला विधिक सेवा प्राधिकार, रांची के अध्यक्ष न्यायायुक्त दिवाकर पांडेय के आदेश से जिला विधिक सेवा प्राधिकार, रांची के सचिव राकेश रंजन ने तत्काल टीम का गठन कर बच्चों के इलाज में सहायता प्रदान करने का आदेश दिया. इसके बाद टीम ने स्थानीय प्रशासन की मदद से मांडर के लिवेंस अस्पताल में बच्चों का इलाज कराया. वहीं एक बच्ची को बेहतर इलाज के लिए रांची रेफर किया गया है. जिला विधिक सेवा प्राधिकार रांची के द्वारा अपने पैरा लीगल वॉलंटियर सुमन ठाकुर और पम्मी देवी के माध्यम से आवश्यक सहायता पहुंचाई जा रही है.

बर्ड फ्लू: डीसी ने रोकथाम के लिए केंद्रीय टीम संग की बैठक

संवाददाता। रांची

डीसी राहुल कुमार सिन्हा ने शनिवार को बर्ड फ्लू की रोकथाम के लिए केंद्रीय टीम के साथ बैठक की. होटवार स्थित क्षेत्रीय कुक्कुट प्रक्षेत्र के कुक्कुटों के जांच किये गये नमूनों में एच5एन1 एवियन इंफ्लुएंजा की पुष्टि के बाद प्रभावित क्षेत्र के एक से 10 किमी के दायरे में शेष बचे कुक्कुटों की किलिंग तथा संक्रमित क्षेत्र का वैज्ञानिक विधि से संपूर्ण डिसइंफेक्शन कार्य को लेकर विचार-विमर्श किया गया.

डीसी ने बताया कि बर्ड फ्लू के प्रसार की रोकथाम को लेकर एक्शन प्लान के तहत रैपिड रिस्पांस टीम की ओर से संक्रमित क्षेत्र के एक से 10 किलोमीटर के दायरे में कुक्कुट की कलिंग वैज्ञानिक विधि से निस्तारण और संक्रमित क्षेत्र का डिसइंफेक्शन का कार्य किया जा रहा है. साथ ही संक्रमित क्षेत्र के एक किमी के दायरे में चिकेन व अंडा दुकानें और आसपास के क्षेत्र में मुर्गियों, अंडे आदि की उपलब्धता की जांच की जा रही है. केंद्रीय टीम की ओर से बर्ड फ्लू की रोकथाम के लिए किये जा रहे कार्यों पर संतोष व्यक्त किया गया.

दो डॉक्टर समेत छह को किया गया क्वारंटाइन

रांची। शहर के होटवार इलाके में बर्ड फ्लू (एच5एन1) फैला हुआ है. प्रशासन ने इससे निपटने की पूरी तैयारी कर ली है. एहतियात के तौर पर वहां के दो डॉक्टर समेत छह लोगों को क्वारंटाइन किया गया है. कुक्कुट प्रक्षेत्र के आसपास के इलाके को कंटोनमेंट जोन घोषित कर दिया गया है. प्रक्षेत्र के डॉ गणेश ने बताया कि प्रतिबंधित जोन के एक किमी के दायरे में मुर्गी, बत्तख और अंडों को जब्त कर नष्ट करने का काम किया जा रहा है. साथ ही लोगों को अलर्ट किया गया है. बताया कि बर्ड फ्लू की पुष्टि के बाद दिल्ली से विशेषज्ञों की टीम रांची आयी थी. टीम ने बर्ड फ्लू के नमूने एकत्रित किए हैं, जिसकी जांच की जायेगी. जानकारी के मुताबिक, संक्रमण शहर के दूसरे इलाकों में ना फैले इसके लिए जरुरी इंतजाम किए जा रहे हैं. दिल्ली से आयी केंद्रीय जांच टीम के प्रमुख डॉ रजनीश गुप्ता ने पत्रकारों को बताया है कि होटवार के एक किमी के इलाके में अंडे, मुर्गी और बत्तख की बिक्री पर रोक लगा दिया गया है.

प्रतिक्रिया पांच साल में एचईसी, तुपुदाना, कोकर इंडस्ट्रीय एरिया को बचाने के लिए कुछ नहीं कर पाये सांसद

व्यवसायी होकर कारोबारियों को दर्द नहीं समझ सके संजय सेठ

प्रमुख संवाददाता। रांची

रांची के सांसद संजय सेठ एक व्यवसायी रहे हैं. झारखंड चैंबर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष भी रहे हैं. व्यवसायियों के बीच रहते हैं, लेकिन उन्होंने अपने लोकसभा क्षेत्र के व्यवसायियों को निराश किया है. राजधानी के व्यवसायी कहते हैं कि संजय सेठ ने उनका दर्द नहीं समझा. अपने पांच साल के कार्यकाल में उन्होंने उद्योग और व्यवसाय पर ध्यान नहीं दिया. अगर वो उद्योगों और व्यवसायियों का दर्द समझते तो एचईसी, तुपुदाना इंडस्ट्रियल एरिया, कोकर इंडस्ट्रियल एरिया जैसे उद्योगों की हालत इतनी बुरी नहीं होती. एचईसी बंद होने के कगार पर पहुंच गई. मजदूरों को वेतन नहीं मिल रहा. हजारों लोग आंदोलन कर रहे हैं, लेकिन सांसद को कभी उनकी पीड़ा नजर नहीं आई. एक जमाने में जिस तुपुदाना में 350 से अधिक उद्योग हुआ करते थे, आज वहां 50 उद्योग भी नहीं बचे हैं. बिजली, पानी, सड़क जैसी मूलभूत सुविधाओं के अभाव में उद्योगों ने दम तोड़ दिया. गेदलसूद में 100 करोड़ में मेगा फूड पार्क बना था. लेकिन सांसद ने मर चुके उद्योगों को जिंदा करने के लिए कुछ नहीं किया.

कोई सहयोग नहीं मिला: किशोर मंत्री

झारखंड चैंबर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष किशोर मंत्री ने कहा कि सांसद अगर चाहे तो क्या नहीं कर सकता है. चैंबर ऑफ कॉमर्स खुद दम तोड़ रहे उद्योगों को जीवन देने के लिए अपने स्तर से प्रयास कर रहा है. इसमें सांसद से कोई सहयोग नहीं मिला है. उन्होंने कहा कि तुपुदाना इंडस्ट्रीयल एरिया में मूलभूत सुविधाओं के अभाव में उद्योग दम तोड़ रहे हैं. जो व्यवसायी उद्योग चला रहे हैं, उनको कई तरह की दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है. झारखंड चैंबर ऑफ कॉमर्स ने तीन-चार महीने पहले सांसद से मिल कर उद्योगों से जुड़ी कई समस्याओं को उनके सामने रखा था. तब सांसद ने कहा था केंद्र और राज्य सरकार से जुड़ी समस्याएं हैं. वे इन मामलों को देखेंगे. लेकिन नतीजा सिफर ही रहा.

सांसद से उद्योगों के लिए उम्मीदें और भी: आदित्य मल्होत्रा

झारखंड चैंबर ऑफ कॉमर्स के उपाध्यक्ष आदित्य मल्होत्रा ने कहा कि सांसद संजय सेठ ने काम किया है, लेकिन उद्योगों के लिए और उम्मीदें हैं. कहा कि रांची में उद्योगों की हालत बेहद खराब है. उद्योगों को मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध नहीं हैं. उद्योगपतियों को सुरक्षा का वातावरण नहीं मिल रहा है. अधिकांश उद्योग बंद हो चुके हैं. जो चल रहे हैं वो भी किसी तरह घसीट-घसीट कर चल रहे हैं. उद्योगों के बंद होने से उसपर आश्रित लोगों की परेशानी की कल्पना की जा सकती है.

एचईसी, सरना धर्मकोड पर खामोश रहे सांसद: सतीश

कांग्रेस के प्रदेश प्रवक्ता सतीश पॉल मुंजनी ने कहा कि उद्योगों की छोड़िये, सांसद ने अपने लोकसभा क्षेत्र में कोई काम नहीं किया है. सांसद रांची, हटिया, कांके और खिजरी छोड़ कर और किसी प्रखंड में जाते हैं, जरा बता दीजिए. एचईसी की हालत खराब है, लेकिन सांसद पार्लियामेंट में इसके लिए कोई आवाज नहीं उठाते हैं. झारखंड से सरना धर्मकोड पास करके केंद्र के पास भेजा गया. उसपर भी संजय सेठ समेत भाजपा के सांसदों ने पार्लियामेंट में कुछ नहीं बोला. रांची लोकसभा क्षेत्र में रोजगार तो खत्म हो चुका है. उपर से जीएसटी लाकर सरकार ने मध्यम और छोटे व्यवसायियों को बर्बाद कर दिया है. सांसद ने पांच साल में सिर्फ धार्मिक उन्माद की बातें की. रोजगार, उद्योग जैसे मुद्दों पर चुप्पी साधे रहे. संजय सेठ पूरे तरह से जीरो हैं.

ब्रीफ खबरें

एसएसपी ने नक्सलग्रस्त बूथ का किया निरीक्षण

रांची। लोकसभा चुनाव को लेकर एसएसपी चंदन सिन्हा शनिवार को नक्सल प्रभावित बूथ का निरीक्षण किया. एसएसपी ने तमाड़ थाना क्षेत्र के नक्सल प्रभावित क्षेत्रों के बूथ का निरीक्षण किया. इस दौरान मतदान कराने के लिए केंद्रीय बलों के ठहराव स्थल पियाकूली पिकेट का निरक्षण किया. निरीक्षण के क्रम में सम्बंधित बूथों के ग्रामीणों को 13 मई को शत-प्रतिशत मतदान करने के लिए जागरूक किया गया. जंगलों पहाड़ों के बीच बसे गांव आराहंगा के एक वृद्ध ग्रामीण ने उत्साह से अपना वोटर आई कार्ड भी दिखाया. एसएसपी ने बुंडू डीएसपी और तमाड़ थाना प्रभारी को मतदान के दौरान शांतिपूर्ण मतदान के लिए सुरक्षा संबंधी आवश्यक दिशा-निर्देश दिये.

डीसी ने चुनाव कार्यों का लिया जायजा

रांची। रांची में लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र के लिए अधिसूचना 29 अप्रैल को जारी होगी. इससे पहले जिला निर्वाचन पदाधिकारी, राहुल कुमार सिन्हा ने शनिवार को तैयारियों की समीक्षा की. निर्वाची पदाधिकारी कक्ष में संपादित किये जाने वाले कार्य को लेकर पूर्वाभ्यास किया गया. प्रतिनियुक्त पदाधिकारी एवं दंडाधिकारियों को 29 अप्रैल से 9 मई 2024 तक प्रतिनियुक्ति स्थल पर सुबह 9 बजे से योगदान सुनिश्चित करने का निर्देश दिया गया है, साथ ही आदर्श आचार संहिता के मद्देनजर विधि-व्यवस्था एवं शांति व्यवस्था संधारण के लिए अपने कर्तव्यों का निर्वहन सुनिश्चित करने को कहा गया है. अनुमंडल पदाधिकारी सदर रांची को आदर्श आचार संहिता को दृष्टिगत रखते हुए एफएसटी/वीएसटी की टीम की प्रतिनियुक्त करने का निर्देश दिया गया है.

रामटहल का फैसला स्वागत योग्यः कुमुद

रांची। पूर्व सांसद रामटहल चौधरी के कांग्रेस से इस्तीफा देने का राष्ट्रीय समानता दल के प्रदेश अध्यक्ष कुमुद कुशवाहा ने स्वागत किया है. उन्होंने कहा कि रामटहल चौधरी ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर कांग्रेस से अपना इस्तीफा दिया और कहा कि कांग्रेस के प्रदेश प्रभारी गुलाम अहमद मीर, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष राजेश ठाकुर समेत कांग्रेस के आला नेताओं ने उनके साथ धोखा किया है. रामहटल ने यह भी कहा कि वे रांची की जनता के लिए उनके साथ हमेशा उनकी आवाज बनकर खड़े रहेंगे। जरूरत पड़ने पर उन्होंने निर्दलीय चुनाव लड़ने की भी बात कही है. कुशवाहा ने कहा कि चौधरी अच्छे नेता हैं और अपने समाज एवं पिछड़े वर्ग को हक दिलाया है. जरूरत पड़ी तो उनको अपना समर्थन देंगे.

रांची महिला कॉलेज में लगा रक्तदान शिविर

रांची। रांची वीमेंस कॉलेज में शनिवार को रक्तदान शिविर लगाया गया. यह शिविर राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई (एनएसएस) की ओर से कार्यक्रम पदाधिकारी डॉ कुमारी उर्वशी, डॉ कुमारी भारती सिंह, हर्षिता सिन्हा की देखरेख में लगाया गया. सदर अस्पताल के सहयोग से शिविर सुबह 10:30 से दोपहर 2:00 बजे कालेज साइंस ब्लॉक सभागार में चला.

राजधानी में तेज हुईं चुनाव की तैयारियां: चौथे चरण के लिए वोटर इनफार्मेशन स्लिप का वितरण शुरू

सोशल मीडिया की फेक न्यूज पर लगातार हो रही निगरानीः के रवि कुमार

प्रमुख संवाददाता। रांची

चौथे चरण के चुनाव के लिए लोहरदगा, खूंटी, पलामू और सिंहभूम लोकसभा क्षेत्र में वोटर इनफॉर्मेशन स्लिप का वितरण शुरू हो चुका है. मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी के रवि कुमार ने निर्वाचन सदन में प्रेस कॉन्फ्रेंस कर यह जानकारी दी. उन्होंने बताया कि बीएलओ घर-घर जाकर यह कार्य कर रहे हैं. राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि भी चाहें तो वह बीएलओ के साथ वोटर स्लिप वितरण देखने के लिए साथ जा सकते हैं. उन्होंने बताया कि वोटर इनफार्मेशन स्लिप में मतदाता का नाम, बूथ संख्या, स्थान, मतदाता को मतदान के दौरान क्या करना है और क्या नहीं करना है. इन सब चीजों की जानकारी रहेगी. साथ में गूगल मैप के साथ बूथ का लोकेशन भी रहेगा. मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी ने बताया कि भ्रामक खबरों (फेक न्यूज) के प्रकाशन, प्रसारण सहित सोशल मीडिया पर उसके पोस्ट की लगातार निगरानी की जा रही है. भ्रामक खबर मिलने पर संबंधित संस्थान, व्यक्ति पर कारवाई की जाएगी.

स्लिप के साथ वोटर आईडी कार्ड लेकर जाना होगा बूथ

के रवि कुमार ने बताया कि चुनाव आयोग वोटर इनफार्मेशन स्लिप वितरण के दौरान यह भी सर्वे करेगा कि कितने लोगों के पास मतदाता पहचान पत्र नहीं है. मतदाता को मतदान के लिए इस स्लिप के साथ वोटर आइडी कार्ड ले जाना होगा. मतदाता पहचान पत्र नहीं रहने की स्थिति में आयोग द्वारा मान्य 12 तरह के पहचान पत्र मतदान के लिए ले जाना होगा. वोटर इनफार्मेशन स्लिप वितरण की निगरानी भी की जाएगी, ताकि शत प्रतिशत वोटर तक यह सुविधा पहुंचे. इसके लिए मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी कार्यालय के अधिकारी भी संबंधित लोकसभा क्षेत्रों में जाएंगे और सुनिश्चित करेंगे कि वोटर स्लिप का वितरण सुचारू ढंग से हो.

बोगस मतदान रोकने की योजना

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी ने बताया कि पारदर्शी मतदान के लिए एएसडी (आफसेंट, सिफ्ट, डेथ) की भी सूची बनाई गई है, ताकि अनुपस्थित, दूसरी जगह जा चुके या जिनका निधन हो चुका है उनके नाम पर बोगस मतदान की आशंका नहीं रहे. उन्होंने कहा कि मतदान के दौरान बीएलओ भी मतदान केंद्र पर रहेंगे, ताकि स्थानीय होने के कारण मतदाता की सही पहचान सुनिश्चित हो सके. सभी बूथों पर 14 से 18 वर्ष के आयु वर्ग के लोगों को वालिंटियर के रूप में रखा जाएगा. ये जहां मतदाताओं को गाइड करेंगे वहीं भविष्य के कुशल मतदाता के रूप में तैयार होंगे. ऐसे वालिंटियरों का चयन कर ट्रेनिंग भी दी जा चुकी है.

हॉर्लिक्स और बॉर्नवीटा में चीनी ज्यादा, मशाले कैंशरकारी...

बेचने वालों को पता ही नहीं

रेहान अहमद। रांची

हॉर्लिक्स, बॉर्नवीटा हेल्थ ड्रिंक्स नहीं है. इनमें जरूरत से ज्यादा चीनी है. ये हेल्थ प्रोडेक्ट नहीं हैं. भारत सरकार के विशेषज्ञों का कहना है कि न इनसे कोई ताकत मिलती है, न ही लंबाई या फिटनेस बढ़ती है. इन प्रोडक्ट्स के निर्माताओं ने फर्जी विज्ञापन देकर करोड़ो-अरबों की कमाई की. यही नहीं भारत के प्रमुख खाद्य मसाला निर्माता कंपनियां एमडीएच और एवरेस्ट भी संदेह के घेरे में आ गयी हैं. हाल में हांगकांग और सिंगापुर ने इनके कुछ उत्पादों को सेहत के लिए खतरनाक बताते हुए उन पर बैन लगा दिया है. इसके बाद भारत सरकार के खाद्य विभाग इसकी जांच शुरू कर दी है. अब तो अमेरिका ने भी एमडीएच और एवरेस्ट के मसालों में खतरनाक केमिकल के बारे में जांच करवा रहा है. अमेरिकी खाद्य विभाग ने इस संबंध में हांगकांग और सिंगापुर से भी जानकारी मांगी है.

दिलचस्प बात यह है कि मीडिया में प्रमुखता के खबरें आने के बाद भी राजधानी रांची के दुकानदारों को इस संबंध में कोई जानकारी ही नहीं है. और ये सारे प्रोडक्ट धड़ल्ले से बेंचे जा रहे हैं. यहां के दुकानदारों को अब तक पता ही नही चल पाया है कि सालों से जिस हॉर्लिक्स और बॉर्नवीटा को वों हेल्थ ड्रिंक्स के नाम पर बेंच रहे हैं, वो सेहत के लिए खतरनाक हैं. उनमें वह जहरीले पदार्थ हैं. यही हाल एमडीएच और एवरेस्ट मसालों के मामले में भी है. जागरूक ग्राहक भी इसको लेकर अब तक जागरूक नहीं हो सके हैं और धड़ल्ले से इनकी खरीदारी कर रहे हैं. शुभम संदेश ने ने राजधानी के कई दुकानदारों से इस पर बात की, तो किसी ने भी नहीं बताया कि उन्हें ऐसी कोई जानकारी है. हालांकि ये खबर आम हो चुकी है कि एमडीएच के सांभर मसाला, एमडीएच करी पाउडर, एवरेस्ट फिश करी मसाला में कैसर रोग पैदा करने वाले केमिकल एथिलीन ऑक्साइड मिला है. वहीं, हॉर्लिक्स व बॉर्नवीटा में जांच के बाद चीनी की मात्रा काफी अधिक पाई गई है.

क्या कहते हैं शहर के दुकानदार

ग्राहकों की मांग पर ही देते हैं एमडीएच के मसाले : सोनी

हरमू स्थित सोनी जनरल स्टोल के संचालक ने सोनी ने कहा कि इन उत्पादों पर कोई कार्रवाई हुई है या जांच चल रही है, इसकी कोई जानकारी हम लोगों को नहीं मिली है. ग्राहकों के मांग पर एमडीएच व एवरेस्ट मसाले उन्हें उपलब्ध कराते हैं. हॉर्लिक्स व बॉर्नवीटा के बारे में भी नहीं पता.

जानकारी नहीं है कि ये सेहत के लिए खतरनाक हैं : इम्तियाज

इरशाद स्टोर के मो. इम्तियाज ने कहा कि हमें अभी तक ऐसी कोई जानकारी नहीं मिली है. हमारे यहां हॉर्लिक्स व एमडीएच के मसाले रोजाना ग्राहक खरीदते हैं. ग्राहकों की मांग की वजह से दुकान में रखते हैं. आपसे पहली बार सुन रहे हैं कि ये सेहत के लिए खतरनाक हैं.

ग्राहक खरीदते हैं, तो हम बेचते हैं : राजेश

हरमू के ही कुबेर स्टोर के संचालक राजेश कुमार ने कहा कि हमें ऐसी कोई जानकारी नहीं मिली है. हमारे यहां से एमडीएच मसाले व हॉर्लिक्स की बिक्री ग्राहकों की मांग पर होती है. जब ग्राहक मांगता है, तभी तो हम इसे लाकर बेंचते हैं.

डिमांड पर मंगवाते हैं, रोक लगेगी, तो रोक देंगे : मुरारी

राज स्टोर हरमू के मुरारी अग्रवाल ने कहा कि अखबार के माध्यम से एमडीएच मसालों की जानकारी मिली थी. लेकिन यह विदेशों में हुआ है. भारत में ऐसी कोई सूचना नहीं मिली है. इस लिए ग्राहकों के डिमांड पर एमडीएच और एवरेस्ट मसाले मंगवाते हैं.

ग्राहकों की मांग पर ही देते हैं हॉर्लिक्स और बॉर्नवीटा : अजय

शिवा मेडिकल के अजय कुमार ने कहा कि हॉर्लिक्स बॉर्नवीटा के बारे कोई जानकारी नहीं है. ग्राहक मांगते हैं, इस लिए हॉर्लिक्स और बॉर्नवीटा दुकान में रखते हैं. सरकार की तरफ से कोई निर्देश आएगा, तो बेंचना बंद कर देंगे. हम लोग तो डिमांड पर ही सामान बेचते .हैं

ऐसी कोई जानकारी नहीं है हमें: संतोष

एसके स्टोर के संतोष कुमार ने कहा कि इस तरह की कोई जानकारी हम लोगों को नहीं है. ग्राहक मांग करते हैं, इस लिए एमडीएच, एवरेस्ट मसाले व हॉर्लिक्स बेचने के लिए रखते हैं. जब आना बंद हो जाएगा, तो नहीं बेंचेंगे.

ग्राहकों की मांग पर दुकान में रखते, बेचते हैं : अनुज

अनुज स्टोर के संचालक अनुज ने कहा कि अन्य मसालों से अधिक ग्राहक एमडीएच मसाले की ही मांग लोग करते हैं. इस लिए इसे रखते हैं. इस तरह की कोई जानकारी नहीं है. बेंचने से रोका जाएगा, तो बंद कर देंगे.

जानकारी नहीं, ग्राहकों की मांग पर रखते हैं : गुड्डू

हरमू मुन्ना स्टोर के सचालक गुड्डू कुमार ने कहा कि एमडीएच मसालों के साथ बॉर्नवीटा और हॉर्लिक्स भी बेचते हैं. ग्राहकों की मांग पर ही इन्हें दुकानों में रखते हैं. ऐसे इस तरह की कोई जानकारी नहीं है.

मांडर के सोसई आश्रम में बाबूलाल मरांडी की सभा

समीर उरांव के लिए मांगे वोट

प्रमुख संवाददाता। रांची

भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी ने लोहरदगा लोकसभा क्षेत्र के मांडर में चुनावी सभा को संबोधित किया. सोसई आश्रम में भाजपा प्रत्याशी समीर उरांव के पक्ष में सभा करते हुए उन्होंने भाजपा को वोट देने की अपील की. बाबूलाल मरांडी कांग्रेस और झामुमो पर भी जमकर बरसे. कहा हेमंत सोरेन सरकार में राज्य में भुईंहरी, पहनई और गैरमजरूआ जमीनों के कलकत्ता से फर्जी कागजात बनाकर उनपर कब्जा किया गया. गुंडों और जमीन दलालों ने इन जमीनों की जमाबंदी करवाकर रजिस्टर टू में चढ़ाया और फिर प्लॉटिंग कर बेचते रहे। हेमंत सोरेन के संरक्षण में यह सब हुआ. यहां तक की सेना की जमीनों को भी नहीं छोड़ा गया. इसी कारण आज हेमंत सोरेन जेल में बंद हैं. बाबूलाल ने कहा कि उन्होंने हेमंत सोरेन को सैकड़ों पत्र लिखे थे और जमीन कब्जा के मामलों की जांच कराने को कहा था. अगर वे जांच कराते और गड़बड़ी करने वालों को पकड़कर जेल में डलवाते तो आज हेमंत को जेल नहीं जाना पड़ता. हेमंत ने गुंडों, दलालों को पोषित कर संरक्षण दिया इसलिए ईडी ने उन्हें जेल में डाल दिया है.

कांग्रेस को राज्य की जनता से वोट मांगने का नैतिक अधिकार नहीं : बाबूलाल ने कहा कि कांग्रेस को नैतिकता के आधार पर झारखंड की जनता से वोट मांगने का कोई हक नहीं है. कांग्रेस ने सिर्फ राज्य की गरीब जनता को उनके जमीनों से विस्थापित करने का काम किया है. कांग्रेस को यह बताना चाहिए की एचईसी से कितने गांव और परिवार विस्थापित हुए हैं. कांग्रेस को यह भी जवाब देना चाहिए कि राज्य में बड़े-बड़े डैमों के निर्माण में और खदानों के कारण कितने लोग विस्थापित हुए हैं. उन्होंने कहा कि मोदी सरकार में 10 साल में कहां कितने लोग विस्थापित हुए कांग्रेस बताए. कहा कि देश में जिनकी दुकानें बंद हो रही हैं राज्य और देश की जनता उन्हें अपने वोटों से जवाब देगी.

सबका साथ, सबका विकास सिर्फ नारा नहीं, कर दिखाया

बाबूलाल ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने 10 साल के कार्यकाल में देश के गरीब, किसान, महिलाओं, युवाओं जैसे सभी वर्गों के लिए अभूतपूर्व कार्य किए हैं. सबका साथ, सबका विकास सिर्फ नारा नहीं है, बल्कि पीएम मोदी ने इसे कर के दिखाया है. कहा कि हमें विकसित और समृद्ध भारत बनाना है तो फिर से भाजपा को जिताना होगा और नरेंद्र मोदी को प्रधानमंत्री बनाना होगा. उन्होंने मांडर की जनता से समीर उरांव के पक्ष में वोट देने की अपील की.

कांग्रेस की युवा न्याय मेनिफेस्टो का किया वितरण

रांची। एनएसयूआई ने डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विवि में मोहब्बत की दुकान कैंपेन चलाकर छात्रों के बीच में कांग्रेस का युवा न्याय मेनिफेस्टो का वितरण किया. मौके पर प्रदेश अध्यक्ष आमिर हाशमी, सचिव अभिजीत प्रताप सिंह, जिला अध्यक्ष अमन, हुसैन, चंदन सिंह, चंदन, अनुज, अंकिता, सरफराज, शमी हैदर, पवन, शम्स आदि शामिल थे. 30 लाख सरकारी पक्की नौकरी, हर ग्रेजुएट एवं डिप्लोमाधारी युवाओं को 1 लाख स्टाइफेंड के साथ अप्रेंटिसशिप गारंटी दी गयी है. मेनिफेस्टों में पेपर लीक रोकने की बात भी कही गयी है.

रेन वाटर हार्वेस्टिंग से जल संकट से मिल सकता है निजात

3000 वर्ग फीट से बड़े मकान में रेन वाटर हार्वेस्टिंग अनिवार्यः उप प्रशासक

संवाददाता। रांची

रांची नगर निगम सभागार में शनिवार को उप प्रशासक अनवर हुसैन की अध्यक्षता जल संरक्षण के संबंध में निगम सभागार में बैठक हुई. उन्होंने कहा कि शहर में रेन वाटर हार्वेस्टिंग समय की मांग है. रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम जल संरक्षण का आधुनिक तरीका है. इससे वर्षा जल का संचयन किया जाता है. घरों में इसे लगाने से भूमिगत जल रिचार्ज होता रहता है. जलस्तर बना रहता है, और इस तरह जल संकट से बहुत हद तक निजात मिल सकती है. नियम अनुसार 3000 वर्गफीट से अधिक क्षेत्रफल वाले आवासों के लिये रेन वाटर हार्वेस्टिंग जरूरी है.

केवल 3000 वर्गफीट के लिये सीमित ना रहें बल्कि सभी घरों में इसका पालन करना अहम कदम होगा. उन्होंने कहा कि निकट भविष्य को देखते हुए समाज के स्तर से यह एक सकारात्मक कदम होगा. आनेवाली पीढ़ी के लिये यह हमारी तरफ से एक अनमोल भेंट साबित होगा. इस पर एनजीओ, सामाजिक संगठनों ने बढ़ चढ़ कर साथ देने की बात कही. जल संरक्षण, जल संचयन, पौधारोपण आदि का प्रचार प्रसार करने की अपील की. निगम ने सभी नागरिकों से अपील किया की अपने घरों में रेन वाटर हार्वेस्टिंग नहीं है, तो बनवाये, वर्षा जल संचयन कर जलस्तर को बढ़ाये. मौके पर अधीक्षण अभियंता, नगर प्रबंधक, जलापूर्ति शाखा, नगर प्रबंधक, स्वास्थ्य शाखा एवं विभिन्न एनजीओं के लोग शामिल थे.

आदित्य विक्रम ने की शहर में असली चाय पर चर्चा कार्यक्रम की शुरुआत

कांग्रेस का मेनिफेस्टो में हर वर्ग का ध्यान

संवाददाता। रांची

कांग्रेस नेता आदित्य विक्रम जायसवाल के नेतृत्व में शनिवार को करमटोली चौक स्थित प्रेस क्लब दोपहर 2 से 4 बजे तक असली चाय पर चर्चा का आयोजन किया गया. इसमें मुख्य रूप से यूथ आइकॉन, बिजनसमैन एवं हर वर्ग के प्रबुद्धजन ने विजन फॉर झारखंड पर प्रतिक्रिया दी.

आदित्य ने कांग्रेस के मैनिफेस्टो पर जोर डालते हुए कहा कि पार्टी ने सबसे अच्छा मैनिफेस्टो देकर हर वर्ग के लिए सोचा है, एवं सभी के लिए न्याय किया है. अगर हम सत्ता में आये तो ये सारे वादे पूरा कर देशहित में एक नया कदम बढ़ाएंगे.

मौके पर स्पीकर्स में मीनाक्षी सिंह, रीमा खलखो, रवि, अभ्युदय के फाउंडर हरनयन नदीम, भानु प्रताप, अनुष्का, विद्याकर कुंवर,जैनेट एंड्रयू, ऐलन एंड्रयू, प्रखर मोदी आदि ने अपनी प्रतिक्रिया दी. कार्यक्रम में मुख्य रूप से डेली वेज वर्कर्स, कांग्रेस मैनिफेस्टो, मनरेगा, 25 लाख का हेल्थ कवर, अर्बन क्षेत्र के लिए अलग योजना, हर वर्ग से करप्शन हटाने के लिए अलग बॉडी का निर्माण, क्लाइमेट कंट्रोल रिन्यूएबल एनर्जी अवेयरनेस प्रोग्राम, टूरिज्म कॉरिडोर का निर्माण,रोड सेफ्टी बोर्ड,माइनॉरिटीज़ पर क़ानून बनाना, जीडीपी, लॉकडाउन से जो नुकसान युवाओं को हुआ उसपर विचार करना, सरकारी करप्शन, अच्छी गवर्नेंस की व्यवस्था,सस्टेनेबल डेवलपमेंट नीति, महिला सुरक्षा पर ध्यान, महिला आयोग द्वारा महिलाओं की सुरक्षा हेतु अच्छे क़ानून बने, ब्लॉगर सोसायटी अवेयरनेस प्रोग्राम चलाने, चाइल्ड वेलफेयर, नशा मुक्ति आदि विषयों पर चर्चा हुई. आदित्य ने कहा कि एक विजन फॉर झारखंड एक विजन फॉर देश, एक युवा क्या सोचते हैं और युवा सब जानते भी है, उसी हिसाब से वोट भी करेंगे.

अभियान रांची पुलिस ने जारी की अपील, नशा मुक्त समाज पर सहयोग करें सभी लोग

नशे के कारोबार की दें सूचना, होगी कार्रवाई, जारी किया व्हाट्सएप नंबर

खास बातें

- राजधानी के लोग तकनीक का इस्तेमाल कर करें सहयोग
- एसएसपी ने कहा- सूचना देने वाले की गोपनीयता बनी रहेगी

संवाददाता। रांची

नशे के जाल से युवाओं को बचाने के लिए रांची पुलिस ने एक सार्थक पहल शुरू की है. नशा मुक्त समाज बनाने में पुलिस ने समाज के लोगों से सहयोग मांगा है. इसको लेकर रांची एसएसपी चंदन कुमार सिन्हा ने एक वीडियो संदेश जारी किया है. इसमें उन्होंने नशे के विरुद्ध युद्ध में समाज को सजग भूमिका निभाने एवं जड़ से इस समस्या का समाधान करने के लिए प्रेरित करते हुए तकनीक का उपयोग करने का अनुरोध किया है. उन्होंने व्हाट्सएप के माध्यम इस तरह की गतिविधियों की सूचना रांची पुलिस को नंबर-9153886238 पर देने की अपील की है. एसएसपी ने लोगों से अपील करते हुये कहा है कि अगर किसी को भी इस तरह की गतिविधियों के अड्डे या स्थान का पता है तो उस स्थान पर जाकर उसका करेंट लोकेशन उपरोक्त नंबर पर भेज कर पुलिस की मदद कर सकते हैं. एसएसपी ने कहा कि यदि किसी के पास किसी नशे के सौदागर का फोटो, नाम, पता है तो उसे भी शेयर करें. एसएसपी ने आश्वस्त किया है कि सूचना देने वाले की गोपनीयता का पूरा ख़्याल रखा जाएगा.

एसएसपी ने इस दौरान लोगों से सावधानी बरतने की भी बात कही है. कहा कि लोकेशन भेजने के लिए उस स्थान पर तब जाएं, जब वहां इस तरह की असामाजिक गतिविधियां न हो रही हो.

वीडियो में नशे के दुष्प्रभाव को भी दर्शाया गया है

रांची पुलिस द्वारा जारी इस वीडियो में नशे के हानिकारक प्रभावों को भी दर्शाया गया है. युवाओं को इस खतरनाक लत से बचाने के लिए समाज के हर वर्ग से सहयोग करने का आग्रह किया है. एसएसपी ने कहा कि युवा पीढ़ी हमारे देश का भविष्य हैं. इन्हें नशे की गर्त में धकेलने वालों के ख़िलाफ़ कड़ी कार्रवाई के लिए रांची पुलिस प्रतिबद्ध है. बीते दिनों रांची पुलिस के विशेष अभियान में 50 से भी अधिक नशा कारोबारी जेल की सलाख़ों के पीछे भेजे जा चुके हैं. वहीं लगभग 15 करोड़ मूल्य के नशे का सामान जब्त किया जा चुका है. एसएसपी ने कहा कि इस अभियान को और धार देने की आवश्यकता है. उन्होंने कहा कि एक जागरूक और सतर्क समाज की लाखों आंखों से मुट्ठी भर अपराधी छुप नहीं सकते. पुलिस और समाज के संयुक्त प्रयासों से नशे के खिलाफ निरोधात्मक एवं दंडात्मक कार्रवाई करते हुए एक प्रभावी वातावरण का निर्माण कर युवा पीढ़ी को स्वस्थ और सकारात्मक दिशा में अग्रसर किया जा सकता है. जिसमें हम सभी का सहयोग आवश्यक है.

किशोरगंज में महानगर कांग्रेस ने चलाया जनसंपर्क अभियान

संवाददाता। रांची

किशोरगंज प्रखंड क्षेत्र बाल्मिकी नगर में रांची महानगर कांग्रेस के नेतृत्व में शनिवार को जनसम्पर्क अभियान चलाया गया. अभियान में सौकड़ो लोग शामिल हुए. मौके पर कांग्रेस महानगर अध्यक्ष कुमार राजा ने कहा कि जब से केन्द्र में बीजेपी की सरकार बनीं हैं तब से देश में प्रतिदिन महंगाई, बेरोजगारी बढ़ती जा रही है. उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य और शिक्षा, रोजगार के मुद्दों पर बीजेपी चर्चा नहीं करतीं, बस जुमला बाजी करती है, छोटे छोटे व्यापारी की व्यपार छीन कर बड़े उधोगपती अडानी के हाथ देना चाहती है, इस लिए कांग्रेस का हाथ पकड़ना जरूरी है. कांग्रेस की न्याय गारंटी कार्ड जिसमे 5 न्याय 25

गारंटी जनहित में लाई गई है. इस विषय से सभी को अवगत कराया और सभी को कांग्रेस पार्टी के पक्ष में मतदान करने की अपील की. कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रखंड के अध्यक्ष अजय कुमार ने की. मौके पर बाल संग्रक्षण आयोग के सदस्य उज्ज्वल तिवारी, युवा कांग्रेस के गौरव सिंह ,विकास कुमार आदि शामिल थे.

संत अलोइस विद्यालय में मनाया गया मोंटफोर्ट का पुण्यतिथि समारोह

- ब्रदर अलफोंस ने अपने संदेश में संत मोंटफोर्ट के जीवन में घटित घटनाक्रमों पर प्रकाश डाला

संवाददाता। रांची

रांची के संत अलोइस स्कूल में शनिवार को मोंटफोर्ट ब्रदर्स लुई-मेरी ग्रिग्नियन डी मोंटफोर्ट की पुण्यतिथि पर समारोह का आयोजन किया गया. मोंटफोर्ड ब्रदर्स जिन्हें संत गब्रिएल के नाम से भी जाना जाता है, जिनके धर्म के संरक्षक संत लुई मेरी ग्रिन्यों डी मोंटफोर्ट थे. संत अलोइस विद्यालय वर्तमान में गैबरियल ब्रदर्स के द्वारा ही संचालित है. इस समारोह में मुख्य उपदेशक फादर आनंद डेविड खलखो थे. संत मोंटफोर्ट की आध्यात्मिकता में उन्होंने कहा कि संत मोंटफोर्ट गरीबों के शुभचिंतक, प्रेरित व माता मरियम के परम भक्त थे. संत अलोइस विद्यालय परिवार संत मोंटफोर्ट के पुण्यतिथि 28 अप्रैल को प्रत्येक वर्ष पूरे उत्साह के साथ मनाता रहा है. इस अवसर पर ब्रदर अलफोंस ने अपने संदेश में संत मोंटफोर्ट के जीवन में घटित घटनाक्रमों पर प्रकाश डाला. उनके मिशन और विजन को निरंतर आगे ले चलने की बात कही. इस दौरान संत अलोइस विद्यालय में रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया. जिसमें अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए. जिसमें विद्यालय के सभी विभागों के शिक्षक शिक्षिकाएं, विद्यार्थी एवं अभिभावकों ने कार्यक्रम में हिस्सा लिया. संत अलोइस विद्यालय इंटर कॉलेज के प्राचार्य ब्रदर क्लेमेंट कन्डुलना ने सभी मेहमानों का स्वागत करते हुए संत मोंटफोर्ट की जीवनी विस्तारपूर्वक साझा की. कार्यक्रम के अंत में ब्रदर अमित बेक ने सभी लोगों का धन्यवाद दिया. कार्यक्रम में ब्रदर क्लेमेंट कांडुलना, ब्रदर अलफोंस, ब्रदर मनोज, ब्रदर माईक, ब्रदर अब्राहम, ब्रदर अमित, ब्रदर जेफ्री, मार्टिन टूटी, निरंजन कुमार सांडिल, जॉन ओड़या सेवानिवृत्त शिक्षकवृंद, ब्रदर एंथोनी, विद्यार्थीगण एवं विद्यालय के सभी शिक्षक व कर्मी उपस्थित थे.

मोंटफोर्ट कोन थे : मोंटफोर्ट का जन्म 31 जनवरी 1673 में सुर-मेउ में फ्रांस में हुआ था. वह एक फ्रांसीसी कैथोलिक पादरी थे, जो अपने उपदेश और अपने प्रभाव के लिए जाने जाते थे. 11वें पोप क्लेमेंट के द्वारा उन्हें मिशनरी एपोस्टोलिक बनाया गया था. मोंटफोर्ट ने पोपों को प्रभावित करने वाली कई किताबें लिखीं. जो क्लासिक कैथोलिक शीर्षक बन गईं. मैरियन भक्ति के संबंध में उनकी सबसे उल्लेखनीय रचनाएं ,सीक्रेट ऑफ़ द रोज़री, और ,ट्रू डिवोशन टू मैरी, में स्थापित हैं. 43 वर्ष की आयु में 28 अप्रैल 1716 उनकी मृत्यु हो गई. वर्तमान में मोंटफोर्ट ब्रदर्स व गब्रिएल ब्रदर्स शिक्षा सेवा एवं युवा स्वावलंबन के क्षेत्र में पूरी दुनिया में नाम कमा रही है. झारखंड में मोंटफोर्ट धर्म समाज द्वारा संचालित 18 शिक्षण संस्थाएं संचालित होती हैं. दुनिया के 34 देशों में लगभग 150 संस्थाएं कार्यरत हैं.

विद्यालय में बच्चों को नियमित अंतराल में पानी पीने के लिए प्रोत्साहित करना है उद्देश्य

सरकारी स्कूलों में लगेगा अब वाटर बेल

संवाददाता। रांची

बढ़ती गर्मी को देखते राज्य सरकार विद्यालयों में वाटर बेल शुरू करने जा रही है. इसमें सरकारी विद्यालयों में क्लास के बीच पानी पीने के लिए वाटर बेल लगेगा. यह बेल स्कूल संचालन अवधि में दो बार लगेगा. इसमें बच्चे पानी पी सकेंगे. स्कूली शिक्षा और साक्षरता विभाग के प्रभारी सचिव उमाशंकर सिंह ने सभी जिलों को इसके निर्देश जारी कर दिए हैं. शिक्षा सचिव ने स्पष्ट किया है कि इस साल झारखंड राज्य में अत्यधिक गर्मी का सामना सभी विद्यालयों को करना पड़ रहा है. इससे सबसे ज्यादा बच्चे और शिक्षक प्रभावित हो रहे हैं. आने वाले कुछ दिनों में तापमान में और वृद्धि की आशंका है. इसके कारण डिहाइड्रेशन का भी खतरा रहता है. भीषण गर्मी को ध्यान में रखते हुए विद्यालयों के पठन-पाठन के समय में परिवर्तन किया गया है. साथ ही, राज्य के सभी सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं को गर्मी के इस मौसम में तेज धूप और लू के प्रतिकूल प्रभाव से बचाव का उपाय किया जाना अनिवार्य है. प्रभारी सचिव ने लिखा है कि इस चुनौती का सामना करने के लिए यूनिसेफ द्वारा 'वाटर बेल की व्यवस्था का सुझाव दिया गया है.

इसमें स्वच्छ पानी की उपयोगिता को प्रोत्साहित करने, विद्यालय में सभी बच्चों को नियमित अंतराल में स्वच्छ पानी पीने के लिए प्रोत्साहित करना, बच्चों को डिहाइड्रेशन से बचने का विकल्प देना शामिल है. यह आवश्यक है कि बच्चों में स्वच्छ पानी पीने की आदत को और अधिक विकसित किया जाए. ये गतिविधियां सुनिश्चित की जाए. इसके लिए सभी विद्यालयों में घंटी बजाकर बच्चों को स्वच्छ पानी पीने के लिए प्रेरित किया जाए. यह कार्य प्रातः 8.30 बजे और पुनः 10.30 बजे किया जाए. बेल बजने के साथ ही विद्यालय के सभी बच्चे कतार में लगकर स्वच्छ पानी पीएंगे. इसके लिए सभी कक्षा-कक्ष के पास स्वच्छ पानी का घड़ा, स्वच्छ पानी, टीसनी, पानी का ग्लास आदि की व्यवस्था विद्यालय प्रबंधन द्वारा किया जाएगा. यह सुनिश्चित किया जाए कि सभी बच्चे आवश्यक रूप से विद्यालय अवधि में कम से कम एक ग्लास स्वच्छ पानी दो बार अवश्य पीयें. वाटर बेल का उद्देश्य है कि सभी बच्चे व शिक्षकों को निर्धारित समय पर स्वच्छ पानी पीने के लिए याद दिलाया जाए. सभी विद्यालयों में इसका पालन हो. सभी विद्यालयों में जहां विद्युत की सुविधा उपलब्ध है, उसे तत्काल क्रियाशील बनाया जाय. वर्ग कक्षों में उपलब्ध पंखों को चालू हालत में रखना सुनिश्चित किया जाए.

पदाधिकारी स्कूल में विद्युत की सुविधा को कियाशील बनाना सुनिश्चित करेंगे

बताया गया कि इसके लिए जिला व प्रखंड के सभी कर्मी और पदाधिकारी विद्यालयों का अनुश्रवण कर विद्युत की सुविधा को कियाशील बनाना सुनिश्चित करेंगे. निर्देश के अनुसार सभी विद्यालयों में शुद्ध और पर्याप्त पेयजल की व्यवस्था सुनिश्चित किया जाय. बच्चों के लिए मिट्टी के घड़े या अन्य कोई अनुकूल पात्र की व्यवस्था विद्यालय विकास अनुदान से करना सुनिश्चित किया जाय. गर्मी में हिट स्ट्रोक से बचाव के लिए ज्यादा स्वच्छ पानी पीने के लिए प्रेरित किया जाय. गर्म हवाओं के कारण स्वास्थ्य पर मौसम के दुष्प्रभाव से बचने के लिए नींबू-पानी, नमक-चीनी का घोल, चना-गुड़, कच्चे आम सत्तु का शर्बत आदि का सेवन करने के लिए प्रेरित किया जाय. मध्याह्न भोजन में भी इसकी व्यवस्था सुनिश्चित किया जाय. मध्याहन भोजन छांव में कराना सुनिश्चित किया जाय. गर्म हवाओं के कारण स्वास्थ्य पर मौसम के दुष्प्रभाव से बचने के लिए ओआरएस के घोल की व्यवस्था विद्यालयों में सुनिश्चित किया जाय. ओआरएस का पैकेट निकटतम सरकारी अस्पताल, स्वास्थ्य उप-केन्द्र, एएनएम सहिया के पास निःशुल्क उपलब्ध है. बच्चों को गर्मी के मौसम में मसालेदार, तेलीय व उच्च नमक वाले पदार्थों के सेवन नहीं करने की सलाह दी जाय. बच्चों को गर्मी में खाली पैर नहीं रहने के लिए निर्देशित करें. तेज धूप में किसी भी प्रकार का खेल का आयोजन या कार्यक्रम नहीं किया जाय. जरूरत के अनुसार अधिक से अधिक इंडोर गेम का आयोजन किया जाए.

कुल्लियतुल में अंग्रेजी व हिंदी की हो रही पढ़ाई

रांची। रांची जिला में भी एक ऐसा मदरसा है जहां छात्राओं को उर्दू, अरबी, फारसी के साथ हिंदी, इंग्लिश, साइंस और कंप्यूटर समेत तकनीकी शिक्षा की अच्छी तालीम दी जा रही है. बच्चियों को अंग्रेजी बोलना भी सिखाया जा रहा है. कुल्लियतुल बनात परहेपाट के निदेशक सह प्राचार्या मौलाना अब्दुल्लाह नदवी ने कहा कि कुल्लियतुल बनात परहेपाट बहुत कम समय में अपनी एक अलग पहचान बनाया है. मदरसा कुल्लियतुल बनात परहेपाट, रातु रांची में स्थित एक बड़ा एदारा है, जो रांची से 18 किलोमीटर दूर है. यह मदरसा केवल लड़कियों के लिए है, जहां लड़कियों को इस्लामी शिक्षा के साथ-साथ आधुनिक शिक्षा भी बड़े पैमाने पर और उच्च स्तर की दी जा रही है. मदरसे की स्थापना 1999 में पांच क्लास रूम से हुई थी. आरंभिक काल में हॉस्टल में 40 बच्चे रहते थे. वहीं इस समय 550 बच्चियां हॉस्टल में व 150 बच्ची घर से आकर शिक्षा प्राप्त कर रही हैं. कुल 700 बच्चे शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं. मदरसा

में ईद की छुट्टी के बाद नए सेशन के लिए दाखिला शुरू हो गया है. इस वर्ष हिफ्ज विभाग में भी दाखिला लिया जा रहा है. जो बच्ची हिफज करना चाहती हैं वह इसमें दाखिला ले सकती हैं. अब तक 200 से अधिक बच्चियों ने दाखिला लिया है. यहां इस्लामी शिक्षा के साथ-साथ बच्चियों को जैक बोर्ड के सिलेबस पढ़ाये जाते हैं. बच्चियां यहां आलिमा के साथ मैट्रिक भी करती हैं.

बच्चों को मिला योगा व कराटे का प्रशिक्षण

रांची। झारखंड प्रांतीय मारवाड़ी युवा मंच के कार्यक्रम, हर बच्चे का स्वस्थ सप्ताह, के पांच दिवसीय कार्यक्रम के तहत शनिवार को पांचवें दिन कार्य का समापन राणी सती विद्यालय में किया गया. शाखा ने राणी सती विद्यालय में बच्चों को प्रशिक्षण देने के लिए योगा शिक्षक को बुलाया. उन्होंने बच्चों को योगा सिखाया और रोजाना योग से क्या फायदा होता है, इसकी जानकारी बच्चों और शिक्षकों को दी. उन्होंने कहा कि रोजाना योग करने से हमारे शरीर और मस्तिष्क का विकास होता है. इसके अलावा अपनी सुरक्षा स्वयं करने के लिए कराटे का प्रशिक्षण भी दिया गया. इस कार्य में विद्यालय प्रबंधक ने भी पूरा साथ दिया. जिसके लिए शाखा उन्हें धन्यवाद देती है. साथ ही उन्होंने कहा कि बच्चों और बड़ों सभी को रोज़ाना योग करना चाहिए. हमारे

इस कार्य की सराहना और प्रशंसा भी की. कार्य को सफल बनाने में शाखा के सदस्यों का भरपूर साथ रहा. कार्यक्रम में शाखा अध्यक्ष विनीता सिंघानिया और शाखा की बहनें शुभा अग्रवाल, सरिता व दीपिका मोतिका उपस्थित थे.

न्यूज अपडेट

बूटी क्रिकेट क्लब की पलक एनसीए में चयनित

रांची। बूटी क्रिकेट क्लब की खिलाड़ी कुमारी पलक का चयन (एनसीए) नेशनल क्रिकेट अकादामी कैंप में हुआ है. कुमारी पलक ऑलराउंडर खिलाड़ी है. वह बायें हाथ की बल्लेबाज और दायें हाथ की तेज गेंदबाज है. हाल ही में कुमारी पलक का चयन स्टेट अंडर-15 टीम में हुआ था. पलक के अच्छे प्रदर्शन को देखते हुए उसका चयन एनसीए में किया गया है. एनसीए कैंप आंध्रा के अनंतपुर में 29 अप्रैल से 23 मई तक चलेगा.

क्वार्टरफाइनल में पहुंची चॉकबॉल की दोनों टीम

राची। पुलिस डीएवी पब्लिक स्कूल कैम्पस जालंधर पंजाब में 13वीं सब जूनियर एवं 14वीं जूनियर राष्ट्रीय चॉकबॉल प्रतियोगिता का आयोजन 26 से 28 अप्रैल तक हो रहा है. इसमें झारखंड राज्य बालक बालिका चॉकबॉल जूनियर टीम भाग ले रही है. जिसमें दोनों वर्गों में क्वार्टरफाइनल में झारखंड की टीम ने जगह बनाई. इससे पहले अपने पूल लीग मैच में बालक वर्ग में आंध्रप्रदेश को 19-05 से और गुजरात को 16-13 से पराजित कर एवं पंजाब से कड़े मुकाबले में 14-13 पराजित हो कर अपने पूल में रनर रही. साथ ही क्वार्टर फाइनल में जगह बनाई. इसी तरह बालिका वर्ग में पूल मैच में महाराष्ट्र को 12-08 से एवं राजस्थान को 14-06 से पराजित कर अपने पूल विजेता रही.

संत जेवियर्स में लैंगिक संवेदीकरण पर कार्यशाला

रांची। संत जेवियर कॉलेज रांची के आईक्यूएसी, आईसीसीएसएच व महिला प्रकोष्ठ की ओर से शनिवार को लैंगिक संवेदीकरण पर कार्यशाला का आयोजन किया गया. कार्यक्रम में बतौर प्रशिक्षक प्यारा केरकेट्टा फाउंडेशन की संस्थापक वंदना टेटे और ध्वनि फाउंडेशन की राज्य प्रशिक्षक रेशमा सिंह मौजूद थीं. अध्यक्षता प्राचार्य डॉ फादर नाबोर लकड़ा ने की. कार्यशाला का उद्देश्य लैंगिक समानता से जुड़ी चिंताओं के बारे में जागरुकता बढ़ाना और संवेदनशीलता लाना था. मौके पर कॉलेज के कुछ विद्यार्थियों को जेंडर चैंपियन बनाया गया. उन्हें लिंग संबंधी समस्याओं के विषय में जागरुकता फैलाने की ज़िम्मेदारी दी गई.

लेजर रन प्रतियोगिता के लिए झारखंड टीम रवाना

रांची। झारखंड की 28 सदस्यीय बालक/बालिका टीम आठवीं राष्ट्रीय लेजर रन प्रतियोगिता में भाग लेने जमशेदपुर से अमरावती रवाना हो गई. यह प्रतियोगिता मॉडर्न पेंटाथलॉन फेडरेशन ऑफ इंडिया और महाराष्ट्र पेंटाथलॉन संघ के संयुक्त तत्वावधान में 29 अप्रैल तक अमरावती में होगी. रवाना हुई टीम में सीनियर पुरुष टीम में नंदलाल राय, विराट कुमार राय, सीनियर महिला टीम में शोभा महतो हैं. वहीं अंडर-19 बालक/बालिका टीम में अभिषेक कुमार हाजरी, तनु कुमारी, अन्नू कुमारी हैं. अंडर-17 बालक/बालिका टीम में बिट्टू कुमार यादव, आदित्य कुमार, किरण कुमारी हैं. अंडर-15 बालक/बालिका टीम में सुधांशु राज शामिल हैं.

मेदांता के जांच शिविर में 150 लोगों की जांच

रांची। मेदांता हॉस्पिटल रांची ने बिरसा मुंडा हवाई अड्डे पर विश्व पायलट दिवस के मौके पर स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया. इस शिविर में करीब 150 लोगों के स्वास्थ्य की जांच की गई. जिनमें पायलट, एयर होस्टेस और ग्राउंड स्टाफ शामिल थे. डॉ अमूल्या स्वाति (प्रसूति और स्त्री रोग), डॉ रवि रौशन (दांत रोग विशेषज्ञ), अलका आनंद (आहार विशेषज्ञ), डॉ प्रतिमा (सामान्य चिकित्सक) आदि ने इस अवसर पर विभिन्न विभागों में जांच और उपचार प्रदान किया. स्वास्थ्य शिविर के माध्यम से मेदांता हॉस्पिटल ने हवाई यातायात समुदाय के सदस्यों की सेहत व सुरक्षा को बढ़ावा देने का संकल्प दिखाया है.

बीआईटी के विद्यार्थियों का औद्योगिक भ्रमण

रांची। बिरला प्रौद्योगिकी संस्थान (बीआईटी), मेसरा के ट्रेनिंग एंड प्लेसमेंट प्रकोष्ठ की ओर से शनिवार को छठे सेमेस्टर के विद्यार्थियों को एमआरएस बियरिंग लिमिटेड, रातू में औद्योगिक भ्रमण कराया गया. इसके अंतर्गत ऑटोमोबाइल इंजीनियरिंग, मैकेनिकल इंजीनियरिंग, इलेक्ट्रिकल एंड इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग, मैकेनिकल इंजीनियरिंग प्रोडक्शन, कंप्यूटर इंजीनियरिंग के 40 विद्यार्थियों के साथ संकाय सदस्य डॉ सतीश कुमार, डॉ त्रिलोक पराशर, मनोज कुमार व मृदुला पाठक शामिल थे. प्लेसमेंट सेल के संयोजक डॉ सतीश कुमार ने बताया कि किताबी ज्ञान के साथ विद्यार्थियों को औद्योगिक माहौल से अवगत कराना आज की प्राथमिकता है.

आजसू कार्यकर्ताओं ने किया वीसी का घेराव

रांची। आजसू कार्यकर्ताओं ने शनिवार को रांची विश्वविद्यालय में कुलपति डॉ अजीत सिन्हा का घेराव किया. आजसू कार्यकर्ताओं ने स्नातकोत्तर के परीक्षा शुल्क बढ़ोतरी वापस लेने की मांग करते हुए घेराव किया. अभिषेक शुक्ला ने कहा कि 5 मार्च को विरोध के बाद आरयू प्रशासन ने शुल्क काम करने की अधिसूचना जारी की थी, लेकिन इसे बढ़ा दिया गया. कहा कि जब से परीक्षा कार्य एनसीसीएफ ने संभाला है तभी से परीक्षा शुल्क में 300 रुपये बढ़ा दिया गया है. पूर्व में 600 रुपये परीक्षा शुल्क देना पड़ता था. इस दौरान आजसू ने शुल्क कम नहीं करने पर विवि में तालाबंदी की चेतावनी दी.

मोमिन कॉन्फ्रेंस रांची जिला की नई कमेटी हुई घोषित

संवाददाता। रांची

प्रदेश मोमिन कांफ्रेंस रांची जिला की बैठक जिला अध्यक्ष शमीम अख्तर आजाद की अध्यक्षता में शनिवार को अंजुमन प्लाजा सभागार में हुई. इस दौरान मोमिन कांफ्रेंस रांची जिला की नई कमेटी की घोषणा की गई. मौके पर जिला अध्यक्ष शमीम अख्तर आजाद अधिसूचना जारी करते हुए नई कमिटी की घोषणा की. जारी अधिसूचना के अनुसार जफर इमाम अंसारी को प्रधान महासचिव एवं अब्दुल गफ्फार अंसारी, दिलरुबा अंसारी,फिरोज आलम, जाकिर हुसैन, शमीम अंसारी, असलम शेख, अब्दुल्लाह हबीब, मो सामी अंसारी, ताजुद्दीन अंसारी, मो तौहीद, प्रो गफ्फार,परवेज अंसारी, अशरफ अंसारी, मसीउद्दीन अंसारी, सयुफ अंसारी, शफीउल्लाह अंसारी, शकील अंसारी को उपाध्यक्ष, मियां जान, कय्यूम फराज,यासीन अंसारी, आजाद अंसारी, हफीजुर्रहमान अंसारी,अनिसुल रहमान, महबूब अंसारी, रिजवान अंसारी, अशफाक अंसारी, इसमाईल अंसारी, इमरान रजा अंसारी, ऐनुल अंसारी, शफीक अंसारी, कलीम अंसारी, कय्यूम अंसारी, सत्तार अंसारी, सज्जाद अंसारी को महासचिव, शमीम अंसारी, अब्दुल इमाम अंसारी, सलीम अंसारी, महीबुल ओहदार,मो जावेद अख्तर, संगठन सचिव, अख्तर अंसारी कोषाध्य, ईमरान अंसारी मीडिया प्रभारी बनाये गये.

आरएमसी में टीकाकरण कार्यक्रम पर हुई बैठक

रांची। रांची। रांची नगर निगम सभागार में 15वें वित्त आयोग द्वारा संचालित अर्बन हेल्थ एवं वेलनेस सेंटर में टीकाकरण कार्यक्रम शुरू करने के निमित यूएसएआईडी एवं जेएसआई की ओर से सहायक लोक स्वास्थ्य पदिाधकारी डॉ आनंद शेखर झा की अध्यक्षता में 24 यूएचडब्लूसी केंद्रों पर कार्यरत चिकित्सक एवं स्टाफ नर्सों को प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया. प्रशिक्षण कार्यक्रम में रिम्स के एसोसिएट प्रो डॉ देवेश कुमार द्वारा टीकाकरण की विस्तृत जानकारी दी गई. कार्यक्रम में वैक्सीन क रख रखाव एवं इसके उपयोग की जानकारी दी गई. नोडल पदाधिकारी डॉ रंजीत प्रसाद ने बताया कि सभी यूपीएचसी, यूसीएचसी, यूएचडब्लूसी तथा अटल क्लीनिक के लिये जनसंख्या एवं क्षेत्र सीमा तय है. लेकिन सीमा से बाहर के मरीजों को जरूरत अनुसार टीकारकरण एवं स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध कराना है. प्रशिक्षण में सभी केंद्रों पर नियमित रूप से भौतिक एवं वीडियों कॉलिंग के माध्यम से निरीक्षण किया जाये.

प्रभु यीशु पुरोहित को लोगों के बीच में से ही चुनते हैं : बिशप थियोडोर

संवाददाता। रांची

डाल्टनगंज के नगरउटारी पल्ली के गोविंद कुजूर ने शनिवार को अपना पुरोहित अभिषेक ग्रहण किया. इस समारोह में मुख्य अनुष्ठातक बिशप थियोडोर मस्करेन्ह थे. डाल्टनगंज धर्मप्रांत के बिशप थियोडोर मस्करेन्ह की अगुवाई में मिशा बलिदान संपन्न हुआ. उन्होंने कहा कि यह नगरउटारी पल्लीवासियों के लिए खुशी की बात है कि आज गोविंद कुजूर को यीशु ने पुरोहित अभिषेक के लिए चुना है.

उन्होंने यह भी कहा कि प्रभु यीशु लोगों के बीच अपना प्रतिनिधि व पुरोहित बनाने के लिए लोगों को बीच में से बुलाते हैं. उन्होंने बाइबल से कहा कि जब प्रभु यीशु ने समाचार सुनने के लिए यशायाह को बुलाया तो वह भी डर गया. क्योंकि उसके ऊपर भी कमजोरी हावी थी. पुरोहित बनने के लिए प्रभु यीशु ने हमेशा कमजोर

लोगों को ही चुना है. इसलिए पुरोहित को नहीं घबराना है. निडर होकर लोगों को समाचार सुनना है. प्रभु यीशु पुरोहित को विशेष कार्य करने के लिए और मिशा बलिदान चढ़ाने के लिए लोगों को चुनता है. गोविंद कुजूर के लिए आज बहुत बड़ा दिन है. आज गोविंद कुजूर अपना पुरोहित अभिषेक ग्रहण कर लिये हैं. भले ही गोविंद कमजोर परिवार से आते हैं पर उन्हें यीशु ने चुना हैं. पुरोहित बनना एक बड़ी जिम्मेदारी है. क्योंकि एक पुरोहित प्रभु का प्रतिनिधि बनकर लोगों के बीच में आते हैं समाचार सुनने के लिए. प्रभु के वचनों को लोगों तक पहुंचाने के लिए अपने आप को प्रभु के लिए समर्पित करते हैं. यह एक बहुत बड़ा वरदान है. मौके पर नगरउटारी पल्ली में पुरोहित अभिषेक के लिए विश्वासी उपस्थित थे. साथ ही कोगरीकेशन के सुपीरियर और डाल्टनगंज धर्मप्रांत के फादर संजय और अन्य पुरोहितगण उपस्थित थे.

महंगाई

राजधानी में आलू की कीमत में प्रति किलो 5 रुपये तक की एकबारगी बढ़ोतरी हुई

अब आम आदमी की जेब पर पड़ रही है आलू की मार

संवाददाता। रांची

राजधानी में आलू की कीमत में प्रति किलो 5 रुपए तक की एकबारगी बढ़ोतरी हुई है. इसी प्रकार प्याज की कीमत में लगातार इजाफा देखा जा रहा है. खुदरा बाजार में आलू 30-35 रुपए किलो बिक रहा है. जिससे आम आदमी के किचन से आलू का जायका गायब हो गया है. इसका असर बजट पर भी पड़ रहा है. आलू की कीमत को लेकर मंडी में चर्चाएं भी जोरो पर हैं। पंडारा बाजार आलू प्याज समिति के सचिव राजेश कुमार ने बताया कि शनिवार को थोक बाजार में सफेद आलू 20 से 21 रुपए और लाल आलू 23 से 24 रुपए किलो बिका है.

राहत की अभी उम्मीद नहीं

आलू की कीमत आने वाले दिनों में तेजी से बढ़ेगी. व्यापारियों ने बताया कि अभी कीमत में कमी नहीं होगी. पंजाब, उत्तर प्रदेश, बंगाल, बिहार से आलू की खेप जैसे ही रांची पहुंचेगी. इसके बाद ही राहत की उम्मीद है. थोक व्यापारियों ने बताया कि चुनाव के बाद ही आलू की कीमत में कमी हो सकती है. तबतक कीमत में इजाफा होगा.

क्यों बढ़ी आलू की कीमत : उन्होंने बताया कि आलू का उत्पादन कम होने की वजह से आलू की कीमत में इजाफा हुआ हैं. स्टोर से महंगे कीमत पर ही आलू रांची की मंडियों तक पहुंच रही है. साथ ही रांची के थोक बाजार पंडरा में चुनाव आयोग द्वारा कमरे ले लिए जाने पर भंडारण की जगह कम हुई है. जिससे स्टोर में मांग के अनुसार आलू की सप्लाई नहीं हो पा रही हैं. इधर, खुदरा बाजार में आलू आम आदमी के किचन से बाहर चला गया हैं.

थोक बाजार में 20 रुपए किलो

शनिवार को थोक मंडी पंडरा बाजार में प्याज 20 रुपये किलो बिका. व्यापारियों के अनुसार प्याज की कीमत में धीरे-धीरे उछाल देखा जा सकता है. वहीं खुदरा बाजार में प्याज शनिवार को 30 से 35 रुपए किलो बिका है. प्याज की कीमत आने वाले दिनों में काफी अधिक नहीं बढ़ने वाली है. हालांकि आलू और प्याज की कीमत में अधिक इजाफा होता है तो इसका असर चुनाव पर भी पड़ सकता हैं.

गर्मी में नींबू भी कर रहा अब लोगों को परेशान

राजधानी में बढ़ती गर्मी के कारण नींबू की कीमत में तेजी से इजाफा हुआ है. दस दिन में नींबू की कीमत दोगुनी बढ़ गई है. खुदरा बाजार में नींबू 20 रुपए में 3 पीस बिक रहा है. जबकि एक पीस नींबू लेने पर 10 रुपए चुकाने पड़ रहे है. आने वाले दिनों में नीबू की कीमत में ओर भी बढ़ोतरी होगी.

बैसाखी पर विशेष दीवान सजाया गया

संवाददाता। रांची

गुरुद्वारा श्री गुरु नानक सत्संग सभा कृष्णा नगर कॉलोनी में शनिवार को बैसाखी के उपलक्ष में विशेष दीवान सजाया गया. दीवान की शुरुआत रात 8:00 बजे स्त्री सत्संग सभा की शीतल मुंजाल द्वारा "देह शिवा वर मोहे ईहे शुभ करमन ते कबहूं न टरों....." शबद गायन से हुई. तत्पश्चात हजूरी रागी जत्था भाई महिपाल सिंह जी द्वारा "खालसा अकाल पुरख की फौज परगटयो खालसा परमात्म की मौज..." एवं " पीओ पाहुल खंड धार होये जनम सुहेला, वाहो वाहो गोबिंद सिंह आपे गुर चेला..." शबद गायन किया गया. दीवान में शिरकत करने विशेष तौर से टांडा ,जालंधर से पहुंचे सिख पंथ के महान कीर्तनी जत्था भाई नवप्रीत सिंह जी एवं बीवी तरणप्रीत कौर ने "सब परिवार चढ़ाया बेड़े दीन दयाल भरोसे तेरे..." एवं " कर मिन्नत कर जोदड़ी मैं प्रभ मिलणे का चाउ..." तथा " रैणी रहे सो सिख मेरा ओ साहेब मैं उसका चेरा..." शब्द गायन कर श्रद्धालुओं को गुरबाणी से जोड़ा. अनंद साहिब जी के पाठ, अरदास, हुकुम वानामा एवं कढ़ाह प्रसाद वितरण के साथ विशेष दीवान की समाप्ति रात 11:45 बजे हुई. मंच संचालन मनीष मिढ़ा ने किया. सभा द्वारा इस मौके पर गुरु का अटूट लंगर भी चलाया गया. सत्संग सभा के सचिव अर्जुन देव मिढ़ा ने बताया कि कल का दीवान सुबह दस बजे से दोपहर तीन बजे तक सजाया जाएगा. इस मौके पर गुरुनानक सेवक जत्था द्वारा रक्तदान शिविर का भी आयोजन किया गया है. उन्होंने सभी से मानवता का धर्म निभाते हुए अधिक से अधिक रक्तदान करने की अपील की है. सत्संग सभा के मीडिया प्रभारी नरेश पपनेजा ने जानकारी दी कि दीवान में शामिल होने भाई नवप्रीत सिंह जी एवं बीवी तरणप्रीत कौर जी अपने जत्थे के साथ राजधानी एक्सप्रेस से आज सुबह 8.25 बजे रांची रेलवे स्टेशन पहुंचे. जहां गुरुनानक सेवक जत्था के सदस्यों द्वारा स्वागत किया गया.

सत्संग सभा

- अनंद साहिब जी के पाठ के साथ दीवान की समाप्ति हुई
- दीवान की शुरुआत रात 8 बजे स्त्री सत्संग सभा से हुई

ब्रीफ खबरें

ट्रांसफार्मर खराब रहने से ग्रामीण परेशान

सिल्ली/मुरी। सिल्ली प्रखंड क्षेत्र के सिल्ली पंचायत के कड़ाकाटा गांव में एक माह से ट्रांसफार्मर खराब रहने के कारण उपभोक्ताओं को परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है. खास करके इस गर्मी में रात के अंधेरे में कई प्रकार की परेशानी झेलने को विवश होना पड़ रहा है. इस टोले में 25 केवी का ट्रांसफर लगाया गया था, जो एक महीने से खराब पड़ा. इसके कारण लोग अंधेरे में रहने को विवश है. आगे बताया कि ट्रांसफार्मर से लगभग 50 घर के उपभोक्ताओं को बिजली का लाभ मिल रहा था, जहां लो वोल्टेज की समस्या से भी लोगों को परेशानी उठानी पड़ रही थी. स्थानीय उपभोक्ताओं ने बताया कि इसकी जानकारी विधायक को दूरभाष पर दी गई है. साथ ही ग्रामीणों ने इसकी जानकारी विभाग को भी दी है.

अनिता इंटर कॉलेज में स्लो फूड कार्यक्रम

रांची। आदिवासी खानपान को बढ़ावा देने और उसे अपनी दैनिक जीवन में शामिल करने के लिए अजम एम्बा की ओर से स्लो फूड कार्यक्रम का आयोजन किया गया. रांची के कांके स्थित अनिता इंटर कॉलेज में स्लो फूड कार्यक्रम किया गया. इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि शिल्पी नेहा तिर्की थीं. उन्होंने कहा कि हमें अपने खानपान में पारंपरिक खानपान का इस्तेमाल करना चाहिए. एग्रीकल्चर के सीईओ बिजनेस प्रमोशन डेवलपमेंट सोसाइटी ने कहा कि नेचुरल लोकल खान-पान में पूर्ण रूप से पोषक तत्व रहता है.

चुनाव कार्यों को लेकर किया गया पूर्वाभ्यास

रांची। रांची लोकसभा क्षेत्र के लिए अधिसूचना 29 अप्रैल को जारी होगी. इससे पहले जिला निर्वाचन पदाधिकारी राहुल कुमार सिन्हा ने शनिवार को तैयारियों की समीक्षा की. निर्वाची पदाधिकारी कक्ष में संपादित किये जाने वाले कार्य को लेकर पूर्वाभ्यास किया गया. प्रतिनियुक्त पदाधिकारी एवं दंडाधिकारियों को 29 अप्रैल से 9 मई तक प्रतिनियुक्ति स्थल पर सुबह 9 बजे से योगदान सुनिश्चित करने का निर्देश दिया गया है, विधि व्यवस्था व शांति व्यवस्था संधारण के लिए अपने कर्तव्यों का निर्वहन सुनिश्चित करने को कहा गया है.

स्वरोजगार शुरू करें केनरा बैंक देगा लोन

सिल्ली/मुरी। श्री धर्मस्थला मंजूनाथेश्वर शिक्षण ट्रस्ट एवं केनरा बैंक द्वारा संचालित रूडसेट संस्थान सिल्ली में एक दिवसीय ओरिएंटेशन ट्रेनिंग प्रोग्राम का उद्घाटन दीप मुख्य अतिथि संजय कुमार मिश्रा, डिविजनल जेनरल मैनेजर केनरा बैंक सर्कल आफिस रांची, कारोलस तिरु डिविजनल मैनेजर रांची, डिस्ट्रिक्ट प्रोग्राम मैनेजर, प्रवीन कुमार मिश्रा, जेएसएलपीएस रांची द्वारा किया गया. इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में 13 बीपीएम एवं 33 प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया. अतिथि ने यह संदेश दिया कि केनरा बैंक केन- एंजल बचत खाता खोलने पर महिलाओं के लिए बीमा की सुविधा फ्री है, जिसमे 3 लाख से लेकर 8 लाख तक का रिस्क कवर किया जाता है. इसका लाभ हमारे ग्रामीण क्षेत्रों की सभी महिलाएं उठा सकती हैं. आप सभी लोग आत्मविश्वास के साथ स्वरोजगार शुरू करें, केनरा बैंक लोन भी देने का काम करेगा. सुब्रतो नायक केनरा बैंक शाखा प्रबंधक सिल्ली ने कहा कि बैंक हमेशा आप के साथ है. डीपीएम प्रवीन मिश्रा ने कहा कि हमारी महिला समिति की सभी दीदी प्रशिक्षण लेकर अपना स्वरोजगार स्थापित करें.

रांची से राजग प्रत्याशी ने सिल्ली विस क्षेत्र के बसंतपुर, दओवआड़ू, अड़ाल नवाडीह, घाघरा, पतरातू में किया जनसंपर्क

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने कार्यकाल में देश का गौरव बढ़ाया : संजय सेठ

संवाददाता। सिल्ली/मुरी

रांची के सांसद संजय सेठ ने शनिवार को सिल्ली विधानसभा के विभिन्न क्षेत्र बसंतपुर, दओवआड़, अड़ाल नवाडीह, घाघरा, पतरातू में जनसंपर्क अभियान चलाया. इस दौरान सेठ ने कहा कि नरेंद्र मोदी ने अपने कार्यकाल में पांच सबसे बड़े असंभव कार्य को संभव कर दिखाया. स्वच्छता अभियान, तीन तलाक, राम मंदिर का निर्माण, सर्जिकल स्ट्राइक, धारा 370 समाप्त करने जैस पांच असंभव कार्य को नरेंद्र मोदी ने संभव कर दिखाया है. यह उनकी इच्छा शक्ति का प्रतीक है. प्रधानमंत्री मोदी के संकल्प और देश के लोगों के साथ देने के चलते आज भारत के हर गांव में शौचालय, हर शहर, गांव, गली और चौराहे हमें स्वच्छ नजर आते हैं. जम्मू और कश्मीर से अनुच्छेद 370 का हटाकर जम्मू और कश्मीर की जनता को 70 साल की जकड़न मुक्त कराया. 5 अगस्त 2019 को मोदी सरकार ने कश्मीर को अनुच्छेद 370 से मुक्ति दिला दी. लद्दाख को एक अलग केंद्र शासित राज्य घोषित किया. इससे कश्मीरी पंडितों को ही नहीं बल्कि राज्य के हर नागरिक को अब केंद्र सरकार की लाभकारी योजनाओं का भी फायदा मिलने लगा, जिससे कई सालों तक कश्मीर के लोगों को वंचित रखा गया था. इसी तरह राम मंदिर का निर्माण हुआ.

ओरमांझी मंडल से हजारों कार्यकर्ता शामिल होंगे संजय सेठ के नामांकन कार्यक्रम में

भाजपा व्यक्ति विशेष नहीं, बल्कि कार्यकर्ताओं की पार्टी है : आदित्य प्रसाद साहू

ओरमांझी। भारतीय जनता पार्टी ओरमांझी मंडल अध्यक्ष दिलीप मेहता की अध्यक्षता में सरस्वती शिशु विद्या मंदिर में बैठक रखी गई, जिसमें निर्णय लिया गया कि रांची लोकसभा प्रत्याशी सह वर्तमान सांसद संजय सेठ 2 मई को नामांकन दाखिल करेंगे. इसमें ओरमांझी मंडल से हजारों की संख्या में कार्यकर्ता शामिल होंगे. बैठक में मुख्य रूप से प्रदेश महामंत्री सह राज्य सभा सांसद आदित्य प्रसाद साहू ने कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि भारतीय जनता पार्टी व्यक्ति विशेष कि पार्टी नहीं हैं, बल्की कार्यकर्ताओं की पार्टी है. इस पार्टी में कार्यकर्ता लोभ, लालच, त्याग कर, देश सेवा की भावना से कार्य करता है. नरेंद्र मोदी का पूरा देश परिवार है. उन्होंने 10 साल में गरीबों के लिए कार्य किए हैं, भ्रष्टाचार मुक्त शासन रहा है. वहीं कांग्रेस सरकार ने 62 वर्षों में घोटाले पर घोटाले एवं तिजौरी भरने का कार्य किया. मोदी ने मुस्लिम समाज के लिए तीन तलाक का कानून लाकर कितनी बहन बेटियों का जीवन सुरक्षित किया. उन्होंने 370 धारा खत्म कर जम्मू कश्मीर को अभिन्न अंग बनाया.

ये नेता व कार्यकर्ता बैठक में रहे मौजूद

बैठक में मुख्य रूप से प्रदेश उपाध्यक्ष किसान मोर्चा अमरनाथ चौधरी, पूर्व विधायक सह प्रभारी रामकुमार पाहन, जिला अध्यक्ष सुरेंद्र महतो उपाध्यक्ष मानकी राजेंद्र साही ओरमांझी मंडल प्रभारी नशीबलाल महतो, जलेंद्र प्रसाद, पार्षद रश्मि खलखो, प्रमुख अनुपमा देवी, दीपा चौरसिया, महामंत्री अलखनाथ महतो, शशि भूषण कुमार, बालक पाहन, अरविंद बबलू, राजधाम साहू, सुनील कुमार, राजेश गुप्ता, राजकिशोर, राजनाथ उरांव, शशि मेहता, समुंदर पाहन, लालू साहू, मुखिया रमेश बेदिया, किरण देवी कविता देवी, मणि देवी लक्ष्मण साहू, रामकिंकर पाहन, रामकुमार मुंडा, राम इकबाल तिवारी, सोनालाल महतो, सोनाराम मुंडा मीना देवी, सत्यनारायण तिवारी, उमाशंकर साहू, बालक महतो, सिकेंद्र महतो, अशेसर लाल गुप्ता, चतुर साहू, भीम मुंडा, कामेश्वर महतो, अमित राज आदि उपस्थित रहे.

इंडिया गठबंधन को जिताने के लिए आदिवासियों ने भरी हुंकार

प्रधानमंत्री मोदी ने सिर्फ अपने मित्रों को फायदा पहुंचाया : बंधु

संवाददाता। रांची

पूर्व मंत्री, झारखंड सरकार की समन्वय समिति के सदस्य और झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमेटी के कार्यकारी अध्यक्ष बंधु तिर्की ने कहा कि कांग्रेसी ही आदिवासी पहचान, सम्मान और सही मायने में विकास को बरकरार रख सकती है. तिर्की ने कहा कि आज देश में आदिवासी अस्मिता के साथ ही आदिवासी पहचान की स्थिति कायम रखने की पृष्ठभूमि में कांग्रेस का सबसे महत्वपूर्ण योगदान है. जिसने न केवल वन संरक्षण अधिनियम, वन अधिकार कानून, पेसा कानून, पांचवी और छठी अनुसूची जैसे कई संवैधानिक प्रावधान किये, बल्कि जमीनी स्तर पर भी जितनी भी विकास योजनाएं संचालित है, उसमें से अधिकांश कांग्रेस की ही देन है.

बंधु तिर्की लोहरदगा लोकसभा क्षेत्र अंतर्गत मांडर विधानसभा क्षेत्र के मांडर प्रखंड के बूढाखुखरा मैदान में आयोजित एक चुनावी सभा को संबोधित कर रहे थे. उन्होंने कहा कि नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में काम कर रही केंद्र सरकार केवल आपसी भेदभाव, महंगाई, बेरोजगारी आदि को बढ़ावा देकर देश में एक ऐसा वातावरण कायम करना चाहती है जिसका फायदा केवल और केवल प्रधानमंत्री के कुछेक उद्योगपति मित्रों को हो. तिर्की ने कहा कि पीएम मोदी और भारतीय जनता पार्टी के नेताओं ने देश भर में जिस वातावरण को कायम कर दिया है, उसका खामियाजा देश के आदिवासियों, अनुसूचित जाति, अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) अल्पसंख्यकों आदि के साथ ही सभी लोगों को भुगतना पड़ रहा है. उन्होंने कहा कि राहुल गांधी के नेतृत्व पर भरोसा जताते हुये कांग्रेस को विजयी बनाएं, क्योंकि आज की लड़ाई केवल राजनीतिक नहीं बल्कि सामाजिक भी है और इसका दूरगामी प्रभाव हम सभी के भविष्य पर पड़नेवाला है.

इस अवसर पर अपने संबोधन में लोहरदगा लोकसभा क्षेत्र से कांग्रेस एवं इंडिया गठबंधन के उम्मीदवार सुखदेव भगत ने कहा कि आदिवासियों के स्वभाव में सच के लिये लड़ना है. उनके लिये यह चुनौती के साथ-साथ जीवन-मरण का प्रश्न भी है. भगत ने कहा कि आज मांडर के साथ ही लोहरदगा लोकसभा क्षेत्र में सभी लोग सच्चे मन से लड़ने को तैयार हैं. भले ही वह भाजपा का प्रत्याशी हो या उसके द्वारा खड़ा किया गया कोई नकली उम्मीदवार. भगत ने कहा कि वैसी शक्तियों को पहचानने की जरूरत है जो आदिवासियों के साथ ही अनुसूचित जाति, अन्य पिछड़ा वर्ग, अल्पसंख्यकों के साथ ही सभी लोगों के बीच दीवार खड़ी करता है.

मांडर विधायक शिल्पी नेहा तिर्की ने कहा कि आगामी लोकसभा चुनाव न केवल झारखंड बल्कि देश के ख्याल से भी बहुत चुनौतीपूर्ण और महत्वपूर्ण है. उन्होंने कहा कि वैसी धर्मनिरपेक्ष सरकार की जरूरत है जो सभी को समान नजरिये से देखे. उन्होंने कहा कि पिछले 10 साल में सभी ने वैसी जुमलेबाजी वाली सरकार देखी है जिसने केवल और केवल झूठे वायदे किये और लोगों के बीच में दीवार खड़ी की. शिल्पी ने कहा कि सरकार गठन के बाद सरना धर्म कोड को लागू करना सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में से एक है.

कांग्रेस के कार्यकारी अध्यक्ष शहजादा अनवर ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी पूरे देश में अपनी जबरदस्ती और मर्यादा विहीन राजनीतिक गुंडागर्दी का परिचय दे रही है. कभी चंडीगढ़ के मेयर चुनाव में उसके छल-प्रपंच की चर्चा होती है तो कभी वह कुछ और साज़िश रचती है. संविधान और देश आज संकट में है. सभा को मंडल अध्यक्ष संजय तिग्गा, तबारक खान, आबिद अंसारी, सरिता तिग्गा, पेतरूस खलखो, जुएल तिग्गा, बेलस तिर्की, शिवकुमार भगत, एम. तौसीफ, तौसीफ आलम, जमील मलिक, निसार अहमद आदि कांग्रेसी नेताओं ने संबोधित किया.

खास बातें

- आदिवासियों के स्वभाव में है सच के लिये लड़ना : भगत
- संविधान व देश आज संकट में हैं : शहजादा अनवर

रांची जिला ग्रामीण अल्पसंख्यक विभाग के उपाध्यक्ष ने की अपील

इंडिया गठबंधन का करें समर्थन

संवाददाता। ओरमांझी

रांची जिला ग्रामीण अल्पसंख्यक विभाग के उपाध्यक्ष रहीम अंसारी ने प्रेस प्रेस विज्ञप्ति जारी कर कहा कि लोकसभा चुनाव में इंडिया गठबंधन में शामिल तमाम पार्टियों एवं आम अवाम से गुजारिश है कि देश हित में लोकतंत्र को बचाने के लिए गठबंधन के उम्मीदवारों को जिताने के लिए मतदान करें, क्योंकि एक तरफ भाजपा लोकतंत्र को खत्म कर तानाशाही कायम करने की कोशिश में लगी है, वहीं सेकुलर दल लोकतंत्र को बचाने व आम अवाम के अधिकारों को बचाने के लिए लड़ रहे हैं.

कहा कि देश के प्रधानमंत्री का प्रयास है कि भारतीय संविधान को बदलकर तानाशाही तंत्र कायम करें, जो कतई देश की जनता को स्वीकार नहीं है. हाल ही में मणिपुर में हिंसक वारदात हुई, जिसमें औरतों की इज्जत को सरेआम लूटा गया और घटनाओं की सुध तक लेने की प्रधानमंत्री मोदी को समय मिला. इसकी चोट वहा की जनता वोट से करेगी. मोदी विरोध करने वालों को सलाखों के पीछे डाल रहे हैं. झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन व दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को राजनीतिक साजिश के तहत जेल में डालने का काम किया गया है, जबकि हेमंत सोरेन बहुत कम समय में झारखंडियों के कल्याण एवं विकास के लिए अनेकों काम किए, जो भाजपा के लोगों को पच नहीं रहा था. इसलिए उन्हें भारी मुकदमे में फंसाकर जेल में डाल दिया गया है. इस आम चुनाव में झारखंड के तमाम बुद्धिजीवियों से गुजारिश है कि जम्हूरियत को अगर बचाना है तो भाजपा के लोकतंत्र को बदलने की कोशिश को एकजुट होकर शिकस्त देने क काम करें. इसके लिए सभी सेकुलरजन इंडिया गठबंधन के पक्ष में मतदान करें और मतदान करवाने का काम करें न कि भाजपा को लाभ पहुंचाने के लिए अलग-अलग मंच बनाकर उम्मीदवार खड़ा करें.

खास बातें

- कहा-लोकतंत्र को बचाने का का काम करें धर्मनिरपेक्षजन
- भाजपा को लाभ पहुंचाने के लिये उम्मीदवार खड़ा न करें

लोकसभा चुनाव लोकतंत्र का सबसे बड़ा जश्न: मिंज

बेड़ो। लोकसभा आम चुनाव लोकतंत्र का सबसे बड़ा जश्न है और संपूर्ण तैयारी किए बिना जश्न की सफलता संभव नहीं है. उक्त बातें निर्वाचन से संबंधित बुधवार को आयोजित की गई समीक्षात्मक बैठक के दौरान बेड़ो के अंचलाधिकारी प्रताप मिंज ने कही. वे राजकीय प्राथमिक विद्यालय लमकाना और राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय जहानाबाज में आयोजित की गई बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे. उन्होंने मतदान केंद्र संख्या 295, 296, 297, 298, 299, 305, 306, 307, 308, 309, 310, 311, 312, 313, और 316 कल 14 मतदान केंद्रों से संबंधित विभिन्न बिंदुओं पर समीक्षा की.

चैत्र पर्व का हर्षोल्लास के साथ किया गया समापन

संवाददाता। सिल्ली/मुरी

सिल्ली के लगाम गांव में शनिवार को हर्षोल्लास के साथ चैत्र पर्व संपन्न हो गया. इसको लेकर गांव के शिव मंदिर परिसर में मेले का आयोजन किया गया, जहां लोग रात भर छौऊ नृत्य तथा मेले का आनंद लिया. वहीं सुबह फूलखुंदी (दहकते अंगारों में चलना) का आयोजन किया गया. व्रती सभी भोगता अहले सुबह मंदिर के निकट तालाब में स्नान कर दहकते अंगारों पर चलकर एवं शिवजी की पूजा के उपरांत प्रसाद ग्रहण कर व्रत तोड़ते हैं. वहीं व्रती महिलाएं भी इस आग पर चलती हैं. फूलखुंदी में भोगता नंगे पांव आग पर चलते हैं. लगभग 5 -7 फीट लंबा, 2 फीट चौड़ा नाला बनाया जाता है. इसे सूखी लकड़ियों से पाटा जाता है. आम के पत्तों से हवा करके अंगार तैयार किया जाता है.

राष्ट्रहित में शत-प्रतिशत मतदान के लिए अभियान चलाएगा संगठन

एबीवीपी वोटरों को करेगी जागरूक

संवाददाता। बेड़ो

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद रांची जिला ग्रामीण द्वारा शनिवार को सरस्वती विद्या मंदिर स्कूल, बेड़ो में मतदाता जागरूक अभियान को लेकर एक अहम बैठक आयोजित की गई. इस मौके पर एवीबीपी के झारखंड प्रांत संगठन मंत्री राजीव रंजन का एबीवीपी ग्रामीण के सभी कार्यकर्ताओं को मार्गदर्शन प्राप्त हुआ. जिला भर में विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ताओं के द्वारा गांव-गांव जाकर जागरूकता अभियान को लेकर लोगो को जागरूक करने का संकल्प लिया गया. साथ ही मतदाता जागरण का पोस्टर विमोचन किया गया. प्रांत संगठन मंत्री ने कहा कि राष्ट्रवादी सरकार को वोट देकर देश को पुनः सशक्त व मजबूत बनाएं. देश के सर्वांगीण विकास के लिए एवं देश की सुरक्षा के लिए पुनः स्थिर व मजबूत सरकार का चुनाव करना अति आवश्यक है. इसके लिए विद्यार्थी परिषद शत प्रतिशत मतदान हो, ये सुनिश्चित करेगी और इसके लिए एवीबीपी के हजारों कार्यकर्ता गांव गांव जाकर लोगों के बीच अभियान चलाएंगे. रांची विश्वविद्यालय संयोजक शिवेंद्र सौरव ने कहा कि वोट देना हमारा अधिकार है, इसलिए पहले मतदान फिर जलपान. अभाविप बेड़ो के नगर अध्यक्ष उमेश नारायण सिंह ने कहा कि लोकतंत्र के इस महापर्व में देश के हम सभी जिम्मेवार लोगों का कर्तव्य बनता है कि चुनाव के दिन सभी लोग मतदान करें. रांची विभाग संयोजक प्रमुख आकाश रक्षित ने भी कहा कि पुनः राष्ट्रवादी सरकार को लाने के लिए हम सभी ग्रामीण क्षेत्रों में विशेष अभियान चलाएंगे.

परंपरा के अनुसार लोगों ने दहकते अंगारे पर चलकर किया शिव भक्ति का प्रदर्शन

मासु गांव में धूमधाम से की गयी मंडा पूजा

संवाददाता। अनगड़ा

प्रखंड की हेसल पंचायत के मासु गांव में मंडा पूजा समारोह धार्मिक अनुष्ठान लोटन सेवा धुंवा शुंवा फुलखुन्दी झुलन जतरा और रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ संपन्न हुआ. मासु ग्राम प्रधान सह पहान पुजारी देवराज पहान ने बताया मंडा पूजा हमलोग पूर्वजों के समय से करते आएं हैं. इसमें भगवान शंकर और पार्वती का मिलन होता है. भगवान शंकर को अपनी भक्ति की शक्ति से खुश करने के लिए सप्ताह भर पूजा की जाती है. पूजा के दौरान भक्त अपने शरीर को कष्ट देते हैं. हमलोग भी पूर्वजों की यह परंपरा निभाते आ रहे हैं और नया पीढ़ी को भी इसके लिए प्रेरित कर रहें हैं ताकि परंपरा बरकरार रहे.

बता दें कि मंडा पूजा में भक्त दहकते हुयी आग के अंगारे में नंगे पांव चलते हैं. शिव मंडा पूजा समिति के अध्यक्ष मुलु महतो सचिव विशेश्वर मुंडा कोषाध्यक्ष अमरनाथ महतो व संरक्षक मासु ग्राम प्रधान देवराज पहान पंचायत समिति सदस्य मदरा मुंडा, गोपाल महतो, रितु महतो, जीतराम महतो, अजित महतो, जगरनाथ महतो, लालनाथ महतो, इंद्रदेव महतो, तिलक महतो, वीरेंद्र महतो, प्रभात महतो, शिबू महतो, अगमलाल महतो, रामचरण महतो, सकलनाथ महतो, हीरालाल महतो, रमनु महतो, अनिल महतो, उषा देवी, कलावती देवी, राशो पहान, मंजु देवी, सरिता देवी, अर्पणा सोलंकी, सरिका देवी, तीजन देवी का कार्यक्रम को सफल बनाने में योगदान रहा.

खास बातें

- पूजा के दौरान भक्तों ने अपने शरीर को दिया कष्ट
- नई युवा पीढ़ी को परंपरा को निभाने के लिये किया प्रेरित

लोकसभा चुनाव रांची से इंडिया गठबंधन की प्रत्याशी ने खिजरी विस क्षेत्र के ओरमांझी प्रखंड के मुन्ना, पतरा और चकला में जनसभा को किया संबोधित

देश में आदिवासी अस्मिता व पहचान कायम रखने में कांग्रेस का सबसे महत्वपूर्ण हाथ : यशस्विनी

संवाददाता। ओरमांझी

कांग्रेस पार्टी की रांची लोकसभा प्रत्याशी यशस्विनी सहाय ने कहा कि कांग्रेसी ही आदिवासी पहचान, सम्मान और सही अर्थों में विकास को बरकरार रख सकती है. सहाय ने कहा कि आज देश में आदिवासी अस्मिता के साथ ही आदिवासी पहचान की स्थिति कायम रखने की पृष्ठभूमि में कांग्रेस का सबसे महत्वपूर्ण हाथ है, जिसने न केवल वन संरक्षण अधिनियम, वन अधिकार कानून, पेसा कानून, पांचवीं और छठी अनुसूची जैसे अनेक संवैधानिक प्रावधान किये बल्कि जमीनी स्तर पर भी जितनी भी विकास योजनाएं संचालित हैं उसमें से अधिकांश कांग्रेस की ही देन है.

रांची लोकसभा क्षेत्र के अंतर्गत खिजरी विधानसभा क्षेत्र के ओरमांझी प्रखंड के मुन्ना, पतरा, चकला में आयोजित एक चुनावी सभा को संबोधित करते हुए यशस्विनी सहाय ने आरोप लगाया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में काम कर रही केंद्र सरकार केवल आपसी भेदभाव, महंगाई, बेरोजगारी आदि को बढ़ावा देकर देश में एक वैसा वातावरण कायम करना चाहती है जिसका फायदा केवल और केवल प्रधानमंत्री के कुछेक उद्योगपति मित्रों को हो.

सहाय ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी और भारतीय जनता पार्टी के नेताओं ने देश भर में जिस वातावरण को कायम कर दिया है उसका खामियाजा देश के आदिवासियों, दलितों, अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी), अल्पसंख्यकों आदि के साथ ही सभी लोगों को भुगतना पड़ रहा है. उन्होंने कहा कि आज यह देश की जरूरत है कि राहुल गांधी के नेतृत्व में विश्वास व्यक्त करते हुए कांग्रेस को विजय दिलायी जाये, क्योंकि आज की लड़ाई केवल राजनीतिक नहीं बल्कि सामाजिक भी है और इसका दूरगामी प्रभाव हम सभी के भविष्य पर पड़ने वाला है. इसलिये भारत में आपसी सद्भाव, संप्रभुता, एकता, अखंडता आदि के साथ-साथ इस बात को भी ध्यान में रखा जाय कि कौन सरकार देश के सभी लोगों का समान और समन्वित विकास कर सकती है.

वैसी सरकार चुनिए जो सभी को समान नजरिये से देखे

वहीं खिजरी विधायक राजेश कच्छप ने कहा कि आगामी लोकसभा चुनाव न केवल झारखंड बल्कि देश के ख्याल से भी बहुत चुनौतीपूर्ण और महत्वपूर्ण है. उन्होंने कहा कि वैसी धर्मनिरपेक्ष सरकार की जरूरत है जो सभी को समान नजरिये से देखे. पिछले 10 साल में सभी ने वैसी जुमलेबाजी वाली सरकार देखी है जिसके प्रधानमंत्री जब कहते हैं कि यह केवल टेलर है और आगे फिल्म आना बाकी है तो आप समझ सकते हैं कि हमारे संविधान के साथ ही देश पर भी खतरा है और आरक्षण खत्म करने की साजिश है.

राजनीतिक गुंडागर्दी का परिचय दे रही है भाजपा

वहीं पूर्व सांसद सुबोधकांत सहाय ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी पूरे देश में अपनी जबरदस्ती और मर्यादा विहीन राजनीतिक गुंडागर्दी का परिचय दे रही है. मौके पर मुख्य रूप से प्रखंड अध्यक्ष तुलसी खरवार, उप प्रमुख रिजवान अंसारी, कांग्रेस पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं विधायक के सलाहकार रमेश उरांव, सुरेश प्रसाद साहू, अशोक कुमार गुप्ता, देवेंद्र नाथ ठाकुर, सफीउल्लाह अंसारी, बलराम कुमार, बाबूलाल महली, रमेश चंद्र उरांव आदि मौजूद थे.

यशस्विनी को सेवा दल के महामंत्री ने दी शुभकामनाएं

ओरमांझी। कांग्रेस सेवा दल के महामंत्री सत्यनारायण साह ने इंडिया गठबंधन की रांची प्रत्याशी यशस्विनी सहाय से मिलकर उन्हें प्रत्याशी बनाए जाने पर बुके देकर बधाई एवं शुभकामनाएं दी. इस अवसर पर सत्यनारायण साह ने कहा कि इंडिया गठबंधन ने रांची से युवा चेहरा को मौका दिया है, जिससे राजनीति में भविष्य देख रहे युवाओं में काफी उत्साह है. युवाओं का पुरजोर प्रयास होगा कि भारी से भारी मतों से यशस्विनी को जिताकर लोकसभा भेजा जाए. उन्होंने कहा कि यशस्विनी सहाय पढ़ी लिखी एवं महिला होने के साथ-साथ राजनीतिक अनुभव भी रखती हैं. उन्हें घर से ही समाजसेवा की शिक्षा मिली है. पूर्व केंद्रीय राज्य मंत्री सह तीन बार रांची के सांसद रहे सुबोध कांत सहाय की पुत्री होने के कारण राजनैतिक एवं सामाजिक कार्यकुशलता उनमें दिखाई देती हैं.

राशिफल

आचार्य प्रणव मिश्रा

मेष भाग्य भाव मे चंद्रमा है, धन का लाभ मिलेगा. साझेदारी में शुरू किया गया कार्य लाभ के अवसरों को बढ़ा सकता है. स्थायी संपत्ति खरीदने का मन बनेगा. दांपत्य जीवन में विश्वास बढ़ेगा. कामकाज की गति बनी रहेगी.

वृषभ समय सामान्य है. कुछ मानसिक उलझन होगा. घर की चिंता रहेगी. विरोधी भी आपसे प्रभावित होंगे. कला के क्षेत्र में इच्छित सफलता मिलने के योग हैं. सरकारी राज्यपक्ष के कामों में पर्याप्त सावधानी रखें. मित्रों से मदद मिलेगी.

मिथुन जरूरी कार्य पर खर्च होगा. कोई नया कार्य मे जोखिम न उठाएं. व्यावसायिक योजना के विस्तार में मित्रों से मदद मिलेगी. पुरानी झंझटों से राहत रह पाएगी. क्रोध एवं उत्तेजना पर संयम रखना होगा.

कर्क समय बहुत ही अनुकूल है. व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी. मेहनत व लगन से कार्यक्षेत्र में बेहतर सफलता हासिल कर सकेंगे. अपने व्यसनों पर काबू रखना चाहिए. किसी से भी बोलने से पहले विचार कर लें.

सिंह तनाव बढ़ सकता है. शिक्षा में सुधार का समय आ गया है. बस प्रयास करें. रोजगार के बेहतर अवसर मिलने से आय बढ़ेगी. दांपत्य जीवन सुखद रहेगा. प्रसन्नतावर्धक समाचार मिलेंगे. व्यापार में इच्छित लाभ होगा.

कन्या किसी बात को लेकर मन मे प्रसन्नता बढ़ेगी. कारोबार में वांछित तेजी आने की संभावना कुछ कम रहेगी. विवेक से निर्णय करने पर लाभ एवं सफलता प्राप्त हो सकेगी. नए कार्य का आरंभ लाभदायी रहेगा.

तुला कार्य को लेकर भागदौड़ रहेगी. कुछ हानि भी हो सकता है, धैर्य रखें. काम का बोझ कम करने के लिए जिम्मेदारियों को बांटना आवश्यक है. आर्थिक कामों में परेशानी आने की संभावना है. इतर का दान और प्रयोग करें.

वृश्चिक विद्यार्थी शिक्षा में सफल रहेंगे. धनार्जन होगा. पूंजी निवेश संबंधी कार्यों में सावधानी रखें. आत्मविश्वास बना रहेगा. कारोबार में उतार-चढ़ाव बना रहेगा. पारिवारिक समस्याओं को प्राथमिकता से हल करें.

धनु कार्य बनने से मानसिक शांति मिलेगा. भावनात्मक संबंधों में जल्दबाजी में निर्णय न लें. अधिकारी आपकी कार्यशैली से नाराज हो सकते हैं. परिश्रम के अनुरूप सफलता नहीं मिलेगी. संतान की इच्छा पूरी होगी.

मकर कुछ विवाद भी हो सकता है. पर किया गया व्यवसाय ठीक करेगा. व्यापार में नए प्रस्ताव लाभकारी रहेंगे. सही समय पर लिए गए फैसले लाभ दिला सकते हैं. आवास संबंधी समस्या हल होने के योग हैं. कुछ नया हो सकता है.

कुंभ उतावली में कोई काम न करें. पुरानी संपत्ति के रख-रखाव पर धन खर्च हो सकता है. सामाजिक, धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी. विद्यार्थियों को पढ़ाई की चिंता रहेगी. पर मेहनत से विजय पाया जा सकता है. अन्न दान करें.

मीन सत-कर्म में रुचि बढ़ेगा. लाभ में वृद्धि होगी. कुसंगति से बचें. परिवार में मांगलिक कार्यक्रमों की चर्चा संभव है. संतान की रोजी-रोटी की चिंता समाप्त होने के योग हैं. आपके अच्छे कर्म से घर परिवार में खुशहाली होगा. शनि को प्रसन्न करें.

गुमला जिले के सिसई थाने का मुंशी घूस लेते रंगे हाथों गिरफ्तार

गुमला। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (एसीबी), रांची की टीम ने शनिवार को गुमला जिले के सिसई थाना के मुंशी को मधुसूदन झा को नौ हजार रुपये रिश्वत लेते रंगे हाथों गिरफ्तार किया. इस संबंध में रांची के इटकी निवासी सौरभ कुमार गुप्ता ने लिखित आवेदन दिया था कि उन्हें एक मामले में सिसई थाना के जरिये गिरफ्तार कर जेल भेजा गया था. गिरफ्तारी के समय सौरभ का मोबाइल, लैपटॉप एवं अन्य समान को सिसई थाना ने जब्त किया था. न्यायालय से जमानत लेने के बाद जब्त सामानों का रिलीज आर्डर लेकर सौरभ जब सिसई थाना गये तो सामानों को रिलीज करने के एवज में मुंशी ने उनसे दस हजार रुपये रिश्वत की मांग की. इसके बाद एसबी टीम ने शनिवार को मधुसूदन झा को नौ हजार रुपये रिश्वत लेते हुए रंगे हाथों गिरफ्तार किया.

एक मई को नामांकन करेंगी अनुपमा

धनबाद। धनबाद लोकसभा से इंडिया गठबंधन प्रत्याशी अनुपमा सिंह एक मई को दोपहर एक बजे धनबाद समाहरणालय में अपना नामांकन दाखिल करेंगी . नामांकन दाखिल करने के बाद तीन बजे गोल्फ ग्राउंड में आमसभा होगी. इस मौके पर जिला कांग्रेस कमेटी के पदाधिकारी, वरिष्ठ कांग्रेसी, पूर्व मंत्री, विधायक, एआईसीसी के सभी सदस्य, प्रदेश डेलिगेट, प्रदेश कांग्रेस के सभी पदाधिकारी,सभी मंच-मोर्चा के जिलाध्यक्ष एवं सभी प्रखंड/नगर कांग्रेस अध्यक्ष एवं कार्यकर्ताओं से आग्रह किया गया है कि निर्धारित तय समय पर भारी से भारी संख्या में पहुंचकर प्रत्याशी के नामांकन में शामिल हों.

ई-रिक्शा चालकों के माध्यम से मतदाता जागरुकता रैली

गढ़वा। मतदाताओं को जागरूक करने के उद्देश्य से स्वीप के तहत कई तरह के कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं. इसी क्रम में शनिवार को परिसदन भवन गढ़वा परिसर से स्वीप कार्यक्रम के तहत जिले के ई-रिक्शा चालकों के माध्यम से मतदाता जागरूकता रैली निकाली गई. सामान्य प्रेक्षक, रेम्या मोहन मुददत्त (आईएएस) ने हरी झंडी दिखाकर ई रिक्शा को रवाना किया. मौके पर प्रमेश कुशवाहा, सुशील कुमार, नीलम कुमारी समेत अन्य पदाधिकारी एवं कर्मी उपस्थित थे. शहरी क्षेत्र के मतदाताओं को जागरूक करने के लिए यह एक अनूठी पहल है.

गुमला के चैंबर के नये कार्यालय के उद्घाटन पर बोले एफजेसीसीआई अध्यक्ष किशोर मंत्री

व्यापारी बंधु मेरे कार्यालय आएं, समस्या के निदान का प्रयास किया जाएगा

संवाददाता। गुमला

चैंबर ऑफ कॉमर्स, गुमला के नये कार्यालय का उद्घाटन बस स्टैंड रोड स्थित सिद्धि विनायक होटल में फेडरेशन ऑफ़ झारखंड चैंबर ऑफ़ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज (एफजेसीसीआई) के अध्यक्ष किशोर मंत्री, गुमला चैंबर के अध्यक्ष दामोदर कसेरा एवं क्षेत्रीय उपाध्यक्ष अमित माहेश्वरी ने संयुक्त रूप से किया. उद्घाटन के पश्चात गुमला चैंबर ऑफ़ कॉमर्स के अध्यक्ष दामोदर कसेरा की अध्यक्षता में एफजेसीसीआई एवं गुमला चैंबर की संयुक्त बैठक हुई.

बैठक में एफजेसीसीआई के अध्यक्ष किशोर मंत्री का पुष्पगुच्छ एवं अंग वस्त्र देकर स्वागत और अभिनंदन किया गया.

पूर्व अध्यक्ष मनोज नरेडी का स्वागत क्षेत्रीय उपाध्यक्ष अमित माहेश्वरी ने किया. एफजेसीसीआई की पूरी टीम का स्वागत गुमला चैंबर के पदाधिकारियों ने एकल पुष्प देकर किया. स्वागत भाषण में गुमला चैंबर अध्यक्ष दामोदर कसेरा ने कहा कि आज बहुत ही सौभाग्य की बात है कि गुमला के धरती पुत्र व्यापार के क्षेत्र में यहां से निकल कर झारखंड की राजधानी रांची में अपना परचम लहराते हुए फेडरेशन ऑफ़ झारखंड चैंबर ऑफ़ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज का दो बार अध्यक्ष बने. यह हम सभी गुमला के व्यापारियों के लिए गर्व की बात है. इनके नेतृत्व में झारखंड चैंबर व्यापारी के हित में अच्छे काम कर रही है.

आशा करते हैं कि इसका लाभ झारखंड के सभी छोटे बड़े व्यापारियों को मिलेगा. क्षेत्रीय उपाध्यक्ष अमित माहेश्वरी ने कहा कि गुमला शहर के बीचो बीच गुमला चैंबर का कार्यालय खोला गया है. जिसमें गुमला के सभी व्यापारी बंधु अपनी समस्याओं को लेकर कार्यालय में आ सकते हैं. समस्या के निदान का पूरा प्रयास किया जायेगा. इससे व्यापारी एकता मजबूत होगी. सचिव बबलू वर्मा ने कहा कि गुमला चैंबर पर शहर के व्यापारियों का विश्वास बढ़ा है. हमारा प्रयास रहा है कि गुमला के व्यापारी और शहरवासी को कोई समस्या हो तो तुरंत उसका समाधान कराया जाये.

झारखंड चैंबर के अध्यक्ष किशोर मंत्री ने कहा कि गुमला के इस संयुक्त बैठक में काफ़ी सुखद अनुभूति हो रही है. कहा कि गुमला चैंबर जिसका निर्माण छोटे से पौधे के रूप में हुआ था वह आज वट वृक्ष का रूप ले ली और इस मुकाम पर पहुंची. जिस तरह चौसठ वर्ष पूर्व फेडरेशन ऑफ़ झारखंड चैंबर ऑफ़ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज का गठन हुआ था. ठीक उसी तरह सन 1994 में गुमला चैंबर ऑफ़ कॉमर्स का गठन हुआ था. आज 30 वर्ष पूरे हो गये. किशोर मंत्री ने कहा कि गुमला चैंबर के द्वारा गुमला में रेलवे रिजर्वेशन काउंटर खोलने की मांग की गयी थी. जिस पर हमने रांची के डीआरएम से इस विषय पर प्रमुखता से बातों को रखते हुए मांग किया. जिस पर उन्होंने सकारात्मक पहल करते हुए कहा कि दो महीनों के अंदर गुमला में रिजर्वेशन काउंटर के लिए टेंडर किया जायेगा.

बढ़ा विश्वास

- एफजेसीसीआई एवं गुमला चैंबर की संयुक्त बैठक हुई
- हम सभी गुमला के व्यापारियों के लिए गर्व की बात है
- 1994 में गुमला चैंबर ऑफ़ कॉमर्स का गठन हुआ था

लोकसभा सीट खूंटी : झारखंड का सबसे हॉट सीट बना

एक बार फिर अर्जुन मुंडा की राजनीतिक प्रतिष्ठा दांव पर

प्रवीण कुमार। रांची

भाजपा के वरिष्ठ नेता और केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा के लिए आसन्न लोकसभा चुनाव उनके राजनीतिक जीवन-मरण से जुड़ गया है. वे झारखंड की खूंटी लोकसभा सीट से दूसरी बार चुनाव मैदान में है. भाजपा द्वारा अर्जुन मुंडा को दूसरी बार खूंटी से उम्मीदवार बनाये जाने से यह सीट झारखंड की सबसे हॉट सीट बन गयी है. वर्ष 2019 को लोकसभा चुनाव में अर्जुन मुंडा को कांग्रेस प्रत्याशी कालीचरण से कड़ी टक्कर मिली थी और महज 1,445 वोटों के अंतर से मुंडा चुनाव जीते थे. एक बार फिर 2024 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस के कालीचरण मुंडा से उनका मुकाबला है. वर्तमान में कृषि और जनजातीय मामलों के केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा झारखंड में तीन बार मुख्यमंत्री भी रह चुके हैं. खूंटी में अर्जुन मुंडा की राजनीतिक प्रतिष्ठा एक बार फिर से दांव पर होगी.

कई मायने में अलग हो सकता है 2024 का चुनाव : तमाड़ जैसे इलाके में को कुड़मी /कुर्मी को आदिवासी में शामिल नहीं किये जाने को लेकर अर्जन मुंडा को कुर्मी वोटरों की नाराजगी झेलनी पड़ सकती है. दूसरी ओर खूंटी इलाके के मतदाता मुंडा के कामकाज का भी आकलन करेंगे. वहीं, लोकसभा चुनाव की घोषणा के ठीक पहले कांग्रेस नेता राहुल गांधी की भारत जोड़ो न्याय यात्रा ने कांग्रेस कार्यकताओं में उर्जा भरने का काम किया था. राहुल गांधी ने स्थानीय जनसंगठनों के प्रतिनिधियों से भी मिले थे. उन्होंने पत्थलगड़ी, लैंड बैंक जैसे मामले में राज्य सरकार को पत्र लिख इन्हें हल करने की बात कही थी. वहीं, कांग्रेस प्रत्याशी कालीचरण मुंडा को लेकर लोस क्षेत्र के चार विधानसभा खूंटी, तोरपा, कोलेबिरा, सिमडेगा विधानसभा में पार्टी पदाधिकारी व कार्यकर्ता सक्रियता से काम कर रहे हैं.

तमाड़ और खरसांवा ने अर्जुन को दिलायी थी जीत

2019 को लोकसभा चुनाव में खूंटी लोकसभा क्षेत्र के चार विधानसभा तोरपा, खूंटी, सिमडेगा और कोलेबिरा में पिछड़ने के बाद खरसावां और तमाड़ ने उनकी जीत में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी. तमाड़ विधानसभा में जहां अर्जुन मुंडा 42 हजार से अधिक मतों के अंतर से बढ़त बनायी, वहीं खरसावां में भी उन्होंने करीब 34 हजार मतों से बढ़त ली. यही कारण है कि चार विधानसभा सीटों में भी पिछड़ने के बावजूद अर्जुन मुंडा अपने निकटतम प्रतिद्वंदी कांग्रेस के कालीचरण मुंडा को पराजित करने में सफल रहे.

कालीचरण को चार विस क्षेत्रों में मिली थी बढ़त

कांग्रेस प्रत्याशी कालीचरण मुंडा को तोरपा विधानसभा में करीब 23 हजार, खूंटी में 22 हजार, सिमडेगा में पांच हजार और कोलेबिरा में 25 हजार मतों से बढ़त मिली थी. इस तरह से इन चार विधानसभा क्षेत्रों में लगभग 75 हजार वोट से कालीचरण मुंडा आगे थे. लेकिन अर्जुन मुंडा ने खरसावां और तमाड़ विधानसभा क्षेत्र में जो 76,500 मतों की बढ़त बनायी, यही बढ़त डेढ़ हजार वोटों से उनकी जीत में निर्णायक साबित हुई थी.

खास बातें

- कुर्मी वोटरों की नाराजगी भी झेलनी पड़ सकती है अर्जुन को
- कांग्रेस के कालीचरण चुनाव से ठीक पहले हो जाते हैं सक्रिय

बरला के कांग्रेस में शामिल होने से मिलेगा लाभ

राजनीतिक जानकारों का मानना है कि कांग्रेस में दयामनी बरला के शामिल होने के बाद तोरपा, खूंटी, कोलेबिरा से कांग्रेस के वोटों में बढ़ोतरी होगी. वहीं झारखंड पार्टी (एनोस) के उम्मीदवार इसाई मतों का कितना विभाजन करा पाते हैं, इस पर भी अर्जुन मुंडा की हार-जीत टिकी हुई है. राजनीतिक पंडित यह भी कहते हैं कि वर्ष 2019 के विधानसभा चुनाव में झामुमो द्वारा दयामनी बरला को टिकट नहीं देने के कारण राज्य के दो आदिवासी आरक्षित सीटों पर गठबंधन की हार हुई थी.

मिल रहा नीलकंठ समर्थकों का साथ

जानकार बतातें हैं कि कांग्रेस प्रत्याशी कालीचरण को भाजपा विधायक नीलकंठ के समर्थकों का साथ मिल रहा है. ये वे समर्थक हैं, जो नीलकंठ के काफी करीबी बताये जाते हैं, मगर ये लोग भाजपा के कार्यकर्ता नहीं हैं. इनका समर्थन मिलना कालीचरण के लिए फायदेमंद साबित हो सकता है.

दहेज हत्या के दोषी पति को 14 साल सश्रम कारावास, 30 हजार जुर्माना

- अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश अजय कुमार सिंह की अदालत ने सुनाया फैसला

संवाददाता। कोडरमा

दहेज हत्या के दोषी पति को 14 साल की सजा सुनायी गयी है. दहेज के लिए हत्या मामले की सुनवाई करते हुए अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश द्वितीय अजय कुमार सिंह की अदालत ने शनिवार को दोषी पति मोहम्मद जावेद को 304 (बी) आईपीसी के तहत दोषी पाते हुए 14 वर्ष सश्रम कारावास की सजा सुनायी. इसके साथ ही 30 हजार रुपए का जुर्माना लगाया. जुर्माना की राशि नहीं देने पर 6 माह अतिरिक्त सजा भुगतनी होगी. मामला वर्ष 2020 का है. मृतका के पिता मोहम्मद शहजाद ने चंदवारा थाने में आवेदन देकर मामला दर्ज कराया था. उनका कहना था कि पुत्री अफसाना खातून की शादी 27 जून 2019 को मो जावेद के साथ की थी. तीन माह तक वह ससुराल में ठीक से रही. इसके बाद उसे एक मोटरसाइकिल और 50 हजार रुपए के लिए प्रताड़ित किया जाने लगा. पंचायती भी हुई, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ. 23 जून 2020 की सुबह 6 बजे फोन से सूचना मिली कि आपकी पुत्री की मौत हो गयी है. मृतका के पिता ने मोहम्मद जावेद, मोहम्मद आबिद, सावेद, नजमुल खातून सहित अन्य पर पुत्री की हत्या करने का आरोप लगाया था.

चंदवारा थाने में कांड दर्ज होने के बाद अदालत में एसटी-42/20 के तहत सुनवाई हुई. अदालत में लोक अभियोजक एंजेलिना वारला व अधिवक्ता अनवर हुसैन ने पैरवी की. बचाव पक्ष की ओर से अधिवक्ता सुधीर कुमार ने दलील रखी. अदालत ने सभी गवाहों और साक्ष्यों का अवलोकन करने के बाद अभियुक्त को दोषी पाते हुए सजा मुकर्रर की और जुर्माना लगाया.

युवक का अपहरण कर बोलेरो में ले जाते पांच लोग धराए

संवाददाता। चांडिल

ईचागढ़ विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत नीमडीह थाना क्षेत्र में एक युवक का अपहरण करने का एक सनसनीखेज मामला प्रकाश में आया है. हालांकि ग्रामीणों की सजगता और सक्रियता से अपहरणकर्ता अपने मंसूबे में सफल नहीं हो सका. मिली जानकारी के अनुसार, एक बोलेरो सवार पांच लोग नीमडीह थाना क्षेत्र के लावा गांव के पास लावा मोड़ से एक व्यक्ति का अपहरण कर ले जा रहे थे. इस बीच ग्रामीणों ने उसे देख लिया और तत्काल आसपास के दूसरे गांवों के लोगों के साथ नीमडीह थाना पुलिस को सूचना दी.

लावा गांव से व्यक्ति का अपहरण कर ले जाते बोलेरो सवार अपहरणकर्ताओं को ग्रामीणों ने नीमडीह थाना क्षेत्र के रामनगर गांव के पास घेर कर पकड़ लिया. इस बीच नीमडीह थाना की पुलिस भी न मौके पर पहुंच गयी और पाचों लोगों को पकड़ लिया और अपहृत को मुक्त कराया. इस संबंध में नीमडीह थाना प्रभारी तंजील खान ने बताया कि पुलिस पांचों युवकों को हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है. इनके बीच आखिर क्या मामला है, व्यक्ति का अपहरण क्यों किया जा रहा था, घटना में कितनी सच्चाई है, पुलिस सभी बिंदुओं को ध्यान में रख कर जांच कर रही है. इस मामले का पटाक्षेप जल्द ही कर लिया जाएगा.

खास बातें

- हिरासत में लेकर आरोपियों से पूछताछ कर रही पुलिस
- ग्रामीणों ने अपहरण करते देखा, तो खदेड़ कर पकड़ा

पेड़ से टकराई स्कूटी, एक की मौत, दो रेफर

लोहरदगा। नेशनल हाईवे 143 ए कुड़ू-लोहरदगा मुख्य पथ पर कुडू थाना क्षेत्र के ननतिलो मोड़ मंटू ढाबा के समीप स्कूटी सवार ने सड़क के किनारे पेड़ में जोरदार टक्कर मार दी, जिसमें एक युवक की मौत हो गई जबकि दो युवक घायल हैं. दोनों का लोहरदगा सदर अस्पताल में प्राथमिक इलाज के बाद रांची रिम्स रेफर किया गया है. बताया जाता है कि चंदवा थाना क्षेत्र के लाधुप सेन्हा गांव निवासी चचेरे भाई अनिल मुंडा तथा कुलदीप मुंडा परिजन छत्तीसगढ़ के लोदाम गांव निवासी विवेक भगत के साथ लोहरदगा से कुड़ू आ रहे थे. इसी बीच कुड़ू थाना क्षेत्र के ननतिलो मोड़ मंटू ढाबा के समीप स्कूटी अनियंत्रित होकर सड़क किनारे लगे पेड़ से जा टकराई. टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि स्कूटी का अगला हिस्सा पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया. प्राथमिक जांच के बाद चिकित्सकों ने विवेक भगत को मृत घोषित कर दिया.

पलामू में नक्सली सहित दो गिरफ्तार, हथियार बरामद

संवाददाता। पलामू

प्रतिबंधित नक्सली संगठन भाकपा माओवादी के 10 लाख के इनामी नक्सली नितेश यादव के दस्ते के सदस्य राजेन्द्र भुइयां को चार भरदुआ बंदूक के साथ गिरफ्तार किया गया. राजेन्द्र के साथ विष्णु विश्वकर्मा को भी गिरफ्तार किया गया है. विष्णु हथियारों की मरम्मत करता था. उसके घर से हथियार बनाने के कई सामान बरामद किए गए हैं. राजेन्द्र हुसैनाबाद थाना क्षेत्र के नासो जमालपुर जबकि विष्णु इसी थाना क्षेत्र के जीतामाटी सलैया टिकर का रहने वाला है. एसपी रीष्मा रमेशन ने शनिवार को बताया कि राजेन्द्र भुइयां दो वर्षों से माओवादी नितेश यादव के दस्ते में शामिल रहा था. छापेमारी के दौरान चार भरदुआ बंदूक, दो बैरल, लोहे की पाइप, बारूद एवं भरदुआ बंदूक में भरने वाला मसाला, छर्रा, बैरिंग, बंदूक में इस्तेमाल होने वाला घोड़ा एवं अन्य पुर्जे बरामद हुए.

बंदूक राजेन्द्र के अलावा कर्मदेव भुइयां, उपेंद्र भुइयां नासो जमालपुर एवं राजेश कुमार रवि बैरियाडीह के घर से बरामद हुआ.

बलबड्डा थानेदार राहुल ने जिंदा जलने से बच्ची को बचाया

गोड्डा। बलबड्डा थानेदार राहुल कुमार चौबे ने मानवता और साहस का परिचय देते हुए एक बच्ची को जिंदा जलने से बचाया. दरअसल बलबड्डा थाना क्षेत्र के गडांडा पंचायत के सोनागुझी गांव में रहनेवाली चांदनी देवी, पति-स्व. गोपाल मिश्रा के घर में आग लग गयी. आग लगने की सूचना ग्रामीणों ने बलबड्डा थाना और फायर बिग्रेड को दी. सूचना मिलते ही बलबड्डा थानेदार राहुल कुमार चौबे फायर बिग्रेड को सूचना देते हुए उक्त गांव में पहुंचे. ग्रामीणों के सहयोग से घर के अंदर फंसी चांदनी देवी और उनकी भांजी को निकाला. दोनों आग से झुलसकर जख्मी हो गये थे. दोनों को एंबुलेंस के सहयोग से महगामा सदर अस्पताल भेजा. इसी दौरान ग्रामीणों ने बताया कि एक 4-5 साल की बच्ची घर के अंदर फंसी है. घर जल रहा था और घर में गैस सिलेंडर होने के कारण डर से कोई नजदीक नहीं जा रहा था. ग्रामीणों के सहयोग से आग को बुझाने का प्रयास किया जा रहा था. इसी दौरान जलते घर से एक बच्ची चौकी के नीचे बेहोशी की हालत में पड़ी थी. थानेदार ने जलते घर के अंदर घुसे और बच्ची को निकालकर अपने वाहन महागामा अस्पताल पहुंचाए. यहां प्राथमिक उपचार के बाद सभी घायलों को सदर अस्पताल, गोड्डा रेफर कर दिया गया. जहां इलाज के दौरान गंभीर रूप से झुलसी चांदनी देवी ने दम तोड़ दिया.

एमआरएमसीएच में छात्रा की मौत पर हंगामा

पलामू। जिले के छतरपुर प्रखंड के रामगढ़ की रहने वाली छात्र किरण कुमारी (16) की मौत के बाद एमआरएमसीएच मेदिनीनगर में परिजनों के द्वारा जमकर हंगामा किया गया, जिससे करीब दो घंटे तक अफरा-आफरी की स्थिति बनी रही. डाक्टरों के साथ दुर्व्यहार किया गया. आधे घंटे तक ओपीडी ठप रही. मरीज को दिखाने के लिए कटने वाली पर्ची की सेवा रोक दी गई. पुलिस के आने के बाद स्थिति को कंट्रोल में किया गया. परिजनों को पोस्टमार्टम कराने की सलाह दी गई है, ताकि मौत का कारण स्पष्ट हो सके. हंगामा के दौरान धरती के भगवान कहे जाने वाले डॉक्टर भी लाठी लेकर नजर आए. बताया जाता है कि रामगढ़ की किरण कुमारी पढ़ाई करने के लिए कोचिंग गई थी.

लापरवाही चट्टी मुहल्ला में अज्ञात वाहन ने बिजली के एक पोल में धक्का मार दिया था

शहर में 20 घंटे से बिजली नहीं, सड़क पर उतरे लोग

संवाददाता। लातेहार

शहर के एक बड़े इलाके में शुक्रवार की रात्रि 12 बजे के बाद से ही बिजली नहीं है. बिजली नहीं रहने से पड़ रही इस प्रचंड गरमी में लोगों का जीना मुहाल हो गया है. शनिवार की शाम तक बिजली विभाग कर्मी सिर्फ पोल तक गाड़ पाये थे. इसके बाद उन्होंने कहा कि अब तार रविवार को लगाया जायेगा. इसे बाद लोगों का आक्रोश बढ़ गया और लोग सड़क पर उतर गये. शहर के चट्टी मुहल्ला के पास लोग सड़क पर बैठ गये. इस दौरान सड़क के दोनों ओर वाहनों की लंबी कतार लग गयी. बाद में थाना पुलिस के द्वारा जामकर्ताओं को बिजली

विभाग के अधिकारियों से वार्ता के लिए थाना ले जाया गया. बता दें कि शुक्रवार की मध्य रात्रि 12 बजे एक अज्ञात वाहन ने चट्टी मुहल्ला में अशोक कुमार महलका के घर के पास बिजली के एक पोल को धक्का मार दिया था. इसके बाद वाहन ने थोड़ी दूर जा कर एक और बिजली के खंभे को धक्का मार दिया. कुल तीन पोल क्षतिग्रस्त हुआ और बिजली के तार टूट गये. रात में ही लोगों ने इसकी जानकारी बिजली विभाग को दी गयी. लेकिन सुबह तक कोई नहीं पहुंचा. इसके बाद दोपहर के बाद भी विभाग को कोई मिस्त्री पोलों को दुरूस्त करने नहीं पहुंचा. इसके बाद लोगों का आक्रोश बढ़ने लगा. शाम चार बजे के बाद बिजली मिस्त्री वहां पहुंचे. शाम छह बजे तक सिर्फ बिजली के पोल गाड़े जा सके. इसके बाद बिजली मिस्त्री यह कह कर चले गये कि अब तार रविवार को लगाया जायेगा. इसके बाद तो लोगों का आक्रोश बढ़ गया. लोग सड़क पर बैठ गये और बिजली सेवा बहाल करने की मांग करने लगे. थाना पुलिस को इसकी सूचना मिलने के बाद वे जामकर्ता को समझाया और बिजली विभाग के अधिकारियों से वार्ता करने के लिए थाना ले गये. पोल क्षतिग्रस्त होने के बाद शहर के थाना चौक, शिवपुरी मोहल्ला, तेली मोहल्ला समेत कई इलाकों में बिजली नहीं है. समाचार लिखे जाने तक इन इलाकों में बिजली नहीं थी.

बिजली गुल

- सड़क के दोनों ओर वाहनों की कतार लग गयी
- शाम चार बजे के बाद बिजली मिस्त्री वहां पहुंचे

पेज एक का शेष

बहुत कुछ कहते हैं ये आंकड़े...

हिंदी भाषी राज्यों की वैसी सीटें, जहां पांच या अधिक प्रतिशत मतदान गिरे

सीधी	-3.00%	अमरोहा	-6.99%
मथुरा	-11.71%	अलवर	-6.95%
खजुराहो	-11.37%	राजासमंद	-6.8%
रींवा	-10.89%	कटिहार	-6.55%
शहडोल	-10.05%	नवादा	-6.55%
दामोह	-9.49%	नैनीताल	-6.44%
सतना	-9.38%	उदयपुर	-6.27%
मुजफ्फरनगर	-9.19%	गाजियाबाद	-6.21%
झुंझुनू	-8.94%	भरतपुर	-6.2%
बागपत	-8.71%	पाली	-6.11%
जयपुर ग्रामीण	-8.69%	भागलपुर	-5.72%
जबलपुर	-8.43%	दौसा	-5.71%
गंगानगर	-8.11%	मेरठ	-5.56%
अजमेर	-8.05%	करौली-धौलपुर	-5.53%
होशंगाबाद	-7.47%	हरिद्वार	-5.52%
सीकर	-7.47%	भीलवाड़ा	-5.51%
बिजनौर	7.42%	जोधपुर	-5.5%
टोंक सवाई माधोपुर	-7.38%	बीकानेर (एससी)	-5.28%
टीकमगढ़	-7.34%	जयपुर	-5.09%
रामपुर	-7.32%	अलीगढ़	-5.02%
गौतमबुद्ध नगर	-7.28%	नागपुर	-5.01%
बुलंदशहर	-7.06%	कैराना	-4.98%

(नोटः इस लेख में उल्लेखित आंकड़े आर्थिक एवं राजनीतिक मामलों के रिसर्चर श्रेयस सरदेसाई के मतदान से जुड़े आंकड़ों पर आधारित है.)

हिंदू-मुस्लिम या एससी-एसटी और...

भारत में किसके पास सबसे ज्यादा संपत्ति : रिपोर्ट के अनुसार आबादी का आंकड़ा देखें तो अपर क्लास हिंदू, बैकवर्ड, एससी-एसटी और मुस्लिमों में सबसे ज्यादा जनसंख्या पिछड़े वर्ग की है. उनकी आबादी 35.6 फीसदी है. देश की संपत्ति का 31 फीसदी हिस्सा उनके पास है. वहीं, देश की कुल आबादी में से 22.28 फीसदी अपर क्लास हिंदू हैं और 41 फीसदी संपत्ति उनके पास है. उच्च जाति के लोगों की संपत्ति का आंकड़ा उनकी कुल आबादी से भी दोगुना है. संपत्ति और आबादी दोनों ही मामलों में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लोग तीसरे नंबर हैं. देश में एससी-एसटी की 27 फीसदी आबादी रहती है, लेकिन संपत्ति का आंकड़ा आबादी का आधा भी नहीं हां, देश की कुल आबादी में इनका हिस्सा सिर्फ 11.3 फीसदी है. इसी तरह मुस्लिमों के पास 8 फीसदी हिस्सा है, जबकि आबादी 12 फीसदी है.

आ इस पल को जी लेते हैं!

कविता कलम

डॉ. विनय कुमार पाण्डेय

यह जीवन बहुमूल्य है, अमूल्य है. यह जीवन एक संग्राम-भूमि है, जिसमें आकर हम सबों को संग्राम करना पड़ता है. एक पल में हम रणक्षेत्र में विजय की खुशियां मनाते हैं तो दूसरे पल में ही किसी के घातक प्रहार से आहत हो उठते हैं. अगले पल क्या होगा, इसका कोई भान तक नहीं होता. ऐसे में एक ही साथी होता है और वह है धैर्य. जो संग्राम की भीषणता को देखकर डर जाता है, वह मारा जाता है, लेकिन जो प्रतिकूल परिस्थितियों का डट कर मुकाबला करता है, वह संग्राम में किसी न किसी पल विजयश्री को प्राप्त कर लेता है. तब अतीत के संघर्ष की यादें तन-मन को गुदगुदा जाती हैं. अगले पल ही किसी प्रहार की आशंका कौंध जाती है और एक बार फिर भय की लहरें तन-बदन में दौड़ पड़ती हैं. तब एक बार फिर वीरता के साथ संग्राम करने की प्रेरणा निराशा के महासागर में तैरती हुई पास आ जाती है और किसी भी परिस्थिति का डट कर सामना करने का साहस कुलांचें भरने लगता है.

हमारे मन में कुछ ऐसे ही भाव का दीपक जगमगा उठता है और हमें जीवन के रणक्षेत्र में लगी चोटों पर मरहम लगाकर आशा और राहत प्रदान करता है. कुछ ऐसे ही भाव इस कविता में हैं, जिसकी रचनाकार हैं जमशेदपुर की कवयित्री **माधवी उपाध्याय.** माधवी जी बेबाक कहती हैं-

आ इस पल को जी लेते हैं, हर गम को हम पी लेते हैं ..
बीत रहे पल-पल समय की धारा को,
अपनी मुट्ठी में संजोकर, खुशियां हम ढूंढा करते हैं.
शब्द-शब्द स्नेहिल भावों से,
अंतर्मन की पाती लिखकर श्वास-श्वास में घुल जाते हैं.
स्वप्नलोक के महलों में, हम पूरी सदियां जी आते हैं.
आ इस पल को जी लेते हैं हर गम को हम पी लेते हैं..
न जाने कल कैसा होगा, शांत प्रहर के जैसा होगा.
न कोई चाहत, न कोई हसरत, बस एकाकी जीवन होगा.
अपने मन को विस्तृत कर
सागर में गहन उतरकर, हम कुछ 'मनके' चुन लाते हैं.
चल नील गगन में पंख लगाकर, हम मधुरस यूं बरसाते हैं.
आ इस पल को जी लेते हैं, हर गम को हम पी लेते हैं ..

माधवी जी, आपकी इस रचना से सारी आशंकाएं निर्मूल हो जाती हैं, पानी से आधी भरी गिलास को देखकर दो तरह की बातें होती हैं. एक यह कि गिलास आधी भरी है और दूसरी यह कि गिलास आधी खाली है. हमें जितना कुछ प्राप्त हुआ है, उनके लिए भाग्यविधाता का अभारी होना चाहिए कि उन्होंने हमें इतना कुछ दिया है. यह भी अकाट्य सत्य है कि सबको सबकुछ नहीं मिलता, लेकिन आशा का दीप जलता ही रहना चाहिए. इस क्रम में प्रस्तुत है मेरे प्रयासों से विरचित यह रचना, जिसका शीर्षक है-मैं कवि हूं.

जीवन में जो कुछ पा न सका मैं भी हूं उन लाचारों में.
अब ढूंढ रहा हूं एक फूल धरती पर बिखरे खारों में.
वह फूल ढूंढता हूं मैं जो महका दे सबके जीवन को.
अज्ञानी को ज्ञानी कर दे धनवान बना दे निर्धन को.
मैं कवि हूं, है मित्रता मुझे कष्टों से और अभावों से.
बेचैन रहा करता हूं मैं तन-मन के अगणित घावों से.
मेरी नजरों में कोई भी लेता न खरा या खोटा है.
मेरी नजरों में कोई भी लेता न कभी भी छोटा है.
मिल सका प्रेम से जो कोई मैंने उसको माना अपना.
पर उसको लेकर भी मैंने देखा न कभी कोई सपना.
जो मुझे पराया समझ रहा उससे भी मुझको बैर नहीं.
जो दूर चाहता है रहना वह भी है मेरा गैर नहीं.
मेरी नजरों में है महान जो मुझे देखकर रुक जाये.
मैं उसका भी आभारी हूं. जो मेरे आगे झुक जाये.
जब दे सकता मैं नहीं दाम क्यों करे मुझे कोई प्रणाम.
मैं बड़ा समझता हूं सबको करता हूं सबको राम-राम.
शायद मुझको कुछ मिल जाये आधारों और विचारों में.
मैं ढूंढ रहा हूं एक फूल धरती पर बिखरे खारों में.

क्षमा चाहूंगा, ये मेरे अपने विचार हैं और मैं अपने विचार किसी और पर थोपना नहीं चाहता. एक कवि होने के नाते मेरे लिए भी कल्पनाओं और सपनों से सजा एक सुंदर-सा संसार है, लेकिन क्या बताऊं यथार्थ मेरे केशों को पकड़ कर अपनी ठोस धरती पर पटक ही देता है. यथार्थ की धरती पर पटके जाने के बाद कुछ देर तक कराह लेता हूं, लेकिन फिर मेरा मन गौरैया पक्षी की भांति सबकुछ भूल कर फुदकने लगता है, नाचने लगता है. आकाशवाणी रांची के वरिष्ठ उद्घोषक के रूप में अपने यश का पताका लहरा चुके जाने माने गीतकार और कवि **कुमार बृजेंद्र** के शब्दों में गौरैया आत्मबल का प्रतीक है, जिसने बुरे से बुरे मौसम को भी ठेंगा दिखला देने की ठान ली है. कविता-कलम स्तंभ में उनकी यह रचना प्रस्तुत करते हुए मैं स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं.

फुदक फुदक कर नाचे गाना है,
गौरैया ने मन में ठाना है
मौसम को ठेंगा दिखलाना है.
गौरैया को दाना चुगना है,
चूजों पर भी ध्यान लगाना है,
तिनका-तिनका चोंच दबाना है,
उसे घोसला एक बनाना है..
फुदक फुदक कर नाचे गाना है
पंखों में अपने परवाज लिए,
और गले में सुन्दर साज लिए,
कंकरीट या लोहे का जंगल ,
गौरैया को गाना गाना है..
फुदक फुदक कर नाचे गाना है
गौरैया की शर्त बहुत भारी,
धरती में लेगी हिस्सेदारी,
गिद्धों से बाजों से लड़ना है,
गौरैया का यही फ़साना है...
फुदक फुदक कर नाचे गाना है
गौरैया की आशा गड़बड़ है,
गौरैया की भाषा गड़बड़ है,
सांपों को चौराहे लाने को,
गौरैया को बीन बजाना है...
फुदक फुदक कर नाचे गाना है
गौरैया ने मन में ठाना है,
मौसम को ठेंगा दिखाना है

आदरणीय कुमार बृजेंद्र जी सहृदय कवि और गीतकार तो हैं ही, काव्य मंचों की शान हैं. कवि सम्मेलन के सैकड़ों मंचों का कुशलता पूर्वक संचालन कर चुके हैं. किसी कवि को श्रोताओं के समक्ष इतने प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करते हैं कि श्रोताओं की उत्सुकता चरम पर पहुंच जाती है और मंच आह्लादित हो उठता है. प्रस्तुत गीत में भी इन्होंने जीवन का रोचक दर्शन प्रस्तुत किया है. कुछ ऐसे ही दर्शन की अनुभूति रांची की कवयित्री **संध्या उर्वशी** की इस रचना में भी होती है-

जो मिल गया, वो मिट्टी है
जो छूट गया वो सोना है
ज़िन्दगी में अक्सर
सबको इसी बात का रोना है
हम भागते हैं, उसके पीछे
जो हमारी कीमत नहीं जानता है
जो हासिल हो गया
कितना भी खास हो आम हो जाता है.
इसी भाग दौड़ का खेल
ज़िन्दगी का अफसाना है
ख्वाहिशें सबकी अधूरी हैं
जो है...
उससे विराग है
जो गुम है
उसमें सारे राग हैं
कुछ कम
कुछ ज्यादा
सबको किस्मत से शिकायत है
सच तो यह है, सब सोना है धीरे धीरे सब खोना है.

तो निष्कर्षतः हम सबों को जो मिल गया, उसे ही स्वीकार कर लेना चाहिए और जो नहीं मिल सका, उसकी चिंता में दुबले होने से कोई लाभ नहीं. जीवन के संग्राम में सभी विजयी हों, सभी मस्त हों. इसी कामना के साथ आपसे आज्ञा चाहूंगा. जय हिंद! जय झारखंड!!

रोजगार, प्रवास और अस्तित्व की समस्या

चौराहा

प्रमोद कुमार झा

अपनी रोटी की तलाश में इंसान कभी कहीं चला जाता है. पेट भर भोजन, तन ढकने को कपड़े और सर के ऊपर छत शुरुआत होती है. फिर आरंभ होता है बच्चों के जीवन यापन, शिक्षा -दीक्षा, बुजुर्गों की सेवा, परवरिश .....पर इन मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति के बाद उसका ध्यान जाता है अपने रीति-रिवाज, सांस्कृतिक विरासत और अपने जन्मस्थान की ओर. तलाश होने लगती है अपने जड़ की, अस्तित्व की और विरासत की! भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तरी हिस्से के लोग इस चक्र में विशाल संख्या में फंसे हैं, शामिल हैं. पुश्तैनी गांव में प्रायः इतनी जमीन नहीं है कि खेती बाड़ी कर गुजारा कर सके. अगर है भी तो खेती में सहयोग के लिए खेतिहर मजदूर पलायन कर चुके हैं पंजाब, कश्मीर या त्रिवेंद्रम की ओर जहां उन्हें तीन गुणा मजदूरी मिल जाती है, क्योंकि वहां के निवासी मज़दूर छोटी बड़ी फैक्ट्री में काम करते हैं या फिर खाड़ी के देशों में चले जाते हैं पैसा कमाने. ये मज़दूर कुछ दिन तक तो आते जाते रहते हैं, पर बहुत बड़ी तादाद में विस्थापन के शिकंजे में फंस जाते हैं! यह अलग बात है कि शहरी बनने और शहर की चमक दमक के चकाचौंध में वे अपनी पुश्तैनी जमीन औने पौने दाम में बेच कर परदेस में सौ गज ज़मीन के लिए दलालों के फेर में पड़कर जीवन भर पिसते रहते हैं. भगवान न करें, अगर कोई बीमारी घर में प्रवेश कर जाये तब तो कुछ कहने को बच ही नहीं जाता. सवाल है कि अगर गांव में खेत है भी तो खेती कैसे करें ?सिंचाई की नहर व्यव्यस्था खत्म है, खेतों में पानी पटाने के लिए डीजल का खर्च बहुत है, समय पर बीज मिलता नहीं, ब्लैक में खरीदना पड़ेगा, नकली बीजों की भरमार है, देसी गोबर खाद मिलना कठिन है, क्योंकि गोपालन लगभग खत्म हो चुका है. रासायनिक खाद महंगा तो है ही, समय पर मिलेगा भी नहीं, ब्लैक में अधिक कीमत पर खरीदना पड़ेगा. खेत की उर्वरा शक्ति खत्म होती जाती है, सो अलग! अगर खेती हो भी गयी, किसी तरह फसल काट भी ली तो कीमत इतनी कि सारा खर्च भी ऊपर न हो! तो एक बड़ा समूह पलायन को तैयार हो गया. फिर आते हैं कम पढ़े लिखे लोग, जिन्हें गांव में खेती, व्यापार अपमानजनक लगता है. भले ही शहर में किसी अपार्टमेंट में गार्ड बन लें! रोटी की ज़रूरत ही सबों को प्राथमिक रूप से विस्थापन का कारण है, पर थोड़ी निश्चिंतता होने के बाद अपने अस्तित्व की तलाश की चाह बढ़ने लगती है. पिछले साल 2023 में लगभग छियासठ हज़ार भारतीयों ने अमेरिका की नागरिकता ली. इसमें निन्यानवे प्रतिशत लोग निम्न मध्य वर्ग और मध्य वर्ग के पढ़े लिखे लोग हैं, जिन्हें अपने देश में उचित अवसर, रोजगार और मेहनताना नहीं मिल रहा. एक तरह से यूं कहिए कि देश उन्हें अपना देश छोड़कर जाने को मजबूर कर रहा है. देश में रोज डॉक्टरों की कमी का रोना रोया जाता है, पर जब डॉक्टर को रोजगार देने की बात होती है तो उन्हें सचिवालय के सेक्शन अफसर से भी नीचे समझा जाता है! इंग्लैंड. अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, जर्मनी, स्वीडन, फ्रांस की स्वास्थ्य व्यव्यस्था को चलाने में भारतीयों की बड़ी भूमिका है. ये अलग बात है कि शीघ्र ही वे भारतीयर मूलर के नाम से जाने जाएंगे! मानव शक्ति, योग्यता, क्षमता, अवसर, समृद्धि के चक्कर में संस्कृति, जड़, विरासत, परंपरा तो कमज़ोर पड़ती ही जायेगी न! भारत की विशालतम जनसंख्या भी तो मध्य पूर्व एशिया से ही यहां बसने आया था. भारतवासी भी तो इसी तरह फिजी, मॉरीशस, गुयाना, वेस्ट इंडीज, दक्षिण अफ्रीका गए थे कभी! विस्थापन सत्य है. अस्तित्व की तलाश और परंपरा की खोज भी इंसान करते रहने को अभिशप्त है! राहुल सांकृत्यायन, रामधारीसिंह दिनकर, भगवत शरण उपाध्याय सरीखे विद्वानों ने बहुत पहले इन विषयों पर लिखा है.

वैशाली का विश्व शांति स्तूप : अनुपम और अद्वितीय

यायावर

डॉ. जंगबहादुर पाण्डेय

यों तो वैशाली बिहार की राजधानी पटना से मात्र 40 किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित है, लेकिन 15 अप्रैल 2024 को आर एन कालेज हाजीपुर में रेणु की पुण्यतिथि के बहाने वैशाली जाने का अवसर मिला और इसे मैं अपना सौभाग्य ही मानता हूं. गौतम बुद्ध की उपदेश भूमि और महावीर की जन्मभूमि होने के कारण बिहार का वैशाली वैश्विक धरातल पर प्रतिष्ठित हो चुका है. वैशाली में बौद्ध कालीन अनेक स्तूप, मठ और मंदिर हैं, जो वैशाली की लोकप्रियता का संकेत दे रहे हैं. रामायण कालीन विशाल पुरी एवं बौद्ध कालीन वैशाली के रमणीय एवं नमनीय चैत्यों स्तूपों और मठ-मंदिरों की लोकप्रियता के संकेत आज भी उपलब्ध हैं. प्राचीन बौद्ध साहित्य के अनुसार वैशाली की चारों दिशाओं में दिग्बोधक चैत्य थे. कालांतर में चैत्य, समाधि, मंदिर और स्तूप परस्पर संबद्ध हो गये थे. अमरावती अभिलेख में स्तूप को चेतीय, महाचेतीय कहा गया है. बुद्ध काल के पूर्व वैदिक युग में चैत्यों और स्तूपों को देवालयों के रूप में मान्यता थी. वहीं वैदिक देवालय आगे चलकर मंदिरों में विकसित हो गये. मंदिरों के चारों ओर प्रदक्षिणा वीथी चैत्यों या स्तूपों में होती थी. अपने इष्ट या आराध्य की प्रदक्षिणा भारतीय संस्कृति में लोकप्रिय पूजा पद्धति मानी जाती है.

प्रदक्षिणा का मंत्र है:-

यानि कानि च पापानि जन्मांतरे कृतानि च.
तानि तानि निबंधानि, प्रदक्षिणे,पदे पदे.

वैशाली में अनेक स्तूप हैं-बुद्ध स्तूप, आनंद स्तूप, अशोक स्तूप, महावीर स्तूप आदि. लेकिन इन सभी स्तूपों में विश्व शांति स्तूप सर्वाधिक लोकप्रिय और महत्वपूर्ण है. वैशाली में विश्व शांति और जन कल्याण की भावना से फूजी गुरुजी की प्रेरणा से 71 वां विश्व का सबसे ऊंचा विश्व शांति स्तूप बनवाया गया है. इस नव निर्मित विश्व शांति स्तूप में बौद्ध स्थापत्य का आधुनिक निरूपण है. इसकी आधार शिला बिहार के तत्कालीन राज्यपाल डा. एआर किदवई के कर कमलों से 22 अक्टूबर 1983 को रखी गई थी. निर्माण कार्य पूरा होने पर 23 अक्टूबर 1996 को तत्कालीन राष्ट्रपति डा शंकर दयाल शर्मा ने इसका उद्घाटन किया. स्तूप पर चढ़ने के लिए 20 सीढ़ियां बनी हैं तथा ऊपर प्रदक्षिणा पथ बना है. प्रदक्षिणा पथ से सटी दीवारों के बीच बने खंडों में बुद्ध की स्वर्ण मूर्तियां विभिन्न मुद्राओं में बनी हैं.

स्तूप की ऊंचाई 125 फीट और व्यास 118 फीट है.बिहार में राजगीर के बाद यह दूसरा विश्व-शांति स्तूप है. बुद्ध को राजगीर और वैशाली अधिक प्रिय थे. विश्व शांति स्तूप अभिषेक पुष्करिणी के दक्षिण तट पर अवस्थित है.इससे आधुनिक वैशाली अधिक रमणीय हो गयी है और इससे पर्यटकों के आवागमन में वृद्धि हुई है. मैंने विश्व शांति स्तूप में विश्व मंगल की कामना की:-

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे संतु निरामयाः.
सर्वे भद्राणि पश्यंतु मां कश्चित् दुःख भाग भवेत्.

गधा बनाओ, माल कमाओ

नश्तर

सुधीर राघव

कच्छ का जंगल भी कभी हरा-भरा था. सभी जानवर धीरे-धीरे खुशहाली को ओर बढ़ रहे थे. मगर प्रगतिशील होना गधों को रास नहीं आया. उन्होंने नारा बुलंद किया कि प्रगति के नाम पर इंसानी संस्कार हम पर थोपे जा रहे हैं. हमारी बहु-बेटियों का चारित्रिक पतन किया जा रहा है. हमारी जाति में खच्चर पैदा हो रहे हैं. गधों को खत्म करने के लिए जंगल में खच्चर जिहाद चलाया जा रहा है. राजा शेर इस साजिश में शामिल हैं. हमें जंगल में अपना धर्म, अपनी संस्कृति और अपना राजा चाहिए. गधों की बात को गधों की बात मानकर सारे जानवरों ने अनसुना कर दिया. मगर घूमते-फिरते यह बात जब सबसे बड़े धनपशु और मुनाफाखोर सेठ दुलीचंद सुनामी के कानों तक पहुंची तो उसके दिमाग की बत्ती जली. सेठ सुनामी ने तय किया कि कच्छ के जंगल का राजा गधा ही होगा. ... क्योंकि शेर को उल्लू बनाना मुश्किल है मगर गधे को गधा बनाना नहीं. वह पहले से गधा है. इसलिए गधे को गधा बनाकर जंगल से माल कमाया जा सकता है और सुनामी का फायदा ही फायदा.

बस फिर क्या था? सेठ सुनामी की कंपनी केलोबेलो के सारे न्यूज़ चैनलों ने गधे का प्रचार शुरू कर दिया. कहा गया कि सिर्फ गधा ही जंगल के प्राचीन धर्म, संस्कृति और चरित्र को बचा सकता है. शिगूफा छोड़ा गया कि शेर अपने लोगों के जरिए जंगल के फल स्विस बैंक में जमा करा रहा. गधा सत्ता में आएगा तो ये सारे काले फल स्विस बैंक से वापस लाकर जानवरों में बांट देगा. चैनलों के इस प्रचार का खूब असर हुआ. गधा भारी बहुमत से चुनाव जीत गया और शेर हार गया.

गधे ने जंगल का राजा बनते ही आर्थिक सुधार और श्रम सुधार का नारा बुलंद किया. उसने जंगल के सारे संसाधन और बैंकों का पैसा सेठ सुनामी के नाम किया. तब केलोबेलो कंपनी के सारे न्यूज़ चैनलों ने इसे सबसे बड़ा आर्थिक सुधार बताया. इतना ही नहीं, गधे ने सेठ को छूट दी कि वह जंगल के जानवरों से जितने घंटे चाहे काम ले. उसने मजदूर जानवरों के लिए पीएफ, ग्रेच्युटी जैसे सामाजिक सुरक्षा के उपायों को गैर जरूरी बना दिया. केलोबेलो कंपनी के सारे न्यूज़ चैनलों ने इन्हें जंगल के सबसे बड़े श्रम सुधार बताया.

बस फिर क्या था, सेठ सुनामी ने रण के हरे भरे जंगल का इतना दोहन किया कि पूरा जंगल खारे रेगिस्तान में बदल गया. शेर और काफी जानवर कच्छ का जंगल छोड़कर गिरि के जंगलों में चले गये. कच्छ में सिर्फ लोमड़ियां, काले हिरण और सियार ही बचे थे, जिन पर गधे की हुकूमत थी. कच्छ का जंगल लूट लेने के बाद सेठ सुनामी की नजर पूरे देश पर थी. उसने तय किया कि अब गधा पूरे देश का राजा बनेगा...! लोग मानते हैं कि ऐसा ही हुआ.

अर्जुन दास की कलाकृतियों में हैं भक्ति के रंग

कला-संवाद

मनोज कुमार कपरदार

यदि हम कला को उसके सांस्कृतिक निहितार्थों से अलग करते हैं तो हम इस बात से सहमत हो सकते हैं कि कला का संबंध अक्सर सौंदर्य की अभिव्यक्ति से होता है. पूरे इतिहास में शायद ही सौंदर्य के उत्पादन के अलावा किसी अन्य स्पष्ट उद्देश्य के लिए बहुत अधिक कलाकृतियां बनाई गई हों. कलाकृतियों को निहारा जाता है और उनकी प्रशंसा की जाती है. ये जितनी लुभावनी होती हैं, हमें उतनी ही भावुक भी कर सकती हैं. हमारे द्वारा कला की सराहना करना स्वभाविक है, क्योंकि यह हमें सूचित करती है, मनोरंजन करती है और बेहतर बनाती है, इस प्रक्रिया में यह हमें एक समाज के रूप में एक-दूजे के करीब लाती है. बेशक, यह सब इतना आसान नहीं होता है. यहां आदि-अनादि काल से परम्पराओं का संचरण होता आया है. भारत के गुफा कालीन चित्र, हड़प्पा, मोहन जोदड़ो सभ्यता से प्राप्त अद्भुत सांस्कृतिक वैभव के साक्ष्य हैं. किसी भी सभ्यता की पहचान उसकी विशिष्ट संस्कृति होती है. ऐसी ही संस्कृति भारतीय सनातन संस्कृति के संदर्भ में देखने को मिलती है. कला परंपरा के स्रोत इनके सांस्कृतिक उत्सव में आज भी वैसे ही देखने को मिलते हैं. भारतीय कला-दर्शन केवल सौंदर्य को महत्व नहीं देता. ईश्वरीय चेतना ही सौंदर्य को प्राणवान बनाती है- यह उसकी धारणा है. तभी तो अर्जुन दास जैसे कलकार रंगों और रेखाओं से सौंदर्य की सृष्टि करते हैं और फिर अन्तस् के भावों में उसे संजोते हैं. जमशेदपुर के अर्जुन दास देश के सुप्रसिद्ध और सर्वमान्य कलाकार हैं, जो भक्ति के रस में पगे बनारस, बुद्ध और प्रकृति के विषय पर पेंटिंग करते हैं. इनकी पेंटिंग ऑनलाइन बिकती है. साथ ही विदेशों जैसे लंदन, अमेरिका और दुबई में भी अर्जुन दास की पेंटिंग की ज्यादा डिमांड है. इसी वर्ष अयोध्या में आयोजित राम लला की प्राण प्रतिष्ठा में अर्जुन दास झारखंड के एक ऐसे कलाकार थे, जिन्हें अयोध्या में अमृत महोत्सव और प्राण प्रतिष्ठा में लाइव पेंटिंग के लिए 15 से 23 जनवरी तक के लिए आमंत्रित किया गया था. अर्जुन दास को फिल्मी कलाकारों जैसे अमिताभ बच्चन, अजय देवगन, सोनू सूद, सोनू निगम, हेमा मालिनी जैसी कई हस्तियों के आलावा देश के सबसे बड़े उद्योगपति रतन टाटा से भी मिलने का मौका मिला है. मुंबई में इंडिया आर्ट फेस्टिवल, जहांगीर आर्ट गैलरी, दिल्ली में इंडिया हैबिडेट सेंटर, नागपुर में जवाहर दारदा आर्ट गैलरी के अलावे विदेशों में भी अर्जुन दास की पेंटिंग की प्रदर्शिनी लग चुकी है. इनकी अधिकांश कलाकृतियां राम और कृष्ण पर आधारित ही होती हैं. इनकी पेंटिंग में कृष्ण के चित्र हमेशा हरे रंग से ही उकेरी जाती है. इस तरह की कलाकृतियों से इन्हें आत्मसुख मिलता है. इनमें बचपन से ही कला के प्रति झुकाव रहा. कभी किसी कला महाविद्यालय से इन्होंने कला का ज्ञान नहीं लिया, पर जमशेदपुर में आयोजित कला शिविरों में बाहर से आये कलाकारों से प्रेरित होकर नियमित पेंटिंग का प्रयास करते रहे, और आज इनकी कला की चर्चा लोग मुक्त कंठ से करते हैं.

नीरज नीर

विगत कई महीनों से झारखंड की साहित्यिक-सांस्कृतिक गतिविधियों की एक मासिक रिपोर्ट आखर के महीने के आखिरी अंक में प्रकाशित होती आयी है. इसी कड़ी में पेश है अप्रैल माह की गतिविधियों का लेखा जोखा...

राहत भरा रहा साहित्य का यह ठंडा कोना

मासिक रिपोर्ट

नमक जले पर घावों पे घाव का मौसम
लो आ गया फिर देखो चुनाव का मौसम

चुनाव का मौसम भारत में गहमा-गहमी के साथ साथ गरमा गरमी का भी मौसम होता है. राजनैतिक माहौल में गरमी तो बढ़ती ही है, राजनैतिक दलों के समर्थकों में भी बहस कड़वाहट की हद तक बढ़ जाती है. ऐसे में अगर मौसम में भी गरमी हो तो कहना ही क्या? आरोप और प्रत्यारोपों का सिलसिला व्यक्तिगत आक्षेपों और गाली-गलौज की शक्ल ले लेता है. आजकल टीवी चैनल वालों ने इस माहौल को और भी ज्यादा विषाक्त करने में कोई कोर-कसर नहीं रख छोड़ी है. इस बीच अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी युद्ध के काले मेघ यदा-कदा घने हो जा रहे हैं. ऐसा प्रतीत होता है कि संसार बस बारूद के मुहाने पर बैठा है जो कि कभी भी फट सकता है और कुछ लोग तो बस रोज इसके फटने की प्रतीक्षा ही कर रहे हैं ऐसे तनावपूर्ण एवं बेहिस माहौल में साहित्य एक ऐसे ठंडे कोने की तरह दिखाई देता है, जहां दो पल चैन की सांस ली जा सकती है.

नव वर्ष के स्वागत में कवि सम्मेलन

अप्रैल का महीना साहित्य के लिहाज से बहुत कई महत्वपूर्ण कार्यक्रमों का साक्षी रहा. 5 अप्रैल को रांची के प्रेस क्लब में संस्कृति संवर्धन समन्वय समिति की ओर से भारतीय नव वर्ष के अवसर एक कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसका संयोजन राजीव थेपरा ने किया. इस सम्मेलन में रांची शहर के कई कवियों ने विशेषतः नव वर्ष के उपलक्ष्य में अपनी कविताओं का पाठ किया. कार्यक्रम में समिति के अध्यक्ष और राजधानी के प्रख्यात सर्जन डॉ एमपी सिंह, पूनम आनंद, राजीव थेपड़ा, डॉ राजश्री जयंती, संगीता सहाय, डॉ. सुरिन्दर कौर नीलम, चंद्रिका ठाकुर देशदीप, नीरज नीर, डॉ. राजश्री जयंती, शशांक भारद्वाज, नरेश बंका, राजीव थेपड़ा, संगीता कुजारा टॉक, सत्या शर्मा कीर्ति, नंदा पांडे, अजय कुमार, सदानंद सिंह यादव, मनोज कुमार झा, बिंदु प्रसाद रिद्धिमा, सुषमा झा, सीमा चंद्रिका तिवारी, डॉ नन्दनी कुमारी, संध्या चौधरी उर्वशी, सोनल थेपड़ा, रूपा कुमारी और अंशिता सिन्हा आदि शरीक हुए और एक से बढ़कर एक काव्य पाठ कर अंत तक श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया.

इन पुस्तकों का हुआ लोकार्पण

रांची में ही 21 अप्रैल को प्रभात प्रकाशन के सभागार में वरिष्ठ लेखक एवं प्रबुद्ध वामपंथी विचारक विदयाभूषण जी द्वारा लिखित उनकी पुस्तक "बदलाव के तिराहे पर झारखंड" पुस्तक का लोकार्पण किया गया. इस अवसर पर कई वक्ताओं ने पुस्तक की विषय-वस्तु को लेकर झारखंड की सामाजिक, राजनतिक और आर्थिक स्थितियों का आकलन प्रस्तुत किया एवं कहा कि यह पुस्तक झारखंड के अतीत के साथ ही वर्तमान परिप्रेक्ष्य को समझने में अत्यंत मददगार सिद्ध होगी. यह पुस्तक प्रभात प्रकाशन के द्वारा प्रकाशित हुई है.

एक ऐसी ही राजनैतिक पृष्ठ भूमि की अन्य पुस्तक का भी लोकार्पण का साक्षी रांची प्रेस क्लब बना. अवसर था झारखंड विकास न्यास द्वारा आयोजित बसंत हेतमसरिया द्वारा लिखित पुस्तक "1940 विश्वयुद्ध और बढ़ते अलगाव के साये में स्वतंत्रता आंदोलन के लोकार्पण का. लोकार्पण के मुख्य अतिथि थे, राज्यसभा के उपसभापति हरिवंश. यह पुस्तक किताब घर प्रकाशन के द्वारा प्रकाशित हुई. कार्यक्रम में विनोबाभावे विवि के डीन डॉ. मिथिलेश सिंह, वरिष्ठ संपादक विष्णु राजगढ़िया, विनय सरावगी, आरके चौधरी, एलआर सैनी, प्रदीप तुलस्यान, किशोर मंत्री, अरुण बुधिया, सुशील उरांव, प्रभाकर अग्रवाल, प्रकाश देवकुलिश, पंकज मित्र, मुकेश तनेजा, शरदेन्दू नारायण, वीके गढयाण, समेत रांची विवि, विनोबा भावे विवि और बीआईटी सिंदरी के प्रोफेसर, लेक्चरर सहित काफी संख्या में शहर के गणमान्य लोग मौजूद थे.

तीन दिवसीय नाट्य महोत्सव

रांची में इधर के दिनों में नाटकों से जुड़ी गतिविधियां भी लगातार देखने को मिल रही है. मार्च महीने में जिस आड्रे हाउस में नाट्य समारोह का आयोजन किया गया था उसी आड्रे हाउस में अप्रैल महीने में भी तीन दिवसीय नाट्य महोत्सव का आयोजन किया गया. यह समारोह नाट्य संस्था मैट्रिक्स (स्टेप फॉर ह्यूमैनिटी), संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार और कला-संस्कृति विभाग झारखंड सरकार के सहयोग से सम्पन्न हुआ. कार्यक्रम में पहले दिन वसुंधरा आर्ट्स की ओर से नाटक दुश्मन उर्फ सैया मगन पहलवानी का मंचन किया गया. इसका निर्देशन दीपक चौधरी ने किया.

आज यहां कार्यक्रम

साहित्यिक संस्था शब्दकार ने अप्रैल माह की बैठक गर्मी को देखते हुए ऑनलाइन रखनी तय की है. रविवार 28 अप्रैल को शाम चार बजे से ज़ूम पर गोष्ठी होनी है. गोष्ठी में शामिल होने के लिए संगीता कुजारा टाक, रश्मि शर्मा, रेणु बाला धार, पुष्पा पाण्डेय, मनोज कुमार झा, स्मिता, सुनीता अग्रवाल, अर्पणा सिंह, जय माला, सत्या शर्मा, रीता गुप्ता, प्रतिभा मिश्र, नंदा पांडेय, नन्दनी प्रनय, कंचन सिंह आदि ने अपनी स्वीकृति दी है.

ठहाके के वाजिब वजह

जब चारों तरफ ढूंढने से भी हंसने की कोई वाजिब वजह नहीं मिलती हो, गुस्सा, नफरत, हिंसा जैसे नकारात्मक विचारों ने समाज को घेर रखा हो, वैसे में हंसने की कोई वाजिब वजह ढूंढ लेना भी बहुत बड़ी और जरूरी बात हो जाती है. रांची में कुछ लोग नियमित रूप से ऐसा कर रहे हैं, जो कि बहुत दिलचस्प तो है ही आनंददायक भी है. रांची रंगमंच का तेरहवां मासिक ठहाका मिलन हटिया में वरिष्ठ रंगकर्मी अनिल ठाकुर सुमन के आवास पर संपन्न हुआ. इस अवसर पर रंगकर्मियों ने खूब ठहाके लगाये और ठहाकों के बीच ही रांची रंगमंच को तकनीकी दृष्टि से समृद्ध करने के लिये विचार विमर्श भी हुआ. डॉ सुशील अंकन ने कहा कि अभी भी आम तौर पर रांची रंगमंच की प्रस्तुतियों में ध्वनि और प्रकाश की समस्या देखने को मिलती है. कुछ विशेष प्रस्तुतियों को यदि छोड़ दें तो सामान्य तौर पर यहां की नाट्य संस्थाएं ध्वनि विस्तार यंत्रों और मंचीय प्रकाश उपकरणों की तकनीकी जानकारी से पूरी तरह परिचित नहीं है. अतः इस दिशा में कार्यशालाएं आदि करने की आवश्यकता है.

जमशेदपुर में युवा रचानाकार कार्यशाला

27 अप्रैल को जमशेदपुर में प्रत्येक वर्ष की भांति सिंहभूम जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन / तुलसी भवन द्वारा संस्थान के मुख्य सभागार में हिन्दी रचनाधर्मिता पर आधारित एकदिवसीय कार्यशाला 'युवा रचनाकार' आयोजित की गई. कार्यक्रम में सुभाष चन्द्र मुनका, प्रकाश मेहता, प्रसेनजित तिवारी, प्रभाकर सिंह, माधवी उपाध्याय, रामनन्दन प्रसाद, शेषनाथ सिंह 'शरद', ब्रजेन्द्रनाथ मिश्र, अरुण कुमार तिवारी, दिव्येन्दु त्रिपाठी, वसंत जमशेदपुरी, संजय मिश्र, सुरेश चन्द्र झा आदि के अलावा जमेशदपुर के 20 विद्यालयों के छात्र-छात्राओं, उनके शिक्षकगण तथा नगर के ख्यातिलब्ध साहित्यकारों ने भाग लिया.

सूचना सहयोग : माधवी उपाध्याय, राजीव थेपड़ा.

कहानी

ग्रैंड पेरेंट्स डे

राज लक्ष्मी सहाय

स्कूल में ग्रैंड पेरेंट्स डे मनाया गया. पहली बार ऐसा हुआ था. हॉल के एक कोने में खड़ी थी मैं. सरसरी निगाह डाली. कुर्सियों पर बच्चों के दादा-दादी, नान-नानी बैठे थे. पके केश, गंजे सर, आंखों पर चश्मा, कुछ के कानों में मशीन लगी, कांपते हाथ, हिलती गर्दन, पोपले मुहं, पिचके गाल फिर भी पूरे सजे-धजे. हॉल के आखिरी हिस्से पर नजर गई. व्हील चेयरस पर बैठे कुछ वृद्ध थे. इस हॉल में ऐसे अनूठे दर्शक मैंने कभी नही देखें. हमेशा तो बच्चों के मम्मी-पापा ही आते हैं. मंच के ठीक सामने जरीदार रस्सियों से घिरी जगह. मखमली सोफे लगे थे. मुझे लगा शायद मुख्य और खास अतिथियों के लिए व्यवस्था है. तभी कुछ अति वृद्धों को स्कूली बच्चे हाथ पकड़कर संभलते हुए लेकर आए और विशेष रूप से सजाए उन आसनों पर बिठा दिया. तालियां गड़गड़ा रही थीं. शहर के वृद्धाश्रम से आमंत्रित बुजुर्ग थे ये. स्कूल के बच्चों के दादा, नाना तो नहीं थे ये. परंतु अनजान अपरिचित नन्हीं बाहों के स्पर्श से अभिभूत मुस्कुराते हुए रो रहे थे. अपने अपने घरों का बोझ ढोते हुए खुद बोझ बन गए. इस बोझ को कौन उठाए?

"वसुधैव कुटुम्बकम" दर्शन के पाश में बंधे चले आए थे वृद्धाश्रम से. कौन जाने किस बच्चे में उनका अपना चुन्नू और किस बच्ची में अपनी मुन्नी की झलक दिख जाए. इनके भी पोते-पोतियां होंगे, लेकिन कब आखिरी बार देखा था याद नहीं. सोफे पर बैठते ही गोपाल बाबू की आंखें बरस पड़ी. इतने वृद्ध व्यक्ति को हिचकियां लेते आज तक मैंने नहीं देखा था. उनके साथ् बैठे एक अन्य बुजुर्ग ने उनका हाथ अपनी पूरी ताकत से थाम रखा था. दोनों की पूरी देह कांप रहा था. एक बच्ची के हाथ में पानी का ग्लास मैंने भेज दिया. कांपते दोनों हाथों से उन्होंने ग्लास पकड़ा और धीरे-धीरे पानी पीने लगे. सचमुच तब मैंने हिमालय को रोते देखा था. जीवन के अनुभवों की परतों से जमी चट्टान को दरकतें साक्षात देखा था मैंने. न जाने मन कैसा हो गया. मंच के रंगारंग कार्यक्रम को छोड़ मेरा सारा ध्यान इन्हीं अद्भूत दर्शकों ने कैद कर रखा था.

दो रोज पहले वृद्धाश्रम में "तारें जमीं पर" सिनेमा दिखाया गया था. गोपाल बाबू, तिवारी जी, पटेल साहब, मिस्टर सेराफिन सब रोये थे. जबरदस्ती हास्टल भेजे गए बच्चे की व्यथा ने सबको पिघलाया था. जबरदस्ती ठेल-ठेल कर घर से बाहर भेजा जाना कितना दुखदायी है. फिल्म के गाने "यूं तो मैं घबराता नहीं..." के साथ-साथ कॉमन रूम में सिसकियों के तार बज रहे थे. सितार का सबसे भारी स्वर हावी. गोपाल बाबू के मन में बार- बार बात मन में कौंध रही थी. "क्या इतना बुरा हूं मैं"? उस रात खाना हलक से नहीं उतरा गोपाल बाबू के. करवटें बदलते रहे नींद न आई. घड़ी पर नजर पड़ी रात के दो बज रहे थे. उठकर अपनी डायरी निकाली और कुर्सी पर बैठ गए. टेबल पर रखे लैंप को जलाया. कलम उठाया तो लिखते चले गए. उसी गाने की तर्ज पर-

" यूं तो मैं घबराता नहीं/ पर अकेले से डरता हूं सदा / क्या सच ये नहीं बबुआ / क्या तुमको पता था न बबुआ / प्रातः किरण से भी पहले/ मुख तेरा चूमकर /होती थी सुबह मेरी /और आंचल की छांव तले मां की / लोरी की थपकी से/ ढलती तेरी सांझ/ क्या सच ये नहीं बबुआ / दफ्तर से आते ही/ पीठ पर बिठा तुझे/ कितना हंसाया तुझे/ और मां से छिपाकर / कटारी में चाय डाल/ फूंक-फूंक पिलाया था तुम्हें/ क्या सच ये नहीं बबुआ....लिखते-लिखते कांपने लगी उंगलियां. मेज पर सर टिका कर आंखें बंद कर लीं. और तभी आश्रम का एक कर्मचारी उन्हें उठाने लगा था. होले से पीठ पर हाथ् रखा था राघव ने- "गोपाल दादा आप इतनी जल्दी उठ गए?

"मैं सोया ही कहां राघव बेटा ... सर भारी-भारी सा है. एक प्याली चाय मिलेगी?

क्यों नहीं, अभी लाता हूं चाय. लेकिन जल्दी नहा धोकर तैयार हो जाइये.

"आखिर क्यों भला?"

एक स्कूल में इस बार दादा दादी दिवस मना रहे हैं. आप सब को भी निमंत्रण है.

धुले-धुले कपड़े पहन सब बुजुर्ग उमंग से लबरेज हो पहुंचे थे स्कूल. एक-एक बुजूर्ग कों बच्चों ने माला पहनाया. संस्कार के पाठ का यह हिस्सा अच्छा लगा था गोपाल बाबू को. अपने सामने माला लिये खड़ी छोटी सी बच्ची से पूछा-

"क्या नाम है मुन्नी ?"

"सरला"

"तुम्हारे दादा भी आए हैं यहां?"

"नहीं! वह यहां नहीं रहते."

"कहां रहते है फिर?" **(क्रमशः)**

आत्मसंघर्ष से उपजी सामाजिक सरोकार की कविताएं

समीक्षा

अशोक सिंह

पुस्तक : 'अंतिम खत पिता का'
(कविता संग्रह)
लेखक : अमरेन्द्र सुमन
प्रकाशक : न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशन दिल्ली
मूल्य-250 रुपए/ पृष्ठ -134

समकालीन कविता में भाषायी मुहावरे और मुहावरेदार भाषायी काव्य-कौशल हमारे समय में बहुत कम ही कवियों में देखा सुना जा रहा है. उन्हीं थोड़े बहुत कवियों में एक नाम हमारे समय और शहर (दुमका) के मित्र अमरेंद्र सुमन जी का भी है, जो अपनी कविताओं में भाषाई मुहावरे और मुहावरेदार भाषा के लिए जाने जाते हैं. हां, या अलग बात है कि कहीं-कहीं भाषायी मुहावरे गढ़ने के चक्कर में वे इतना उलझ जाते हैं कि कविता बनते-बनते बिगड़ जाती है. यह बात हम उनके पहले कविता संग्रह 'अंतिम खत पिता का' से गुजरते हुए कह सकते हैं.

अमरेंद्र सुमन की कविताओं को पढ़ते सुनते हमेशा ऐसा लगा कि वह अपने समय के ऐसे प्रखर प्रवक्ता हैं, जिनकी कविताएं आत्मसंघर्ष से उपजती हैं और सामाजिक सरोकार का हिस्सा बन जाती हैं. आसपास घटित घटनाओं और व्यक्तिगत व पारिवारिक संघर्षों से उपजी मनोदशाओं को वह बड़ी सरलता वह सहजता से अभिव्यक्त करते हैं. उनकी कविताओं की परिधि में घर परिवार से लेकर समाज और देश काल तक की बनती-बिगड़ती परिस्थितियां शामिल होती हैं. जिसमें कहीं मां तो कहीं पिता और कहीं पत्नी व बच्चे और उससे जुड़ी स्मृतियां हैं, उनके स्वप्न हैं, उसके टूटने बिखरने की व्यथा कथा है, तो कहीं समाज में हाशिए पर रह रहे दलित आदिवासी समुदाय का दुख-दर्द. भाषा, भाव, शिल्प व बिम्ब की दृष्टि से अगर उनकी कविताओं को देखें परखें तो समकालीन कविता का जो आज शिल्प है उस कसौटी पर तो कुछ हद तक उनकी कविताएं खरी उतरती हैं परंतु भाषा की दृष्टि से कहीं-कहीं कविताओं में बोझिलता आ गई है. बड़े-बड़े वाक्यों और शब्दों की अधिकता भी कविता को सपाट बना देती है. कवि को शब्दों के अपव्यय से बचना होगा और कम से कम शब्दों में बड़ी बात कहने का कौशल विकसित करना होगा.

बेशक कुछ कविताएं ऐसी भी हैं जो छोटे-छोटे वाक्यों में गहरी समझ व संवेदना के साथ कही गई हैं लेकिन ऐसी कविताओं की संख्या कम हैं. एक कविता की कुछ पंक्तियां देखिए जो अपनी लघुता में भी व्यापकता समेटे हुई है. 'मां है तो' और 'बेटियां' शीर्षक कविता की छोटी-छोटी पंक्तियां यहां देखी जा सकती हैं. कवि कहता है- मां है तो/धूप दीप अगरबत्ती अमावस्या पूर्णमासी है/मां है तो मन में ही मथुरा वृंदावन काशी है. इसी तरह बेटियां कविता में भी कवि कहता है- किसी ने इन्हें ईश्वर का वरदान कहा/किसी ने कहा घर की रोशनदान होती हैं बेटियां/तो किसी ने इन्हें सृष्टि का समाधान कहा.

वैसे अमरेंद्र सुमन की कविताओं के कई रंग हैं जो हमें आकर्षित भी करते हैं. कहीं समय समाज की सामाजिक राजनीतिक विडंबनाओं का स्याह पक्ष है, तो कहीं प्रेम की लालिमा और कहीं पलाश फूलों में लिपटी आदिवासीयत की आदिम गंध. कहीं दया और करुणा में भींगी मानवता तो कहीं प्रतिरोध की मुखरता. विविधता से भरी अमरेंद्र सुमन की कविताएं एक ऐसा कोलाज रचती हैं, जिसमें जीवन के सुख-दुख, हर्ष विषाद से लेकर घृणा और प्रेम का विविध पक्ष अपने-अपने तरीके से अपनी उपस्थिति दर्ज कराते अपने समय में हस्तक्षेप करते नजर आते हैं. कविता का सामाजिक सरोकार भी यही है और लेखक का लेखकीय दायित्व भी. जिसमें अमरेंद्र सुमन की रचनात्मक पक्षधरता स्पष्ट दिखाई देती है. कवि अपनी एक कविता 'जनप्रतिनिधि' में कहता है कि- वह कोई जादूगर नहीं/कोई अवतारी पुरुष नहीं/कोई संत फकीर दरवेश नहीं/कि वह जब जो कहे/मर मिटने को तैयार हों हम हर वक्त.

संग्रह को पढ़ते हुए हमने देखा कि उनकी कविताओं में कवि के जीवानुभवों में विविधता भी है और व्यापकता भी. लेकिन एक साथ बहुत कुछ कह जाने की हड़बड़ाहट कविता को कमजोर कर देती है और उसमें सहजता की जगह दूरूहता व जटिलता आ जाती है. कहा गया है कि कविता सांकेतिक भावाभिव्यक्ति है जो कलात्मकता के साथ कही जाती है. तभी उसमें काव्यात्मकता उभरती है. अमरेंद्र सुमन की कविताओं में इसका अभाव खटकता है.

उनके इस पहले कविता संग्रह में अन्य कवियों की तरह बेशक कुछ कमजोर कविताएं तो हैं जिसके मोह से कवि को बचाना चाहिए था. हां, कई अच्छी और महत्वपूर्ण कविताएं भी हैं, जो ध्यान आकृष्ट करती हैं. पुस्तक के नामकरण से जुड़ी कविता 'अंतिम खत पिता का' बेशक संग्रह की कुछ एक महत्वपूर्ण कविताओं में से एक है, जिसमें कवि की संवेदना, पिता के प्रति गहरी आस्था और अपने जीवन संघर्ष में उनके स्नेह सान्निध्य व मार्गदर्शन का मार्मिक चित्रण है.

कुल मिलाकर अमरेंद्र सुमन का यह पहला कविता संग्रह 'अंतिम खत पिता का' अपनी महत्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज कराता इस बात के लिए हमें आश्वस्त करता है कि कवि के पास वैचारिक समृद्धि के साथ-साथ लंबी काव्य-यात्रा का अनुभव है, जो संभवतं अगले संग्रह में ज्यादा परिपक्व को होकर हमारे सामने आएगा.

कविताएं

मेरे पास आओ ना

डॉ मयंक मुरारी

मेरे पास आओ ना,
मैं चाहता हूं, तुम
पूरा एक दिन साथ रहो
समीप, पर थोड़ा दूर
तुम्हें अपलक निहारते रहूं,
और आंख का पानी सूख जाए.
अपनी एक चीज रखने
की अनुमति दो.
बस एक पल का
तुम्हारे साथ यादों का सफर
जिसमें अपने को भूला दूं
और तुम कभी फिर न मिलो.
तुम आओगी न मिलने
जीवन से फुर्सत के कुछ पल चुरा
तेरी खुशबू की गोद में
सर रखकर आसमान निहारते
उसी अनंत में मैं खो जाऊं
तुम से दूर सदा के लिए.
मैं इंतजार करुंगा
समय की सांध्यवेला में
हर चेहरे में तुझे महसूस करते
खुद के स्वर में तुझे ढूंढ़ते
कदमों की थिरक में
प्रेम के बनते पदचिन्ह के साथ.
केवल एक बार आ जाना
मेरे अस्तित्व के पास
और, सिर्फ मुस्कुरा देना
मैं यह समझ जाऊंगा
तुम मेरे साथ हो
जीवन के अंतिम पहर तक.

(जैसे जीवन और मृत्यु पल भर का खेल है वैसे ही प्रेम भी क्षणिक होता है. परंतु इसका प्रभाव अमिट होता है. इसके लिए संपूर्ण अस्तित्व, अनंत काल और हरेक शिखर सफलता को छोड़ा जा सकता है. ऐसी स्थिति में व्यक्ति अपने लिए कुछ नहीं चाहता है. बस वह जिसे चाहता है, मानता है और पूछता है, उसकी खुशी, उसके विकास तथा उसकी अच्छाई की चिंता रहती है.)

कारीगर

प्रकाश देवकुलिश

खुट खुट खट खट खट खटाक खटाक
निरंतर
बस अकेले
जैसे साधक
अंगुलियों पर फेर रहा हो
माला के दाने,
रुद्राक्ष की लकड़ी पर
अंगुली की ठोकर जैसी
पड़ रही है – एक एक कर
कांटी पर हथौड़ी की चोट .
काठ से काठ जुड़ता जा रहा है
और बाईस वर्ष का कर्मयोगी
सृजित करता जा रहा है आकार
जैसे कला और मेहनत
चिढ़ा रही हो मशीनों को
खोल रही हो
फर्नीचर के बड़े – बड़े शो-रूमों के भेद.
पहले तीन आये
फिर रह गए दो
और अब बस अकेला शाहरुख .
कारीगर शाहरुख के हाथों बन जाती है
राधाकृष्ण, शिव पार्वती
की पोशाक रखने की जगह
रंदे, कांटी और हथौड़ी
की अनवरत ध्वनि
अवस्थित हो जाती है निष्कंप ज्योति सी.
दिन भर का निर्विकार चेहरा
एक बार शाम में मुसकाता है
और चैनलों पर दौड़ता दराज
खिलखिला उठता है
जैसे हुनर ने दे दी हो चैलेंज
जैसे मेहनत ने खिला दिया हो फूल.

मर्यादा

राजेश पाठक

आंखों में अश्रु प्रवाह लिए
कुछ आह लिए कुछ वाह लिए
चल पड़ता जब निर्जन पथ पर
दिख जाता है सबसे हटकर.
यह जगत प्रेम व माया है
हरशय सबको भरमाया है
है शनि-राहु की छाया भी
इस पल उस पल टकराया भी.
पर होते जो जग में प्रवीण
स्व संबल पर करते यकीन
गम घटा छांट वे जाते हैं
जो बचा बांट वे जाते हैं.
रखते न जरुरत से ज्यादा
वे बांट रहे आधा-आधा
इसमें भी गर आई बाधा
सब छोड़ बचा ली मर्यादा.

संयोजन : चेतना झा, डिजाइनिंग - खुशबू कुमारी

आईपीएल का यह सीजन रोमांच से भरपूर है, इस सीजन में कई रिकॉर्ड बन और टूट रहे हैं

आईपीएल 2024 : रनों की हो रही बारिश, टूट रहे रिकॉर्ड, पंजाब के नाम एक नया कीर्तिमान

राजेश सिंह । रांची

इंडियन प्रीमियर लीग के 17वें सीजन में रन की बारिश हो रही है. बैटर लगातार धमाल मचा रहे हैं. सबसे महंगे बिकने वाले बॉलर भी काफी महंगे साबित हो रहे हैं. कुल मिलाकर आईपीएल का यह सीजन रोमांच से भरपूर है. इस सीजन में कई रिकॉर्ड बन और टूट रहे हैं. इस सीजन में हैदराबाद ने टी-20 में सबसे ज्यादा रन के अपने ही रिकॉर्ड को तोड़ 287 रन का स्कोर खड़ा कर दिया. वहीं शुक्रवार को तो गजब का मुकाबला देखने को मिला. शुक्रवार को पंजाब और कोलकाता के बीच ईडन गार्डन्स में एक अहम मुकाबला खेला गया. पहले बल्लेबाजी करते हुये कोलकाता ने 261 रनों का विशाल स्कोर खड़ा कर दिया. पंजाब को जीत के लिए 262 रनों की दरकार थी. यह लक्ष्य असंभव सा नजर आ रहा था, मगर पंजाब के बल्लेबाजों ने इस बड़े लक्ष्य को भी बौना साबित कर दिया. पंजाब ने यह मुकाबला 8 गेंद बाकी रहते 8 विकेट से जीत लिया. इस मैच में भी एक नया कीर्तिमान बना. टी20 क्रिकेट और आईपीएल के इतिहास का यह सबसे सफल रनचेज रहा. मौजूदा सीजन में पंजाब किंग्स की यह 9 मैचों में तीसरी जीत रही. दूसरी तरफ केकेआर की आठ मैचों में यह तीसरी हार रही. पंजाब किंग्स की ऐतिहासिक जीत के हीरो जॉनी बेयरस्टो रहे और शशांक सिंह रहे. बेयरस्टो ने 48 गेंदों पर नाबाद 108 रन बनाए, जिसमें 9 छक्के और आठ चौके शामिल थे. वहीं तीसरे नंबर पर उतरे शशांक सिंह ने भी ताबड़तोड़ बल्लेबाजी कर टीम पर दबाव आने ही नहीं दिया. महज 28 गेंदों पर नाबाद 68 रनों की पारी खेली और टीम को जीत दिलाकर नाबाद पवेलियन लौटे. शशांक ने अपनी पारी में आठ छक्के और दो चौके लगाए. इससे पहले पंजाब की तरफ से 'इम्पैक्ट प्लेयर' प्रभसिमरन सिंह ने महज 20 गेंदों पर 54 रन बनाए थे, जिसमें चार चौके और पांच छक्के शामिल थे. प्रभसिमरन और बेयरस्टो के बीच पहले विकेट के लिए 6 ओवरों में 93 रनों की साझेदारी हुई, जिसने पंजाब को मोमेंटम प्रदान किया. इस मोमेंटम को बेयरस्टो ने अंत तक बरकरार रखा.

48 गेंदों पर नाबाद 108 रन बनाए, जिसमें 9 छक्के और आठ चौके शामिल थे.

नरेन-साल्ट की तूफानी पारी गई बेकार

टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी कोलकाता की टीम को नरेन और साल्ट ने तेज शुरुआत दी. दोनों ने तूफानी बल्लेबाजी करते हुये महज 10.2 ओवर में ही 138 रनों की ओपनिंग पार्टनरशिप कर दी. कोलकाता के लिए फिल साल्ट ने सबसे ज्यादा 37 गेंदों पर 75 रनों की पारी खेली. साल्ट ने इस दौरान छह छक्के और इतने ही चौके लगाए. वहीं सुनील नरेन ने 71 रन बनाए. नरेन ने 32 गेंदों की पारी में 9 चौके और चार छक्के जड़े. इसके बाद वेंकटेश अय्यर ने भी 3 चौके और दो छक्के की मदद से 39 रन बनाए. इसके अलावा आंद्रे रसेल (24) और श्रेयस अय्यर (28) ने भी तूफानी पारियां खेलीं. जिसके दम पर कोलकाता की टीम ने छह विकेट पर 261 रनों का विशाल स्कोर खड़ा कर दिया. मगर पंजाब के बल्लेबाजों ने इस विशाल स्कोर को भी छोटा साबित कर दिया. पंजाब के लिए अर्शदीप सिंह ने सबसे ज्यादा दो विकेट लिए. आईपीएल 2024 में अबतक 20 पारियों में बने 200 से ज्यादा रन. बल्लेबाज रनों का पहाड़ खड़ा कर रहे हैं.

ब्रीफ खबरें

पाकिस्तान अगले साल न्यूजीलैंड का दौरा करेगा

लाहौर। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने पुष्टि की है कि उसकी राष्ट्रीय टीम अगले साल तीन वनडे और पांच टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच खेलने के लिए न्यूजीलैंड का दौरा करेगी. यह 2023 के बाद से दोनों देशों के बीच छठी श्रृंखला होगी. पीसीबी अध्यक्ष मोहसिन नकवी और न्यूजीलैंड क्रिकेट के मुख्य कार्यकारी अधिकार स्कॉट वेनिंक के बीच लाहौर में चल रही पांच मैचों की टी20 अंतरराष्ट्रीय श्रृंखला के मौके पर हुई बैठक के दौरान अंतिम रूप दिया गया. बैठक के दौरान सैद्धांतिक रूप से यह दौरा 2025 चैम्पियंस ट्राफी के बाद आयोजित करने का फैसला किया गया. चैम्पियंस ट्राफी की मेजबानी पाकिस्तान को करनी है.

मेरा लक्ष्य आक्रामक बल्लेबाजी का था : शशांक सिंह

कोलकाता। शशांक सिंह की 28 गेंद में नाबाद 68 रन की तूफानी पारी की मदद से पंजाब किंग्स शुक्रवार को लक्ष्य का पीछा करते हुए रिकॉर्ड जीत दर्ज करने में सफल रही जिसके बाद उन्होंने कहा कि मैच को गहराई तक लेने की क्षमता से वह यह भूमिका निभाने में कामयाब रहे. जब शशांक मैदान में उतरे तो कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) के छह विकेट पर 261 रन के चुनौतीपूर्ण स्कोर को पार करने के लिए पंजाब किंग्स को 7.3 ओवर में 84 रन की जरूरत थी. जॉनी बेयरस्टो तब दूसरे छोर पर 39 गेंद पर 93 रन बनाकर बल्लेबाजी कर रहे थे.

सेंथिल बैच ओपन स्क्वाश के सेमीफाइनल में

नयी दिल्ली। राष्ट्रीय चैम्पियन वेलावन सेंथिलकुमार ने पेरिस में चेक गणराज्य के जैकब सोलनिकी को हराकर बैच ओपन स्क्वाश टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में प्रवेश किया. शीर्ष वरीय और विश्व रैंकिंग में 58वें स्थान पर काबिज सेंथिलकुमार ने शुक्रवार रात 12,000 अमेरिकी डॉलर के पीएसए चैलेंजर टूर टूर्नामेंट के क्वार्टर फाइनल में पांचवें वरीय चेक गणराज्य के खिलाड़ी को 37 मिनट में 11-5, 11-6, 11-2 से हरा दिया. अब सेमीफाइनल में उनकी भिड़ंत हांगकांग के एंडीज लिंग से होगी. वहीं अमेरिका के स्प्रिंगफील्ड में एक अन्य पीएसए चैलेंजर टूर टूर्नामेंट एक्सप्रेशन सेंट जेम्स ओपन के क्वार्टर फाइनल में हार गयीं.

तीरंदाजी कप : भारत ने कंपाउंड टीम स्पर्धाओं में पांच पदक जीते

ज्योति की स्वर्ण पदकों की हैट्रिक

27 वर्षीय तीरंदाज ने व्यक्तिगत, महिला टीम और मिश्रित टीम स्पर्धाओं में जीत हासिल करते हुए स्वर्ण पदक की हैट्रिक लगाई थी.

एजेंसी। शंघाई

एशियाई खेलों की चैम्पियन ज्योति सुरेखा वेन्नम ने शानदार प्रदर्शन के बूते शनिवार को यहां शंघाई में चल रहे तीरंदाजी विश्व कप के पहले चरण में स्वर्ण पदकों की हैट्रिक बनाकर भारतीय दबदबे की अगुआई की जिसमें कंपाउंड तीरंदाजों ने पांच पदक जीते. दुनिया की तीसरे नंबर की खिलाड़ी ज्योति ने सत्र के शुरुआती वैश्विक टूर्नामेंट में मेक्सिकों की शीर्ष वरीय आंद्रिया बेसेरा को शूट-ऑफ में 146=146 (9*-9) से हराकर यह उपलब्धि हासिल की, जिससे वह तीन बार की ओलंपियन दीपिका कुमारी के बाद एक विश्व कप में तीन स्वर्ण पदक जीतने वाली दूसरी भारतीय बनीं. पूर्व नंबर एक तीरंदाज दीपिका ने जून 2021 में पेरिस विश्व कप के तीसरे चरण में यह कारनामा किया था.

ज्योति ने एशियाड का कारनामा दोहराया : ज्योति ने इस तरह पिछले साल हांगझोऊ एशियाड की उपलब्धि की बराबरी की, जिसमें विजयवाड़ा की 27 वर्षीय तीरंदाज ने व्यक्तिगत, महिला टीम और मिश्रित टीम स्पर्धाओं में जीत हासिल करते हुए स्वर्ण पदक की हैट्रिक लगाई थी. युवा प्रियांश ने पुरुष व्यक्तिगत वर्ग में रजत के रूप में अपना पहला विश्व कप पदक जीता. अपने दूसरे विश्व कप में 21 वर्षीय तीरंदाज ने 2021 के विश्व चैंपियन निको वीनर से हार कर दूसरा स्थान हासिल किया. आस्ट्रिया के 27 साल के तीरंदाज ने 150 में से 150 अंक हासिल कर बेहतरीन प्रदर्शन दिखाया और प्रियांश को तीन अंक से हरा दिया. सुबह के सत्र में भारत ने गैर-ओलंपिक कंपाउंड तीरंदाजी में अपना दबदबा बनाते हुए टीम स्पर्धाओं में क्लीन स्वीप करते हुए स्वर्ण पदकों की हैट्रिक लगायी तथा पुरुष टीम, महिला टीम और मिश्रित टीम स्पर्धा जीतीं. इनमें से दो में ज्योति टीम का हिस्सा रहीं. ज्योति सुरेखा वेन्नम, अदिति स्वामी और परनीत कौर की तिकड़ी ने महिला कंपाउंड टीम स्पर्धा ने इटली को 236 . 225 से हराया. भारतीय तिकड़ी ने 24 तीरों में सिर्फ चार अंक गंवाये और छठी वरीयता प्राप्त इटली को बड़े अंतर से हराकर स्वर्ण पदक से खाता खोला.

दीपिका भी पदक दौड़ में

भारतीय तीरंदाज को पहले तीन प्रयास में परफेक्ट स्कोर के लिए संघर्ष करना पड़ा और आंद्रिया ने 88-87 की बढ़त बना ली. लेकिन ज्योति चौथे राउंड में परफेक्ट स्कोर बनाने में सफल रही. पांचवें राउंड में आंद्रिया दबाव में आकर दो अंक गंवा बैठी. वहीं ज्योति ने 29 का स्कोर बनाकर स्कोर 146 ऑल कर दिया, जिसके लिए शूट-ऑफ करना पड़ा. दोनों ने शूट ऑफ में नौ ऑल शॉट लगाये लेकिन ज्योति का तीर इनर रिंग के करीब था जिससे उन्होंने अपना तीसरा स्वर्ण पदक जीत लिया. रिकर्व वर्ग में पदक राउंड रविवार को होंगे और भारत की निगाहें ओलंपिक वर्ग में दो स्वर्ण पदक जीतने पर लगी होंगी. भारतीय पुरुष टीम स्वर्ण पदक मुकाबले में ओलंपिक चैम्पियन दक्षिण कोरिया से भिड़ेगी. दीपिका कुमारी व्यक्तिगत पदक की दौड़ में हैं और महिला रिकर्व वर्ग में दक्षिण कोरियाई प्रतिद्वंद्वी के खिलाफ अपना सेमीफाइनल खेलेंगी.

पुरुष टीम ने नीदरलैंड को मात दी

पुरुष टीम में अभिषेक वर्मा, प्रियांश और प्रथमेश एफ ने नीदरलैंड को 238 . 231 से मात दी नीदरलैंड की टीम में माइक शोलेसर, सिल पीटर और स्टेफ विलेम्स थे . इसके बाद भारत की मिश्रित टीम ने कंपाउंड वर्ग में तीसरा स्वर्ण पदक जीतकर क्लीन स्वीप किया . दूसरी वरीयता प्राप्त ज्योति और अभिषेक की जोड़ी ने एस्तोनिया की लिसेल जात्मा और रोबिन जात्मा की मिश्रित जोड़ी को रोमांचक मुकाबले में 158-157 से मात दी . मौजूदा एशियाई खेलों की चैम्पियन ज्योति के लिए यह दोहरा स्वर्ण पदक था . वह व्यक्तिगत स्पर्धा में स्वर्ण पदक की दौड़ में है और दिन के अंत में अपना सेमीफाइनल खेलेगी . शीर्ष वरीयता प्राप्त महिला कंपाउंड टीम ने दिन के पहले मैच में 24 तीरों से केवल चार अंक गंवाए और छठी वरीयता प्राप्त इटली को हरा दिया . छह छह तीरों के पहले सेट में भारतीय टीम ने सिर्फ दो बार परफेक्ट 10 नहीं बनाया और मार्सेला तोनिओली, इरेने फ्रांचिनी और एलिसा रोनेर की इतालवी टीम पर 178-171 से बढत बना ली . चौथी वरीयता प्राप्त पुरूष टीम ने 60 स्कोर करके परफेक्ट शुरुआत की और अगले दो सेट में दो ही अंक गंवाये . इसके बाद फाइनल सेट में परफेक्ट 60 स्कोर करके जीत दर्ज की . कंपाउंड मिश्रित टीम स्पर्धा में ज्योति और अभिषेक ने 40 के स्कोर से परफेक्ट शुरुआत कर तीन अंक की बढ़त बनायी . भारतीय जोड़ी 119-117 की बढ़त बनाये थी और उसे अंत में 40 में से 39 अंक की जरूरत थी और उन्होंने ऐसा करके देश को तीसरा स्वर्ण पदक दिलाया . दोपहर के सत्र में ज्योति व्यक्तिगत चैम्पियन बनीं .

दिल्ली ने मुंबई इंडियंस को 10 रन से दी मात

एजेंसी। नयी दिल्ली

दिल्ली कैपिटल्स ने मुंबई इंडियंस को हरा दिया है. मुंबई इंडियंस के सामने जीत के लिए 258 रनों का लक्ष्य था, लेकिन हार्दिक पांड्या की टीम 20 ओवर में 8 विकेट पर महज 247 रन ही बना सकी. इस तरह ऋषभ पंत की अगुवाई वाली दिल्ली कैपिटल्स ने 10 रनों से जीत दर्ज की. वहीं, इस जीत के बाद दिल्ली कैपिटल्स के 10 मैचों में 10 प्वॉइंट्स हो गए हैं. जबकि मुंबई इंडियंस के 9 मैचों में महज 6 प्वॉइंट्स हैं. इस हार के बाद मुंबई इंडियंस की प्लेऑफ की उम्मीदों को बड़ा झटका लगा है. मुंबई इंडियंस के लिए तिलक वर्मा ने सबसे ज्यादा 32 गेंदों पर 63 रन बनाए. उन्होंने अपनी पारी में 4 चौके और 4 छक्के जड़े. हार्दिक पांड्या ने 24 गेंदों पर 46 रनों की तूफानी पारी खेली. मुंबई इंडियंस के कप्तान ने अपनी पारी में 4 चौके और 3 छक्के जड़े. इसके अलावा टिम डेविड ने 17 गेंदों पर 2 चौकों और 3 छक्कों की मदद से 37 रन बनाए. ईशान किशन 14 गेंदों पर 20 रन बनाकर पवैलियन लौट गए. जबकि रोहित शर्मा 8 गेंदों पर 8 रन बनाकर चलते बने. सूर्यकुमार यादव 13 गेंदों पर 26 रन बनाकर खलील अहमद का शिकार बने.

ऐसा रहा दिल्ली कैपिटल्स के गेंदबाजों का हाल

वहीं, दिल्ली कैपिटल्स के गेंदबाजों की बात करें तो मुकेश कुमार और रासिख डर सलाम सबसे कामयाब गेंदबाज रहे . मुकेश कुमार और रासिख डर सलाम ने मुंबई इंडियंस के 3-3 बल्लेबाजों को पवैलियन का रास्ता दिखाया . इसके अलावा खलील अहमद ने 2 विकेट अपने नाम किया . इससे पहले मुंबई इंडियंस के कप्तान हार्दिक पांड्या ने टॉस जीतकर गेंदबाजी करने का फैसला किया . पहले बल्लेबाजी करने उतरी दिल्ली कैपिटल्स ने 20 ओवर में 4 विकेट पर 257 रनों का स्कोर बनाया . दिल्ली कैपिटल्स के लिए जैक फ्रेजर मैकगर्ग ने सबसे ज्यादा 27 गेंदों पर 84 रन बनाए .

स्कोरबोर्ड

दिल्ली कैपिटल्स पारी

जैक फ्रेसर मैकगुर्क का नबी बो चावला 84, अभिषेक पोरेल का ईशान बो नबी 36,शाई होप का वर्मा बो वुड 41, ऋषभ पंत का रोहित बो बुमराह 29, ट्रिस्टन स्टब्स नाबाद 48, अक्षर पटेल नाबाद 11, अतिरिक्त : आठ रन

कुल योग : 20 ओवर में चार विकेट पर 257 रन विकेट पतन : 1 . 114, 2 . 127, 3 . 180, 4 . 235

गेंदबाजी

वुड 4 . 0 . 68 . 1, बुमराह 4 . 0 . 35 . 1, तुषारा 4 . 0 . 56 . 0 चावला 4 . 0 . 36 . 1, पंड्या 2 . 0 . 41 . 0, नबी 2 . 0 . 20 . 1

मुंबई इंडियंस

ईशान किशन का अक्षर बो मुकेश 20, रोहित शर्मा का होप बो खलील 08, सूर्यकुमार का विलियम्स बो खलील 26, तिलक वर्मा रन आउट 63, हार्दिक पंड्या का मुकेश बो सलाम 46, नेहान वढ़ेरा का पंत बो सलाम 04, टिम डेविड पगबाधा मुकेश 37

मोहम्मद नबी का होप बो सलाम 07, पीयूष चावला का होप बो मुकेश 10, ल्यूक वुड नाबाद 09, अतिरिक्त : 17 रन

कुल योग : (20 ओवर में नौ विकेट पर) 247 रन विकेट पतन : 1-35, 2-45, 3-65, 4-136, 5-140, 6-210, 7-223, 8-234, 9-247

गेंदबाजी

विलियम्स 3-0-34-0, खलील 4-0-45-2

मुकेश 4-0-59-3, कुलदीप 3-0-47-0, अक्षर 2-0-24-0,सलाम 4-0-34-3

हर्षा भोगले ने चुनी टी20 वर्ल्ड कप के लिए भारतीय टीम

एजेंसी। नयी दिल्ली

टीम इंडिया के टी20 वर्ल्ड कप स्क्वाड का इंतजार भारतीय फैंस बेसब्री से कर रहे हैं. भारतीय क्रिकेट कंट्रो ल बोर्ड यानी बीसीसीआई अगले हफ्ते इसका आधिकारिक ऐलान करेगा. हालांकि इससे पहले क्रिकेट एक्सपर्ट अपनी-अपनी पसंदीदा 15 खिलाड़ियों की टीम का ऐलान कर फैंस का ध्यान आकर्षित कर रहे हैं. इस कड़ी में अब दिग्गज कमेंटेटमेंटेर हर्षा भोगले का नाम जुड़ गया है. इस क्रिकेट पंडित ने टी20 वर्ल्ड कप के लिए अपने पसंदीदा 15 खिलाड़ियों को चुना है, जिनमें रोहित शर्मा और विराट कोहलीजैसे अनुभवी खिलाड़ियों के साथ-साथ युवाओं की टोली शामिल है. हालांकि उन्होंने नेअपनी टीम में युवा सेंसेशन रिंकू सिंह और युजवेंद्र चहल को नहीं रखा है. हर्षा भोगले ने बतौर ओपनर कप्तान रोहित शर्मा के साथ यशस्वी जायसवाल को चुना है. वहीं उन्होंने इनके अलावा बैटिंग लाइन अप में विराट कोहली, संजू सैमसन, सूर्यकुमार यादव, ऋषभ पंत और शिवम दुबे को जगह दी है. हर्षा भोगले के स्क्वॉड में तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह, मोहम्मद सिराज, अर्शदीप सिंह और संदीप शर्मा हैं. संदीप का नाम थोड़ा हैरान करने वाला है.

राजस्थान ने 7 विकेट से जीता मैच

संजू-ध्रुव के तूफान में उड़ी राहुल की लखनऊ

एजेंसी। लखनऊ

राजस्थान रॉयल्स ने लखनऊ सुपर जाएंट्स को हरा दिया है. संजू सैमसन की अगुवाई वाली राजस्थान रॉयल्स के सामने 197 रनों का लक्ष्य था. राजस्थान रॉयल्स ने 19 ओवर में 3 विकेट पर लक्ष्य हासिल कर लिया. संजू सैमसन ने सबसे ज्यादा 33 गेंदों पर 71 रनों की पारी खेली. उन्होंने अपनी पारी में 7 चौके और 4 छक्के जड़े. जबकि ध्रुव जुरेल 34 गेंदों पर पर 52 रन बनाकर नॉटआउट लौटे. संजू सैमसन और ध्रुव जुरेल के बीच चौथे विकेट के लिए 123 रनों की अटूट साझेदारी हुई.

संजू और जुरेल के बीच बड़ी साझेदारी : लखनऊ सुपर जाएंट्स के 196 रनों के जवाब में बल्लेबाजी करने उतरी राजस्थान रॉयल्स की शुरुआत अच्छ रही. ओपनर जोस बटलर और यशस्वी जायसवाल ने 5.5 ओवर में 60 रन जोड़े. जोस बटलर 18 गेंदों पर 34 रन बनाकर यश ठाकुर के शिकार बने. जबकि यशस्वी जायसवाल ने 18 गेंदों पर 24 रनों का योगदान दिया. यशस्वी को मार्कस स्टोइनिस ने अपना शिकार बनाया. हालांकि, इस सीजन लगातार रन बना रहे रियान पराग 11 गेंदों पर 14 रन बनाकर चलते बने. लेकिन इसके बाद संजू सैमसन और ध्रुव जुरेल ने पारी को संभाल लिया. लखनऊ सुपर जाएंट्स के गेंदबाजों की बात करें तो यश ठाकुर के अलावा मार्कस स्टॉयनिस और अमित मिश्रा ने 1-1 विकेट अपने नाम किया.

लखनऊ के लिए कप्तान केएल राहुल चमके

इससे पहले राजस्थान रॉयल्स के कप्तान संजू सैमसन ने टॉस जीतकर गेंदबाजी करने का फैसला किया . पहले बल्लेबाजी करने उतरी लखनऊ सुपर जाएंट्स ने 20 ओवर में 5 विकेट पर 196 रनों का स्कोर बनाया . लखनऊ सुपर जाएंट्स के कप्तान केएल राहुल ने सबसे ज्यादा 48 गेंदों पर 76 रन बनाए . लखनऊ सुपर जाएंट्स की शुरुआत बेहद खराब रही . क्विंटन डी कॉक और मार्कस स्टॉयनिस 11 रनों तक पवैलियन का रुख कर चुके थे . क्विंटन डी कॉक ने 3 गेंदों पर 8 रन बनाए . मार्कस स्टॉयनिस बिना कोई रन बनाए पवैलियन लौट गए . आखिरी ओवरों में क्रुणाल पांड्या और आयुष बदोनी ने अहम रन जोड़े .

फटाफट छक्के और चौकों की बरसात नहीं हो रही, आईपीएल में क्रिकेट का मजाक उड़ रहा

बल्ले मजबूत होते गये, गेंदबाजी का बुरा हाल होता गया

एजेंसियां। नयी दिल्ली

22 गज की पट्टी पर बैट और बॉल से खेले जाने वाले खेल को क्रिकेट कहते हैं. गेंदबाज बॉल डालता है, तो बल्लेबाज उसपर शॉट खेलकर रन बनाता है. गेंदबाज का लक्ष्य बल्लेबाज को आउट करने का होता है, तो बल्लेबाज ज्यादा से ज्यादा रन बनाना चाहता है. लेकिन इस खेल पर हमेशा से भेदभाव के भी आरोप लगे हैं खेल को करीब से जानने वालों का हमेशा यह मानना होता है कि क्रिकेट के सारे नियम बल्लेबाजों को फायदा देने के लिए बनाए जाते हैं. पिच से लेकर बाउंड्री की साइज तक, सभी बल्लेबाजों को देख कर बनाए जाते हैं. बल्ले मजबूत होते जा रहे हैं और गेंदबाजों का हाल बुरा. यही वजह है कि बल्ले और गेंद को बीच का अंतर बढ़ता जा रहा है कभी 60 ओवर वाले वनडे में 250 रन बनाने वाली टीम की जीत पक्की मानी जाती थी, तो आज टी20 में 250 का स्कोर सेफ नहीं है. आईपीएल 2024 में तो स्थिति और भी ज्यादा खराब है. कोलकाता नाइट राइडर्स के खिलाफ पंजाब किंग्स ने 262 रनों का लक्ष्य 112 गेंदों में ही हासिल कर लिया.

आईपीएल के इस सीजन में बुरा हाल

आईपीएल 2024 में गेंदबाजों की और दुर्गति हो रही है . इस सीजन से पहले आईपीएल में सिर्फ दो बार किसी टीम ने पारी में 250 से ज्यादा का स्कोर बनाया था . इस बार 42 मैचों में ही 7 बार 250 से ज्यादा का स्कोर बन गया है . आईपीएल का सबसे बड़े स्कोर का रिकॉर्ड इस सीजन दो बार टूट चुका है . हैदराबाद ने पहले 277 रन बनाए और फिर 287 रन बनाकर बना रिकॉर्ड ही तोड़ दिया . इतना बड़ा स्कोर बनाने के बाद भी सनराइजर्स हैदराबाद को सिर्फ 25 रन से जीत मिली . इस सीजन तीन बार एक मैच में 500 से ज्यादा रन बने हैं . इससे पहले एक आईपीएल मैच में सबसे ज्यादा 469 रन बने थे .

हार्दिक पंड्या को इतनी तवज्जो नहीं देनी चाहिए

एजेंसी। नयी दिल्ली

पूर्व तेज गेंदबाज इरफान पठान ने कहा कि भारतीय क्रिकेट को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक हरफनमौला खिलाड़ी के रूप में हार्दिक पंड्या को इतनी प्राथमिकता नहीं देनी चाहिए क्योंकि वह आईसीसी टूर्नामेंट में प्रभावित करने में विफल रहे हैं. मुंबई इंडियंस का यह आलराउंडर इस आईपीएल सत्र में खराब फॉर्म से जूझ रहा है जिससे उनके भारत की टी20 विश्व कप टीम में शामिल होने पर सवाल उठ रहे हैं. टीम की घोषणा जल्द ही की जानी है. पठान ने स्टार स्पोर्ट्स पर प्रेस रूम शो, टिकट टू वर्ल्ड कप में कहा, हार्दिक पंड्या के बारे में कहूं तो भारतीय क्रिकेट को यह

स्पष्ट करने की जरूरत है कि उन्हें उतनी प्राथमिकता नहीं देनी चाहिए जितनी उन्होंने अब तक दी है. क्योंकि हमने अभी तक (उनकी मौजूदगी में) विश्व कप नहीं जीता है. अगर आपको लगता है कि आप एक मुख्य आलराउंडर हैं तो आपको अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उस तरह का प्रदर्शन करना होगा. जहां तक आलराउंडर का सवाल है तो उसने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इस तरह से प्रभावित नहीं किया है. हम सिर्फ उसकी क्षमता के बारे में सोच रहे हैं. उन्होंने कहा कि आईपीएल और अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में प्रदर्शन में काफी बड़ा अंतर है तथा उन्होंने पंड्या को टूर्नामेंट चुनने के बजाय पूरे साल खेलने की सलाह दी. पठान ने कहा, हम आईपीएल और अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शन के बीच भ्रमित हो रहे हैं. दोनों में काफी अंतर है. सबसे पहले तो उसे पूरे साल खेलना होगा. वह चुनकर टूर्नामेंट नहीं खेल सकता. उन्होंने कहा, भारतीय क्रिकेट को ऐसा करना बंद करना होगा. किसी एक खिलाड़ी को तवज्जो देना बंद करें क्योंकि अगर आप ऐसा करोगे तो आप बड़े टूर्नामेंट नहीं जीत सकते. पठान ने कहा, आस्ट्रेलिया इतने वर्षों से टीम गेम को प्राथमिकता दे रहा है.

ब्रीफ खबरें

जिंदा कारतूस के साथ अपराधी गिरफ्तार

पूर्वी चंपारण । जिला पुलिस ने अपराध की योजना बना रहे एक अपराधी को हथियार और गोली के साथ गिरफ्तार किया है. इसकी जानकारी देते अरेराज डीएसपी रंजन कुमार ने बताया कि गुप्त सूचना मिली कि पहाड़पुर थाना क्षेत्र के एकडेरवा पईन के समीप कुछ अपराधी हथियार के साथ इकट्ठा होकर किसी अपराधिक घटना को अंजाम देने के फिराक में है. सूचना के साथ ही एसपी कांतेश कुमार मिश्र के निर्देश पर गठित टीम ने उक्त स्थल की घेराबंदी कर किये छापेमारी के दौरान एक अपराधी को हथियार समेत दबोच लिया.

जापान जा रही महिला से दो लाख की लूट

गया । बोधगया में दिनदहाड़े विदेशी महिला के साथ लूट की घटना हुई है. जापानी महिला यूको मोमोस अपने देश जापान जा रही थी. उसी दौरान चार अज्ञात लुटेरों ने लूट की घटना को अंजाम दिया है. पीड़ित जापानी महिला के पति अनूप कुमार ने बताया कि जब हमलोग जापान जा रहे थे उसी दौरान वर्मा मोनेस्ट्री बोधगया के पास चार अज्ञात लोगों ने हमारी कार में कुछ फेका और गाड़ी में आग लगने की वहीं लोग सूचना दी इतने देर में हम और हमारी पत्नी बेहोश हो गए. जब होश आया तो देखा की हमारी पत्नी का बैग ले कर एक ऑटो से लुटेरे भाग गए. जिसके बाद पुलिस मौके पहुंची और पकड़े गए युवक को हिरासत में ले लिया.

कांग्रेस जिलाध्यक्ष के घर पर ताबड़तोड़ फायरिंग

गोपालगंज । गोपालगंज में कांग्रेस के जिलाध्यक्ष ओमप्रकाश गर्ग के घर पर बदमाशों ने हमला बोला है. शुक्रवार की देर रात की यह घटना बतायी जा रही है. जब कांग्रेस जिलाध्यक्ष के घर पर गोलीबारी की गयी. ओमप्रकाश गर्ग के घर पर कई राउंड फायरिंग की गयी. गोली चलने की आवाज सुनकर आसपास के लोग भी भयभीत हुए. इस घटना में किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है. मामला आपसी रंजिश से जुड़ा बताया जा रहा है. नगर थाना क्षेत्र के थाना रोड की ये घटना है. गर्ग को पिछले साल ही कांग्रेस ने जिलाध्यक्ष बनाया है. वो एमएलसी चुनाव के प्रत्याशी भी रह चुके हैं.

बेगूसराय में दो बाइक की आमने-सामने हुई टक्कर

जिंदा जल गए तीन युवक, दो घायल

संवाददाता । बेगूसराय

साल-बहनोई के बाद एक और युवक ने अस्पताल में तोड़ा दम

आनन-फानन में जैसे-तैसे लोगों को दो को इलाज के लिए भेजा गया. इसमें एक की मौत इलाज के दौरान मौत हो गई. मरने की पहचान पिपरा निवासी छत्तीस कुमार, बगवाड़ा निवासी अरविंद शर्मा जो आपस में साला-बहनोई था. इस घटना में एक अन्य मृतक की पहचान मंझौल के रहने वाले सुमित कुमार के रूप हुई है. घायल की पहचान श्याम कुमार के रूप में हुई है. इसका इलाज सदर अस्पताल बेगूसराय में चल रहा है. घटनास्थल पर मुफस्सिल थानेदार सहित सदर डीएसपी और उन अधिकारी मौजूद थे. सदर डीएसपी सुबोध कुमार ने बताया है कि दो मोटरसाइकिल के आमने-सामने में टक्कर हो गई थी. इस हादसे में जिंदा जलने से दो लोगों की घटनास्थल पर ही मौत हो गई. एक व्यक्ति की इलाज के दौरान मौत हो चुकी है. फिलहाल पुलिस मौके पर पहुंच कर शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए बेगूसराय सदर अस्पताल भेज दिया है और आगे की कार्रवाई में जुटी हुई है.

बेगूसराय में भीषण सड़क हादसे में तीन युवकों की मौत हो गई. घटना मुफस्सिल थाना क्षेत्र के खम्हार ढाला के पास की है. शनिवार सुबह दो बाइक के बीच आमने-सामने की टक्कर हो गई. टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि चारों युवक वहीं बेहोश होकर गिर गए. देखते ही देखते दोनों बाइक में आग लग गई. जब लोग वहां पहुंचे तब तक चारों युवकों की आग की चपेट में आ गए. आग की लपटें इतनी तेज थीं कि दो लोग की मौत मौके पर हो गईं. दो लोग आग से झुलसकर गंभीर रूप से घायल हो गया था. इसमें इलाज के दौरान एक युवक की भी मौत हो गई. वहीं चौथे युवक की हालत गंभीर है. घटना के बाद इलाके में हड़कंप मच गया. आसपास के लोगों की भीड़ लग गई. इधर, सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और जांच में जुट गई. घटना मुफ्फसिल थाना क्षेत्र के खम्हार ढाला गौतम धाम के समीप एचएस 55 की है. बताया जा रहा है कि दो बाइक में आमने-सामने की टक्कर हो गई. टक्कर लगते ही बाइक की टंकी से पेट्रोल का रिसाव होने लगा. देखते ही देखते आग इतनी भयावह थी कि चार लोग झुलस गए.

बुजुर्ग को ट्रक ने रौंदा, मौके पर हुई मौत

पटना । पटना के मीठापुर से जीरो माइल जाने वाले मुख्य मार्ग पर तेज रफ़्तार एक कंटेनर ने रोड क्रॉस कर रहे 70 वर्षीय बुजुर्ग को रौंद डाला. जिस हादसे में बुजुर्ग की मौके पर ही मौत हो गई. घटना की सूचना पर कंकड़बाग थाना की पुलिस पहुंची. वहीं पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा है. वहीं, मृतक की पहचान रामचंद्र प्रसाद 70 वर्षीय अशोक नगर रोड नंबर 14 ए के रहने वाले के रूप में हुई है. मौके पर पहुंची पुलिस ने कंटेनर ट्रक को जब्त कर ड्राइवर को गिरफ्तार कर लिया है. थाना कंकड़बाग ने हादसे की सूचना यातायात थाने को दी है. जिसके बाद पुलिस आगे की कार्रवाई में जुट गई है. दरअसल घटना के बाद स्थानीय लोगों ने बाईपास एनएच 30 को जाम कर दिया था.

औरंगाबाद में ट्रक ने बाइक सवार को रौंदा, महिला की हुई मौत

संवाददाता । औरंगाबाद

दाउदनगर थाना क्षेत्र के नीमा मोड़ के समीप ट्रक की चपेट में आने से घायल 60 वर्षीय वृद्धा की इलाज के दौरान सदर अस्पताल में मौत हो गयी. वहीं उनकी घायल ननद दाउदनगर के ही एक निजी अस्पताल में इलाजरत है.

मृतका की पहचान मुफस्सिल थाना क्षेत्र के पवई गांव निवासी जमुनी कुंवर के रूप में हुई है. घटना में जो घायल है वह मृतका की ननद है और वह जम्होर थाना क्षेत्र के रामपुर गांव की रहनेवाली है, जिसका नाम ओमनी कुंवर है. सदर अस्पताल में पोस्टमार्टम करवाने पहुंचे परिजनों ने बताया कि जमुनी शादी समारोह में शामिल होने के लिए अपनी मायके रामपुर गयी थी. वहां से अपनी भाभी ओमनी को लेकर भतीजा नागेश प्रजापति के साथ बाइक पर सवार होकर अरवल जिले के कलेर थाना क्षेत्र के पशरामपुर गांव बहन के घर शादी समारोह में शामिल होने के लिए जा रही थी.

कतरीसराय थाना इलाके तारा बिगहा गांव की घटना

नालंदा में करंट लगने से 3 की मौत

- हादसा सुन महिला परिजन को आया हार्ट अटैक

संवाददाता । नालंदा

नालंदा के कतरीसराय थाना इलाके तारा बिगहा गांव में शनिवार को खंधा में मछली मारने गए तीन युवक को करंट लगने के बाद तालाब में गिर जाने से मौत हो गई. ग्रामीणों की नजर पड़ी तो इलाके में सनसनी फैल गई. जिस तार से करंट लगा उसे पहले ग्रामीणों ने अलग किया. उसके बाद शव को तालाब से बाहर निकाला. मौत की सूचना मिलने के बाद मृतक पंकज राम के परिजन में एक महिला को हार्ट अटैक आया है. फिलहाल गांव में मातम छा गया है. मृतक के परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है. मृतकों की पहचान पंकज राम, गुलशन कुमार और अजय कुमार के रूप में हुई है. इनमें दो भाई और मामा बताए जा रहे हैं. सूचना मिलने के बाद स्थानीय थाना प्रभारी दल बल के साथ गांव पहुंचे फिर तीनों व्यक्ति को अस्पताल भेजा, लेकिन घटनास्थल पर ही मौत हो गई थी. ग्रामीणों ने थोड़ी देर के लिए सड़क को जाम कर दिया था. पुलिस ने लोगों को समझाकर जाम हटवाया. फिलहाल पुलिस शव को जब्त कर पोस्टमार्टम के लिए अस्पताल भेज दिया है.

शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया अस्पताल : राजगीर के डीएसपी प्रदीप कुमार ने बताया कि तीन युवक मछली पकड़ने के लिए तालाब गये थे. उसी दौरान बिजली के तार की चपेट में आ गए. जिसके बाद तीनों तालाब में गिर गए और तीनों की मौत हो गई. वहीं. एक युवक की मौत की सूचना मिलने के बाद उसके परिजन में एक महिला को हार्ट अटैक आया है. पुलिस जांच में जुटी है और शव को जब्त कर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है.

दूसरे चरण के मतदान के बाद तेजस्वी यादव का दावा

भारत में बनेगी इंडिया गठबंधन की सरकार

संवाददाता । पटना

नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने लोकसभा के दूसरे चरण के चुनाव के बाद कहा कि भारत में इंडिया गठबंधन की सरकार बनने जा रही है. दूसरे चरण के बाद भाजपा नेता पूरी तरह से फ्रस्ट्रेशन में हैं और जनता ने मूड बना लिया है कि इस बार इंडिया गठबंधन को जीताना है. तेजस्वी ने कहा कि दूसरे चरण के बाद आप देख रहे हैं कि 400 पार के नारे वाली मूवी प्रधानमंत्री भूल चुके हैं. पहले फेज में तो यह पूरी तरह फ्लॉप हो गई. दूसरे फेज में तो पर्दे पर चढ़ी ही नहीं. प्रधानमंत्री मुद्दे की बात नहीं करते प्रधानमंत्री बात करते हैं हिंदू-मुस्लिम, मंदिर-मस्जिद की. उन्होंने कहा कि निश्चित तौर पर आरक्षण काटने की बात जो प्रधानमंत्री कह रहे हैं कि इंडिया गठबंधन का आरक्षण काट कर किसी दूसरे विशेष वर्ग के लोगों को देंगे.

कोई किसी को आज तक आरक्षण काट कर दिया है क्या? यह मुद्दे की बात नहीं करके सिर्फ मुद्दे को भटकाएंगे. लोग अब जान चुके हैं कि नरेंद्र मोदी हैं तो बेरोजगारी नहीं जाएगी, महंगाई नहीं जाएगी. इसलिए जनता ने मन बना लिया है कि इस बार इंडिया गठबंधन को ही जीताना है.

95 बच्चों को रेस्क्यू किया गया, पांच मौलवी गिरफ्तार

संवाददाता । पटना/ अयोध्या

यूपी पुलिस ने शुक्रवार को 95 बच्चों को लेकर बिहार के अररिया से सहारनपुर (यूपी) जा रही एक बस को देवकाली बाइपास (अयोध्या) पर रोक कर अपने कब्जे में ले लिया. खबरों के अनुसार बिहार के विभिन्न जिलों से मुस्लिम समुदाय के 95 बच्चों को बस से सहारनपुर ले जा रहे पांच मौलवियों को गिरफ्तार किया गया है. राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग की सक्रियता से मानव तस्करी विरोधी इकाई ने पुलिस का सहायता से इन बच्चों को रेस्क्यू किया. बच्चों की उम्र नौ से 12 वर्ष के बीच की बताई जाती है, बच्चों को लखनऊ के मुमताज शरणालय में रखा गया है. पुलिस मौलवियों से पूछताछ कर पूरे रैकेट की जानकारी हासिल करने में जुटी है. आयोग की सदस्य डॉ शुचिता चतुर्वेदी ने जानकारी दी कि मिशन मुक्ति फाउंडेशन दिल्ली के निदेशक वीरेंद्र सिंह की सूचना पर बिहार के अररिया और पूर्णिया से लाये जा रहे बच्चों को रेस्क्यू किया गया है.

अररिया से उत्तरप्रदेश के सहारनपुर जा रही थी बस

मौलवियों को पूछताछ के लिए सिविल लाइन ले जाया गया : डॉ शुचिता चतुर्वेदी को जानकारी मिली थी कि अररिया और पूर्णिया से अवैध तरीके से बच्चों को सहारनपुर के देवबंद ले जाया जा रहा है. उन्होंने यह सूचना एंटी ह्यूमन ट्रैफिकिंग यूनिट को दी. ट्रैफिकिंग यूनिट और अयोध्या पुलिस की एक टीम ने शहर के बड़ी देवकाली स्थित हाईवे पर घेराबंदी कर एक बस को रोका. बस में उन्हें 95 बच्चे और पांच मौलवी मिले. सभी बच्चों और मौलवियों को पूछताछ के लिए सिविल लाइन ले जाया गया. सूत्रों के अनुसार, बच्चे नहीं जानते थे कि उन्हें कहां ले जा रहे थे. मौलवियों की ओर से पुलिस को दी गयी जानकारी झूठी साबित हुए, बाल कल्याण समिति के सर्वेश अवस्थी ने बताया कि बच्चों के माता पिता का नाम व सहमति पत्र भी मौलवियों के पास नहीं है. कई बच्चे अनाथ भी हैं. बच्चों की काउंसलिंग की गयी. उसके बाद बच्चों को मेडिकल के लिए जिला चिकित्सालय लाया गया.

कारोबार

आईसीटी पर फैसला टालने को कहा

नयी दिल्ली । भारत और चीनी ताइपे ने विश्व व्यापार संगठन के विवाद निपटान निकाय से 26 जुलाई तक कुछ सूचना और प्रौद्योगिकी उत्पादों पर नयी दिल्ली के आयात शुल्क के खिलाफ कोई फैसला नहीं लेने को कहा है क्योंकि दोनों पक्ष मामले को सुलझाने में लगे हुए हैं. जिनेवा स्थित अधिकारी ने कहा कि बैठक में दोनों देशों ने विवादों के समाधान को सुविधा जनक बनाने में मदद के लिए डीएसबी को 26 जुलाई, 2024 तक विवाद पैनल की रिपोर्टों पर विचार करने में देरी करने के लिए कहा है.

इंडिया बुल्स रियल एस्टेट का घाटा बढ़ा

नयी दिल्ली । देश की प्रमुख रियल एस्टेट डेवलपर इंडियाबुल्स रियल एस्टेट लिमिटेड का एकीकृत शुद्ध घाटा बीते वित्त वर्ष में बढ़कर 1,038.65 करोड़ रुपये हो गया है. वित्त वर्ष 2022-23 में कंपनी का शुद्ध घाटा 608.38 करोड़ रुपये रहा था.
आईबीआरईएल ने शेयर बाजार को दी सूचना में कहा कि बीते वित्त वर्ष में उसकी कुल आमदनी भी घटकर 468.75 करोड़ रुपये हो गई, जो वित्त वर्ष 2022-23 में 648.47 करोड़ रुपये था.
कंपनी का शुद्ध घाटा मार्च तिमाही में कम होकर 302 करोड़ रहा.

साई स्वामी मेटल्स का आईपीओ 30 से खुलेगा

नयी दिल्ली । स्टेनलेस स्टील के उत्पाद बनाने वाली कंपनी साई स्वामी मेटल्स एंड अलॉयज लिमिटेड निवेशकों से करीब 15 करोड़ रुपये जुटाने के लिए 30 अप्रैल को पूंजी बाजार में उतरेगी. कंपनी ने शनिवार को एक बयान में कहा कि उसका आईपीओ (आरंभिक सार्वजनिक निर्गम) मंगलवार को खुलेगा और तीन मई पर बंद होगा. शेयर बीएसई के एसएमई मंच पर सूचीबद्ध होंगे. डॉल्फिन ब्रांड के तहत स्टेनलेस स्टील उत्पाद बनाने वाली अहमदाबाद स्थित कंपनी ने आईपीओ के तहत बोली के लिए प्रति इक्विटी शेयर कीमत 60 रुपये तय की है. आईपीओ में 25 लाख इक्विटी शेयरों का ताजा निर्गम शामिल है.

अमेरिका में पिछले साल रीजनल बैंकिंग संकट के कारण पांच बैंक डूब गए थे

अमेरिका में डूब गया एक और बैंक

भाषा । नयी दिल्ली

फुल्टन बैंक उसके सारे डिपॉजिट्स को ले लेगा

खास बातें

- फुल्टन ने खरीदा फिलाडेल्फिया का रिपब्लिक फर्स्ट बैंक
- फर्स्ट बैंक अमेरिका में इस साल डूबने वाला पहला बैंक है

दुनिया की सबसे मजबूत अर्थव्यवस्था मानी जानेवाली अमेरिका में बैंकों पर संकट गहराने लगा है. पिछले साल की तरह ही अमेरिका में एक और बैंक डूब गया. देश के रेगुलेटर्स ने रिपब्लिक फर्स्ट बैंक की कमान अपने हाथ में लेकर इयसे फुल्टन बैंक को बेच दिया है. फेडरल डिपॉजिट इंश्योरेंस कॉरपोरेशन (एफडीआईसी) ने शुक्रवार को यह जानकारी दी. अमेरिका में पिछले साल रीजनल बैंकिंग संकट के कारण पांच बैंक डूब गए थे. उसके बाद से कई रीजनल बैंक दबाव में हैं. इसका पहला शिकार फिलाडेल्फिया का रिपब्लिक फर्स्ट बैंक बना.

एफडीआईसी ने इस बैंक को फुल्टन फाइनेंशियल कॉरपोरेशन की यूनिट फुल्टन बैंक को बेचने पर सहमति जताई है. फुल्टन बैंक उसके सारे डिपॉजिट्स को ले लेगा और सारी एसेट्स को खरीद लेगा. 31 जनवरी तक के आंकड़ों के मुताबिक रिपब्लिक बैंक की कुल एसेट छह अरब डॉलर और डिपॉजिट चार अरब डॉलर था. न्यू जर्सी, पेनसिल्वेनिया और न्यूयॉर्क में बैंक की 32 शाखाएं फुल्टन बैंक की ब्रांचेज के रूप में खुलेंगी.

सिलिकॉन वैली और सिग्नेचर बैंक मार्च में और फर्स्ट रिपब्लिक मई में डूबा था. एफडीआईसी ने कहा कि रिपब्लिकन फर्स्ट बैंक को पेनसिल्वेनिया स्टेट रेगुलेटर्स ने बंद किया. यह अमेरिका में इस साल डूबने वाला पहला बैंक है. पेनसिल्वेनिया डिपार्टमेंट ऑफ बैंकिंग एंड सिक्योरिटीज ने इस बैंक को बंद करने के बाद एफडीआईसी को रिसीवर नियुक्त किया. हालांकि पिछले साल के रीजनल बैंकिंग संकट के मुकाबले रिपब्लिक बैंक का संकट काफी छोटा है. जिन लोगों का रिपब्लिक बैंक में पैसा जमा है वे फुल्टन बैंक के ग्राहक बन जाएंगे.

एफडीआईसी का डिपॉजिट इंश्योरेंस कवर 250,000 डॉलर प्रति डिपॉजिटर है. एफडीआईसी का कहना है कि अमेरिका में पिछले साल नवंबर के बाद पहली बार कोई बैंक डूबा है. तब आईओवा प्रांत के सैक सिटी का सिटीजन्स बैंक डूब गया था. रिपब्लिक फर्स्ट बैंक पिछले साल डूबे फर्स्ट रिपब्लिक बैंक से अलग है. सैन फ्रांसिस्को का यह बैंक मई में डूबा था और इसके एसेट्स जेपी मोर्गन चेज को बेचे गए थे. रिपब्लिक फर्स्ट बैंक ऐसे समय डूबा है जब रीजनल बैंक बुरे दौर से गुजर रहे हैं. ऊंची ब्याज दरों के कारण क्रेडिट पर आधारित इंडस्ट्री बुरी तरह प्रभावित हुई है. पिछले साल सिलिकॉन वैली बैंक के डूबने के बाद बैंकिंग संकट शुरू हुआ था. उसके कुछ दिन बाद सिग्नेटर बैंक और फिर फर्स्ट रिपब्लिक बैंक डूब गए थे. कुल मिलाकर अमेरिका में पिछले साल पांच बैंक डूबे थे.

बताया जाता है कि हाल में न्यूयॉर्क कम्युनिटी बैंक के शेयरों में भी भारी उथलपुथल देखने को मिली थी. बैंक ने कहा था कि उसे कंपनी के कंट्रोल में कई खामियां देखने को मिली हैं. इसके बाद ग्राहकों ने धड़ाधड़ बैंक से पैसे निकालने शुरू कर दिए थे. आखिरकार मार्च में बैंक को निवेशकों से एक अरब डॉलर की इक्विटी इन्वेस्टमेंट की लाइफलाइन मिली. बैंक के निवेशकों में पूर्व ट्रेजरी सेक्रेटरी स्टीवन मुंचिन की कंपनी लिबर्टी स्ट्रेटेजिक कैपिटल शामिल है.

जानकारों का कहना है कि करीब एक दशक तक सेंट्रल बैंकों ने लोगों को ईजी मनी और भारी लिक्विडिटी की लत लगा दी है. अब वे पॉलिसी को सख्त बना रहे हैं. जिससे फाइनेंशियल सिस्टम में संकट पैदा हो गया है. साल 2022 में अमेरिकी बैंकों को 620 अरब डॉलर का नुकसान हुआ था. महंगाई पर काबू करने के लिए अमेरिकी फेड रिजर्व जिस तरह ब्याज दरों को बढ़ाया था, उससे बैंकों की हालत खस्ता हो गई थी.

महिंद्रा लाइफस्पेस

एकीकृत शुद्ध लाभ 98 करोड़ हुआ

एजेंसी । नयी दिल्ली

महिंद्रा समूह की रियल एस्टेट और बुनियादी ढांचा विकास इकाई महिंद्रा लाइफस्पेस डेवलपर्स लिमिटेड का एकीकृत शुद्ध लाभ बीते वित्त वर्ष (2023-24) में मामूली घटकर 97.89 लाख रुपये रहा है. वित्त वर्ष 2022-23 में कंपनी का शुद्ध लाभ 101.43 करोड़ रुपये रहा था. शेयर बाजार को दी जानकारी के अनुसार, कंपनी की कुल आमदनी बीते वित्त वर्ष में घटकर 279.12 करोड़ रुपये रह गई, जो वित्त वर्ष 2022-23 में 659.56 करोड़ रुपये थी. बीते वित्त वर्ष की मार्च तिमाही में कंपनी का एकीकृत शुद्ध लाभ बढ़कर 71.15 करोड़ रुपये हो गया, जो मार्च, 2023 तिमाही में सिर्फ 55 लाख रुपये था. कंपनी की कुल आमदनी मार्च तिमाही में घटकर 54.60 करोड़ रुपये रह गई, जो मार्च, 2023 तिमाही में 270.26 करोड़ रुपये थी. महिंद्रा लाइफस्पेस के प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यपालक अधिकारी अमित सिन्हा ने कहा, पूरे बीते वित्त वर्ष में बिक्री हमारी अब तक की सर्वाधिक वार्षिक बिक्री रही है.

कोटक महिंद्रा बैंक का शेयर दो दिनों में 13 प्रतिशत गिरा

एजेंसी । नयी दिल्ली

भारतीय रिजर्व बैंक की ओर से एक बड़ी कार्रवाई के बाद कोटक महिंद्रा बैंक का हाल बुरा हो चुका है. पिछले दो दिनों में इसके शेयरों में 13 फीसदी की गिरावट आई है, जिस कारण निवेशकों को बड़ा नुकसान उठाना पड़ा है. गुरुवार को इसके शेयर 10 फीसदी से ज्यादा गिरे, जबकि शुक्रवार को इस बैंक के शेयरों में करीब 2 फीसदी की गिरावट आई. अभी इस बैंक के शेयर 1,614.70 रुपये पर हैं. गुरुवार और शुक्रवार के बीच कोटक महिंद्रा बैंक के शेयरों में गिरावट के कारण बैंक का मार्केट कैप भी तेजी से गिरा है और यह घटकर 3.19 लाख करोड़ रुपये हो चुका है. ऐसे में इसने देश के चौथे सबसे बड़े बैंक का दर्जा भी खो दिया है. अब देश का चौथा सबसे बड़ा बैंक एक्सिस बैंक है. एक्सिस बैंक ने कोटक महिंद्रा बैंक को छोड़ा पीछे एक्सिस बैंक ने मार्च तिमाही के मजबूत नतीजों के बाद इसके शेयरों में लगभग पांच प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज की है, जिस कारण इसके मार्केट कैप में उछाल आया है और इसका बाजार पूंजीकरण बढ़कर 3.48 लाख करोड़ रुपये हो गया है, जो कोटक महिंद्रा बैंक के मार्केट कैप से ज्यादा है. एक्सिस बैंक ने जनवरी-मार्च तिमाही में 7,130 करोड़ का शुद्ध लाभ दर्ज किया , जबकि पिछले साल की इसी अवधि में उसे 5,728.4 करोड़ का घाटा हुआ था.

एकीकरण

मद्रास हाईकोर्ट ने आरबीआई को दिया आदेश

डीबीएस व लक्ष्मी विलास बैंक के एसेट का होगा वैल्यूएशन

एजेंसी । नयी दिल्ली

प्राइवेट सेक्टर के डीबीएस बैंक इंडिया और लक्ष्मी विलास बैंक का एकीकरण हो चुका है. अब मद्रास हाईकोर्ट ने रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया को आदेश दिया है कि वह इन दोनों बैंक के मर्जर से पहले के एसेट का वैल्यूएशन करे. इस वैल्यूएशन के जरिए पता लगाया जा सकेगा कि मर्जर का स्टॉकहोल्डर्स पर क्या प्रभाव पड़ा है. आरबीआई इन दोनों बैंकों के नवंबर, 2020 से पहले के शेयर और एसेट का पूरा वैल्यूएशन करके कोर्ट को चार महीने के अंदर विवरण सौंपेगा. कोर्ट के आदेश पर आरबीआई शेयर वैल्यू में गिरावट और टियर 2 बांड्स के राइट ऑफ पर अपना निर्णय देगा. मद्रास हाईकोर्ट ने यह आदेश लक्ष्मी विलास बैंक के बॉन्ड होल्डर्स और माइनॉरिटी शेयर होल्डर्स की एक याचिका पर दिया है. उन्होंने अपने इनवेस्टमेंट को राइट ऑफ किए जाने के खिलाफ याचिका दायर की थी. डीबीएस बैंक इंडिया के साथ विलय से पहले एलवीबी पर लगाई गई रोक के चलते यह स्थिति पैदा हुई थी. हालांकि, कोर्ट ने यह भी साफ कर दिया कि इस आदेश का विलय पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा. यह सिर्फ निवेशकों की चिंताओं को दूर करने का प्रयास है. आरबीआई भी शेयर होल्डर्स और बॉन्ड होल्डर्स की समस्यायों को दूर करने की कोशिश करेगा.

पारदर्शी का पता लगाया जाएगा

डीबीएस बैंक इंडिया और लक्ष्मी विलास बैंक के मर्जर के बाद कई केस फाइल हुए थे. यह सभी केस देश के विभिन्न हाई कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट ने साल 2022 में मद्रास है कोर्ट को ट्रांसफर कर दिए थे. अब मद्रास हाई कोर्ट का यह आदेश मर्जर से प्रभावित हुए स्टॉकहोल्डर्स की समस्याओं को सुलझाने का एक प्रयास माना जा रहा है. आरबीआई द्वारा पारदर्शी और निष्पक्ष वैल्यूएशन से पता लगाया जा सकेगा.

छह देशों को 99,150 मीट्रिक टन प्याज के निर्यात की दी अनुमति

एजेंसी । नई दिल्ली

केंद्र सरकार ने छह देशों को 99,150 मीट्रिक टन प्याज के निर्यात करने की अनुमति दी है. इन छह देशों में बांग्लादेश, यूएई, भूटान, बहरीन, मॉरीशस और श्रीलंका हैं. केंद्रीय उपभोक्ता, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मामलों के मंत्रालय ने शनिवार को एक बयान में बताया कि बांग्लादेश, यूएई, भूटान, बहरीन, मॉरीशस और श्रीलंका को 99,150 मीट्रिक टन प्याज का निर्यात करने की अनुमति दी गई है. इन देशों को केंद्रीय एजेंसी नेशनल कोऑपरेटिव एक्सपोर्ट्स लिमिटेड (एनसीईएल) प्याज का निर्यात करेगी. इसके साथ ही भारत सरकार ने मध्य-पूर्व और कुछ यूरोपीय देशों के निर्यात बाजारों के लिए विशेष रूप से उगाए गए 2000 मीट्रिक टन सफेद प्याज का निर्यात करने की भी अनुमति दी है. मंत्रालय के मुताबिक देश में प्याज का सबसे बड़ा उत्पादक होने के नाते महाराष्ट्र एनसीईएल द्वारा निर्यात के लिए खरीदे गए प्याज का प्रमुख आपूर्तिकर्ता है.

ब्रीफ खबरें

ब्राजील के होटल में लगी आग, 10 की मौत

रियो डी जनेरियो । दक्षिणी ब्राजील के पोर्टो एलेग्रे शहर में शुक्रवार सुबह एक छोटे होटल में आग लग जाने से कम से कम 10 लोगों की मौत हो गई और 11 अन्य लोग घायल हो गए. अधिकारियों ने बताया कि 'गारोआ फ्लोरेस्टा' होटल की तीन मंजिला इमारत में सुबह आग लग गई जिससे कम से कम 10 लोगों की मौत हो गई और 11 अन्य लोग घायल हो गए. इस होटल में एक कमरे के किफायती आवास की सुविधा दी जाती थी और बेघर लोगों को आश्रय देने के लिए इसका नगरपालिका के साथ अनुबंध था.

मैं जेल में रहने के लिए तैयार हूं : इमरान खान

लाहौर । पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान ने उन लोगों के साथ कोई भी समझौता करने से इनकार कर दिया जिन्होंने देश को गुलाम बना दिया है और उन्होंने कहा कि वह नौ और साल जेल में रहने के लिए तैयार हैं लेकिन इन लोगों के साथ कभी कोई समझौता नहीं करेंगे. पीटीआई पार्टी के 28वें स्थापना दिवस पर शुक्रवार को जारी संदेश में खान ने कहा कि देश पर तानाशाही थोपी गयी है जो अर्थव्यवस्था, शासन, लोकतंत्र और न्यायपालिका के विनाश का आधार बन रही है.

नेब्रास्का-आयोवा में तूफान से इमारतें ढहीं

ओमाहा (अमेरिका) । मध्य पश्चिमी अमेरिका में शुक्रवार को भीषण तूफान ने जमकर कहर बरपाया जिससे नेब्रास्का राज्य के ओमाहा में एक इमारत ढह गयी जिसके मलबे में कई लोग दब गए और सैकड़ों मकान क्षतिग्रस्त हो गए. तूफान से शुक्रवार रात तक कई लोगों के घायल होने की खबरें मिलीं. आयोवा में रात को लगातार तूफान की चेतावनियां जारी की गयीं. नेब्रास्का की लैंकास्टर काउंटी में तूफान के कारण एक व्यावसायिक इमारत गिरने से तीन लोग घायल हो गए.

तस्करी के आरोप में 11 नाइजीरियाई गिरफ्तार

ठाणे (महाराष्ट्र) । ठाणे जिले की पुलिस ने नवी मुंबई में मादक पदार्थ तस्करी गिरोह में शामिल होने के आरोप में नाइजीरिया के 11 नागरिकों को गिरफ्तार किया और उनके पास से 1.61 करोड़ रुपये की कीमत की कोकीन और अन्य मादक पदार्थ जब्त किए हैं. एक अधिकारी ने बताया कि शुक्रवार को हुई छापेमारी के बाद यह गिरफ्तारी की गई है. कुल कीमत 1,61,00,000 रुपये आंकी गई है. आरोपियों के पास से करीब 25 लाख की कीमत के फोन और अन्य उपकरण भी जब्त किये गये.

बस के खाई में गिरने से 10 यात्री घायल

भोपाल/नागपुर । बुरहानपुर जिले में शनिवार को मरम्मत के लिए खड़ी एक निजी बस करोली घाट के पर्वतीय क्षेत्र में 50 फुट गहरी खाई में गिर गई, जिसके कारण कम से कम 10 यात्री घायल हो गए. पुलिस ने बताया कि घायलों को स्थानीय अस्पताल में भर्ती कराया गया है और वे सभी खतरे से बाहर हैं. बुरहानपुर के पुलिस अधीक्षक देवेंद्र पाटीदार ने कहा, इंदौर से अकोला जा रही बस की बैटरी में कुछ समस्या आ गई थी, जिसके कारण उसके कर्मचारियों ने मरम्मत के लिए बस को सड़क किनारे खड़ा कर दिया था.

आम आदमी पार्टी (आप) के कार्यकर्ताओं ने शनिवार को नई दिल्ली में भाजपा के खिलाफ विरोध-प्रदर्शन करती.

मणिपुर में उग्रवादियों ने हमला किया, दो जवानों की हुई मौत

एजेंसी। इंफाल

मणिपुर के बिष्णुपुर जिले में सुरक्षा बलों के एक शिविर पर उग्रवादियों के हमले में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के दो जवानों की मौत हो गयी और दो अन्य कर्मी घायल हो गये. पुलिस ने यह जानकारी दी. पुलिस ने बताया कि उग्रवादियों ने मोइरांग पुलिस थाना क्षेत्र के नारानसेना में आईआरबीएन (भारतीय आरक्षित वाहिनी) शिविर पर हमला किया. एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने कहा, उग्रवादियों ने पहाड़ी की चोटियों से शिविर को निशाना बनाकर अंधाधुंध गोलीबारी की. गोलीबारी शुक्रवार देर रात शुरू हुई. उग्रवादियों ने बम भी फेंके, जिनमें से एक बम सीआरपीएफ की 128 बटालियन की चौकी में फटा. उन्होंने बताया कि मृतकों की पहचान सीआरपीएफ के उप-निरीक्षक एन सरकार और हेड कांस्टेबल अरूप सैनी के रूप में हुई है. उन्होंने बताया कि हमले में निरीक्षक जादव दास और कांस्टेबल आफताब दास छर्रे लगने से घायल हो गये. अधिकारी ने कहा, दोनों घायल जवानों को इंफाल के क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान संस्थान में भर्ती कराया गया है. वे खतरे से बाहर हैं. सीआरपीएफ जवानों को आईआरबीएन शिविर की सुरक्षा के लिए तैनात किया गया था. पुलिस ने कहा कि हमले में शामिल लोगों को पकड़ने के लिए बड़े पैमाने पर तलाश जारी है.

अरविंद केजरीवाल ने उच्चतम न्यायालय से कहा

ईडी ने आबकारी नीति मामले में बेहद मनमाने तरीके से काम किया

एजेंसी । नयी दिल्ली

दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने शनिवार को उच्चतम न्यायालय से कहा कि प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने कथित आबकारी नीति घोटाले से जुड़े धन शोधन के एक मामले में बेहद मनमाने तरीके से काम किया. मामले में अपनी गिरफ्तारी को चुनौती देने वाली याचिका के संबंध में ईडी के हलफनामे पर जवाब में केजरीवाल ने कहा कि उन्होंने हमेशा जांच में सहयोग किया है.

आम आदमी पार्टी (आप) के नेता ने कहा कि ईडी ने शीर्ष अदालत में दाखिल अपने जवाबी हलफनामे में कहा है कि उनकी गिरफ्तारी की एक वजह यह थी कि वह नौ बार तलब किए जाने के बावजूद जांच अधिकारी के सामने उपस्थित नहीं हुए थे.

केजरीवाल ने कहा कि ईडी ने अपने जवाब में कहा है कि ऐसे मामले में जांच अधिकारी का यह राय बनाना उचित था कि हिरासत में पूछताछ से आरोपी से ठोस पूछताछ हो पाएगी. उन्होंने कहा, जवाब के आशय, पाठ और सामग्री से कोई संदेह नहीं रह जाता है कि ईडी ने कानून की उचित प्रक्रिया का सरासर अपमान करते हुए बहुत ही मनमाने तरीके से काम किया है. केजरीवाल ने दावा किया कि ईडी के जवाब में उसके रुख को समग्र रूप से देखने से उसकी कार्यवाही में साफ झूठ उजागर हो जाएगा.

ईडी के पास और विकल्प नहीं बचा था

ईडी ने कहा कि गिरफ्तारी को चुनौती देने वाली केजरीवाल की याचिका में कोई तथ्य नहीं होने के आधार पर इसे खारिज करने योग्य बताया. जांच एजेंसी ने कहा है कि जिस सबूत को आधार बनाते हुए जांच अधिकारी ने उन्हें गिरफ्तार किया था उसपर विभिन्न अदालतों द्वारा गौर किया गया था. ईडी ने 21 मार्च को केजरीवाल को गिरफ्तार किया था क्योंकि दिल्ली उच्च न्यायालय ने उन्हें संघीय धन शोधन रोधी एजेंसी द्वारा दंडात्मक कार्रवाई से राहत प्रदान करने से इनकार कर दिया था. वह फिलहाल न्यायिक हिरासत के तहत तिहाड़ जेल में बंद हैं. शीर्ष अदालत ने 15 अप्रैल को ईडी को नोटिस जारी किया और केजरीवाल की याचिका पर उससे जवाब मांगा. उच्च न्यायालय ने नौ अप्रैल को धन शोधन मामले में केजरीवाल की गिरफ्तारी को बरकरार रखते हुए कहा था कि इसमें कुछ भी अवैध नहीं है और बार-बार समन जारी करने और जांच में शामिल होने से इनकार करने के बाद ईडी के पास और विकल्प नहीं बचा था. यह मामला 2021-22 के लिए दिल्ली सरकार की आबकारी नीति के निर्माण और कार्यान्वयन में कथित भ्रष्टाचार और धन शोधन से संबंधित है. इस नीति को बाद में रद्द कर दिया गया था.

ईडी ने कहा कि गिरफ्तारी को चुनौती देने वाली केजरीवाल की याचिका में कोई तथ्य नहीं होने के आधार पर इसे खारिज करने योग्य बताया

प्रत्येक समन का विधिवत जवाब दिया गया

मुख्यमंत्री ने कहा कि रिकॉर्ड से पता चलेगा कि महत्वपूर्ण विवरण और जानकारी मांगने के दौरान उन्हें जारी किए गए प्रत्येक समन का विधिवत जवाब दिया गया था, जिसे किसी भी परिस्थिति में ईडी द्वारा गोपनीय होने का दावा नहीं किया जा सकता है. केजरीवाल ने दावा किया कि ईडी ने कभी भी उनके द्वारा जांच में कथित असहयोग का खुलासा नहीं किया. उन्होंने कहा, याचिकाकर्ता (केजरीवाल) को किसी अधिकृत प्रतिनिधि के माध्यम से न बुलाने या उनसे लिखित में या डिजिटल माध्यम से दस्तावेज न मांगने और व्यक्तिगत रूप से उनकी उपस्थिति पर जोर देने की क्या जरूरत थी, यह पता नहीं चल पा रहा है. आप नेता ने कहा कि उनकी याचिका स्वीकार किये जाने योग्य है और वह तुरंत रिहा किये जाने के हकदार हैं. इस सप्ताह की शुरुआत में शीर्ष अदालत में दाखिल अपने जवाबी हलफनामे में ईडी ने दावा किया कि केजरीवाल आबकारी नीति घोटाले के सरगना और मुख्य साजिशकर्ता हैं और सबूत के आधार पर अपराध के लिए किसी व्यक्ति की गिरफ्तारी स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव की अवधारणा का उल्लंघन नहीं करती है.

आतंकवाद, नक्सलवाद को खत्म करने के लिए

मोदी को तीसरी बार पीएम बनाएं : शाह

एजेंसी। पोरबंदर (गुजरात)

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शनिवार को कहा कि यदि नरेंद्र मोदी लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री बनते हैं तो वह देश से आतंकवाद एवं नक्सलवाद को खत्म कर देंगे और भारत को दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनाएंगे. उन्होंने भाजपा उम्मीदवार मनसुख मांडविया के समर्थन में गुजरात के पोरबंदर में एक चुनावी रैली को संबोधित करते हुए कहा कि जब अनुच्छेद 370 हटाया गया, तो कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने इस कदम का विरोध किया था और कहा था कि इसके कारण कश्मीर में खून की नदी बहेगी. शाह ने कहा, पिछले पांच साल में खून की नदी बहना तो दूर, किसी ने वहां पत्थर

फेंकने की भी हिम्मत नहीं की. प्रधानमंत्री मोदी ने देश से आतंकवाद और नक्सलवाद को खत्म करने का काम किया. जब मनमोहन सिंह देश के प्रधानमंत्री थे, तो कोई भी पाकिस्तान से देश में प्रवेश कर सकता था और बम विस्फोट कर सकता था. उन्होंने कहा, जब पाकिस्तान ने पुलवामा और उरी में आतंकवादी हमले किए, तो वह भूल गया कि उस समय मोदी प्रधानमंत्री थे. प्रधानमंत्री मोदी ने पाकिस्तान की धरती पर आतंकवादियों को खत्म करने के लिए 10 दिन में सर्जिकल और हवाई हमले किए. शाह ने देश से आतंकवाद और नक्सलवाद को खत्म करने के लिए लोगों से नरेंद्र मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाने का आग्रह किया. उन्होंने कहा, प्रधानमंत्री मोदी ने देश को सुरक्षित करने और इसे समृद्ध बनाने के लिए काम किया है. कांग्रेस पार्टी अपने शासन के 10 साल में देश की अर्थव्यवस्था को 11वें स्थान पर ले आई थी. प्रधानमंत्री मोदी केवल 10 वर्ष में इसे पांचवें स्थान पर ले आए. मैं आपको गारंटी देता हूं कि उन्हें तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाइए और भारत तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा.

अनमोल बिश्नोई के खिलाफ लुकआउट सर्कुलर जारी

मुंबई। बांद्रा में अभिनेता सलमान खान के आवास के बाहर इस महीने की गई गोलीबारी मामले में गैंगस्टर लॉरेंस बिश्नोई के छोटे भाई अनमोल बिश्नोई के खिलाफ 'लुकआउट सर्कुलर' जारी किया गया है. मुंबई पुलिस के एक अधिकारी ने बताया कि पुलिस लॉरेंस बिश्नोई को भी हिरासत में ले सकती है, जो इस समय गुजरात की साबरमती जेल में बंद है. पुलिस इस मामले में मकोका लगाने पर भी विचार कर रही है. उन्होंने बताया कि अनमोल बिश्नोई ने गोलीबारी की जिम्मेदारी ली थी और जांच में भी उसकी संलिप्तता सामने आई है, जिसके बाद मुंबई पुलिस ने शुक्रवार को एलओसी जारी किया.

उत्तराखंड के जंगलों में भीषण आग

सेना बुलाई गयी, नैनीताल की हाईकोर्ट कॉलोनी तक आग पहुंची

एजेंसी। नैनीताल

उत्तराखंड के जंगलों में आग लगने से भवाली रोड पर धुआं छाया हुआ है. हाईकोर्ट कॉलोनी तक आग पहुंच गयी है. वाहनों की आवाजाही बाधित हो गयी है. नैनीताल के पास लड़ियाकांटा में भी आग लग गयी है. आग की चपेट में भारतीय सेना के क्षेत्र भी आ सकते हैं. इस आशंका से सेना के जवान भी आग बुझाने में काम में युद्ध स्तर पर जुट गये हैं. तेज हवाओं के कारण दमकल विभाग की टीम को आग पर काबू पाने में मशक्कत करनी पड़ रही है. नैनीताल का आईटीआई भवन भी आग की चपेट में आ गया है. प्रशासन हेलिकॉप्टर के जरिए नैनीताल और भीमताल झील से पानी लेकर आग बुझाने का प्रयास की कवायद में जुट गया है. जिला प्रशासन ने आग को देखते हुए नैनी झील में नौकायन पर प्रतिबंध लगा दिया है. उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने अधिकारियों को अलर्ट पर रहने को कहा है.

आर्थिक तंगी के कारण मां-बेटे की खुदकुशी

इटावा (उप्र) : इटावा में आर्थिक तंगी के कारण एक महिला और उसके बेटे ने जहरीला पदार्थ निगलकर कथित तौर पर खुदकुशी कर ली. पुलिस के एक अधिकारी ने शनिवार को यह जानकारी दी. अपर पुलिस अधीक्षक (नगर) अभय नाथ त्रिपाठी ने बताया कि इकदिल थाना क्षेत्र के अंतर्गत नई बस्ती साईं कॉलोनी में शुक्रवार रात घर के अंदर दीपक कुमार उर्फ दीपू सोनी (28) और उसकी मां सुमन देवी (55) ने शीतलपेय में सल्फास की गोली मिलाकर निगल लिया और कथित तौर पर आत्महत्या कर ली. पुलिस ने बताया कि संभवतः आर्थिक तंगी के कारण दोनों ने यह कदम उठाया होगा.

कांग्रेस का आरोप

2जी स्पेक्ट्रम मामले में दिख रहा है भाजपा का पाखंड

एजेंसी। नयी दिल्ली

कांग्रेस ने 2जी स्पेक्ट्रम के मामले के फैसले में संशोधन की मांग करते हुए केंद्र सरकार द्वारा उच्चतम न्यायालय का रुख किए जाने को लेकर शनिवार को आरोप लगाया कि भाजपा के पाखंड की कोई सीमा नहीं है क्योंकि उसने संप्रग के तहत 2जी स्पेक्ट्रम के प्रशासनिक आवंटन को घोटाला बताया था और अब नरेंद्र मोदी सरकार बिना नीलामी के स्पेक्ट्रम देने की अनुमति मांग रही है.

केंद्र ने 12 साल से अधिक समय बाद गत सोमवार को 2जी स्पेक्ट्रम मामले से जुड़े फैसले में संशोधन का अनुरोध करते हुए सोमवार को उच्चतम न्यायालय का रुख किया. कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने 'एक्स' पर पोस्ट किया, मोदी सरकार और भ्रष्ट जनता पार्टी के पाखंड की कोई सीमा नहीं है. मनमोहन सिंह के नेतृत्व वाली सरकार के दौरान, उसकी तरफ से यही रोना रोया जाता था कि 2जी स्पेक्ट्रम का आवंटन एक 'घोटाला' है. उन्होंने आरोप लगाया, अब, वे इसके विपरीत तर्क दे रहे हैं.

केरल में बस दुर्घटनाग्रस्त एक की मौत व 13 घायल

कोझिकोड (केरल)। केरल के कोझिकोड जिले में शनिवार सुबह पर्यटकों को ले जा रही एक बस अनियंत्रित होकर पलट गई, जिससे एक व्यक्ति की मौत हो गई और 13 अन्य घायल हो गए. पुलिस ने बताया कि बस तिरुवनंतपुरम से पड़ोसी राज्य कर्नाटक के उडुपी जा रही थी, उसी समय यह हादसा हुआ. पुलिस के एक अधिकारी ने कहा, संभवतः चालक को नींद की झपकी आने से यह हादसा हुआ है. चालक के नियंत्रण खोने के बाद बस नीचे जा गिरी. उन्होंने बताया कि बस के नीचे फंसे होने के कारण एक यात्री को समय पर नहीं निकाला जा सका. हालांकि, बाद में उसे नजदीकी अस्पताल ले जाया गया जहां उसे मृत घोषित कर दिया गया.

डीएसजीएमसी के सदस्य भाजपा में शामिल हुए, बोले नड्डा-

सिख समुदाय के बलिदानों को भुलाया नहीं जा सकता

एजेंसी। नयी दिल्ली

दिल्ली सिख गुरुद्वारा प्रबंधन समिति (डीएसजीएमसी) के सदस्यों सहित बड़ी संख्या में सिख शनिवार को भाजपा में शामिल हो गये. इस अवसर पर भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने अल्पसंख्यक समुदाय की मदद के लिए सरकार द्वारा लिए गए निर्णयों का हवाला देते हुए कहा कि अगर किसी ने वास्तव में समुदाय के लिए काम किया है, तो वह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हैं.

नड्डा ने कहा कि करतारपुर साहिब गलियारा शुरू करना, स्वर्ण मंदिर में दान के लिए विदेशी अंशदान विनियमन अधिनियम (एफसीआरए) पंजीकरण और

1984 के सिख विरोधी दंगों में आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई करना जैसे कदम केंद्र सरकार की ओर से उठाए गये. उन्होंने कहा कि भाजपा देश के लिए सिख समुदाय के योगदान और बलिदान को बहुत महत्व देती है और इनके हितों के लिए काम करती रहेगी. भाजपा सिखों के साथ अपने रिश्ते को मजबूत करने पर तेजी से काम कर रही है और पंजाब में लोकसभा चुनाव में कड़ी टक्कर देने में जुटी हुई है. पंजाब में सिख बहुसंख्यक हैं. राज्य के कई बड़े सिख नेता हाल ही में पार्टी में शामिल हुए हैं.

पलटवार कांग्रेस के वरिष्ठ नेता दिग्विजय सिंह ने अमित शाह को दिया जवाब, कहा-

पीएफआई पर प्रतिबंध का कभी विरोध नहीं किया

भाषा । भोपाल

कांग्रेस के वरिष्ठ नेता दिग्विजय सिंह ने शनिवार को केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के इस आरोप को खारिज किया कि उन्होंने 'पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया' (पीएफआई) पर प्रतिबंध का विरोध किया था. सिंह ने साथ ही भाजपा पर पीएफआई की राजनीतिक इकाई के साथ गठबंधन में कर्नाटक में चुनाव लड़ने का आरोप लगाया. मध्य प्रदेश के राजगढ़ लोकसभा क्षेत्र से कांग्रेस उम्मीदवार सिंह ने स्टूडेंट्स इस्लामिक मूवमेंट ऑफ इंडिया (सिमी) के संबंध में शाह के आरोप पर भी पलटवार करते हुए कहा कि उन्होंने (सिंह ने) मप्र के मुख्यमंत्री रहते हुए इस संगठन पर प्रतिबंध लगाया था. शुक्रवार को राजगढ़ लोकसभा सीट के अंतर्गत खिलचीपुर में एक रैली को संबोधित करते हुए शाह ने सिंह पर पीएफआई पर प्रतिबंध और संसद हमले के दोषी अफजल गुरु की मौत की सजा का

सिंह ने कहा कि शाह ने 17 बार उनका नाम लिया और आठ बार उनके बारे में झूठ बोला

विरोध करने के अलावा भगवा आतंकवाद शब्द का इस्तेमाल करने का आरोप लगाया था. सिंह ने कहा कि शाह ने 17 बार उनका नाम लिया और आठ बार उनके बारे में झूठ बोला.

कांग्रेस के घोषणापत्र में कोई जिक्र नहीं : सिंह ने एक्स पर लिखा कि शाह ने दावा किया था कि कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने उनकी सलाह पर अपनी पार्टी के घोषणापत्र में मुसलमानों के लिए व्यक्तिगत ऋण को शामिल किया है, लेकिन तथ्य यह है कि कांग्रेस के घोषणापत्र में मुस्लिम व्यक्तिगत ऋण का कोई जिक्र नहीं है. सिंह ने कहा कि उन्होंने कभी भी भगवा आतंकवाद शब्द का इस्तेमाल नहीं किया है, जैसा कि शाह ने दावा किया है. राज्यसभा सदस्य ने कहा कि उन्होंने कभी भी अफजल गुरु की फांसी का विरोध नहीं किया इसके विपरीत उन्होंने गुरु को जल्द से जल्द फांसी देने का समर्थन किया था. सिंह ने कहा, अमित शाह ने झूठ बोला कि दिग्विजय सिंह ने पीएफआई पर प्रतिबंध का विरोध किया था.

उन्होंने भाजपा पर इस्लामिक चरमपंथी संगठन के साथ गठबंधन में कर्नाटक में स्थानीय चुनाव लड़ने का आरोप लगाया. सिंह ने कहा कि उन्होंने कभी भी पीएफआई पर प्रतिबंध का विरोध नहीं किया और दावा किया कि वह मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान सिमी पर प्रतिबंध लगाने वाले पहले व्यक्ति थे. सिंह ने 1984 और 1991 में राजगढ़ लोकसभा क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया था. उनका गृहनगर राघौगढ़ इस संसदीय सीट के अंतर्गत आता है, जहां सात मई को तीसरे चरण में मतदान होगा. अपने सोशल मीडिया पोस्ट में सिंह ने कहा कि उन्होंने कोविड महामारी के दौरान ऑक्सीजन सिलेंडर की व्यवस्था की थी और कभी भी टीकाकरण का विरोध नहीं किया जैसा कि शाह ने आरोप लगाया है. एक अन्य ट्वीट में कांग्रेस नेता ने शाह की राजनीति से विदाई संबंधी टिप्पणी पर भी प्रतिक्रिया दी. वरिष्ठ भाजपा नेता ने कहा था, समय आ गया है कि उन्हें राजनीति से स्थायी विदाई दी जाए...आशिक का जनाज़ा है, जरा धूम से निकले. उन्हें भारी मतों से हरा कर घर बैठायें.

लोकसभा चुनाव देश का भविष्य तय करेगा : अजित पवार

पुणे । महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री अजित पवार ने शनिवार को बारामती में कहा कि 2024 का लोकसभा चुनाव देश का भविष्य तय करेगा. बारामती लोकसभा सीट से अजित की पत्नी सुनेत्रा पवार सत्तारूढ़ गठबंधन की उम्मीदवार के तौर पर मैदान में हैं. सुनेत्रा का मुकाबला तीन बार की सांसद सुप्रिया सुले से है, जो उनकी ननद और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के संस्थापक शरद पवार की बेटी हैं. अजित ने अंबेगांव में सुनेत्रा पवार के पक्ष में आयोजित एक रैली में कहा, यह चुनाव किसी गांव या (पारिवारिक) रिश्तों के बारे में नहीं है. यह चुनाव देश का भविष्य तय करेगा. उन्होंने कहा, मुझे खाली जमीन दिखाइए, मैं वहां स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स बनवाऊंगा. रायगढ़ किले में रोपवे सुविधा के लिए राशि दी जाएगी.

पूनम महाजन का टिकट कटा, वकील उज्ज्वल निकम होंगे उम्मीदवार

नयी दिल्ली । लोकसभा चुनाव को लेकर भाजपा ने शनिवार को उम्मीदवारों की 15वीं लिस्ट जारी कर दी. भाजपा ने पूनम महाजन की टिकट काट दी है. जबकि आतंकी कसाब को फांसी दिलाने वाले वकील उज्जवल निकम को मुंबई उत्तर मध्य से चुनावी मैदान में उतारा गया है. बता दें कि उज्ज्वल निकम देश के सबसे मशहूर सरकारी वकीलों में से हैं, वह आतंकी अजमल कसाब को फांसी दिलवाने से लेकर, 1993 के बम धमाकों, गुलशन कुमार हत्याकांड और प्रमोद महाजन हत्याकांड जैसे हाई प्रोफाइल मामलों में सरकारी पक्ष की पैरवी कर चुके हैं. बात पूनम महाजन की करें तो वह 2006 में पिता प्रमोद महाजन की हत्या के बाद भाजपा में शामिल हुईं थीं. 2009 में पहली बार घाटकोपर वेस्ट से सांसद चुनाव लड़ीं, लेकिन हार गईं. 2014 में मुंबई नॉर्थ सेंट्रल सीट से उन्होंने कांग्रेस की प्रिया दत्त को हराया था. बता दें कि पूनम ट्रेन्ड पायलट हैं. उन्होंने इसकी ट्रेनिंग अमेरिका के टेक्सास से ली है.

सीएम ममता बनर्जी फिर चोटिल

हेलिकॉप्टर में चढ़ते वक्त पैर फिसला, लड़खड़ाकर गिरीं

- टीएमसी उम्मीदवार शत्रुघ्न सिन्हा के समर्थन में एक रैली को संबोधित करने जा रही थीं

भाषा । दुर्गापुर

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी एक बार फिर चोटिल हो गई हैं. दुर्गापुर में हेलिकॉप्टर में चढ़ने के दौरान ममता बनर्जी को चोट लग गयी है. वह हेलिकॉप्टर के भीतर ही गिर गईं. वह दुर्गापुर से आसनसोल जा रही थीं. उन्हें वहां टीएमसी उम्मीदवार शत्रुघ्न सिन्हा के समर्थन में एक रैली को संबोधित करना था. बनर्जी जब हेलिकॉप्टर के अंदर जा रही थीं, उसी समय उनका संतुलन बिगड़ गया और वह लड़खड़ा कर गिर गईं. उनके पैर में हल्की चोट आई है. उनके सुरक्षाकर्मियों ने तुरंत उनकी मदद की.

मिली जानकारी के मुताबिक बनर्जी कुछ देर बाद दुर्गापुर से

आसनसोल के रवाना हो गईं. टीएमसी सूत्रों ने बताया कि उनकी चोट बहुत गंभीर नहीं है और वह आसनसोल में पार्टी की चुनावी रैली में शामिल होंगी. टीएमसी सुप्रीमो कुछ दिन पहले अपने आवास पर चोटिल हो गई थीं. वह अपने घर में टहलने के दौरान गिर गई थीं, जिससे उनके सिर पर चोट लगी थी. उन्हें तुरंत इलाज के लिए एसएसकेएम अस्पताल ले जाया गया था, जहां उन्हें टांके भी लगाए गए थे.

मुद्रक तथा प्रकाशक लगातार इंफोटेनमेंट प्राइवेट लिमिटेड द्वारा लगातार इंफोटेनमेंट प्राइवेट लिमिटेड के पक्ष में, सिमलिया, रिंग रोड, पीएस-रातू, रांची - 835222 से मुद्रित तथा 304-305 समृद्धि स्क्वायर, किशोरगंज चौक, हरमू रोड, रांची- 834001, झारखंड द्वारा प्रकाशित.
संपादक - **सुरजीत सिंह**, स्थानीय संपादक - **संजय सिंह***. फोन नंबर- 0651-2961734 आर.एन.आई. नंबर - **JHAHIN/2023/84487** (*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार.)